(BOOK, FRONT COVER)

सामर्थ्य के साथ सुसमाचार की घोषणा करना

रार्बट प्रकाश

अनुवादक : हनोक मैसी

(BOOK, BACK COVER)

परमेश्वर ने आपको इसलिये ठहराया है कि आप महानतम् सन्देश की घोषणा आलौकिक सामर्थ्य के साथ करें। पवित्र आत्मा आपके अंदर से फूट निकलने को तैयार है। आपके जीवन का इस्तेमाल इतिहास बदलने के लिये करें इस पुस्तक में पाई जाने वाली सच्चाई आपको सशक्त बनायेगी कि :

- आपकी कलीसिया के निष्क्रिय सदस्य जोशीले योद्ध के रूप में बदल जायें।
- आप परमेश्वर के द्वारा दी गई बुलाहट का इस्तेमाल एक सामर्थ्यी गवाह के रूप में जीने के लिये करें।
- आप दूसरों को सशक्त बनाने के व्यवहारिक कदम सीखें।
- आप सुसमाचार की गतिशीलता और सामर्थ्य को समझें और उसे हियाव के साथ बाँटना सीखें।
- आप पवित्र आत्मा के साथ भागीदार बनें जिससे कि राज्य की सामर्थ्य का अनुभव कर सकें।
- आप आत्मविश्वास के साथ अपने विश्वास का इस्तेमाल बीमारों को चंगा करने के लिये करें
- दुष्ट आत्मा के क्षेत्र को पहिचान सकें और दुष्ट आत्माओं को निकाल सकें।

यह पुस्तक व्यवहारिक उदाहरणों, अद्भुत् गवाहियों और सरल शिक्षा से भरी हुई है। बेदारी आपका इन्तजार कर रही है; आज ही अपनी क्षमता को खोजें!

''इस पुस्तक को पढ़ना बड़ा आसान है परन्तु इसको पढ़ना बन्द कर देना कठिन है। प्रत्येक अध्याय को समाप्त करने के बाद में आगे के अध्याय को पढ़ना जारी रखना चाहता था। यह पुस्तक परमेश्वर के वचन से भरपूर है, और भरपूर है उस व्यवहारिकता से जिसे यीशु के सभी विश्वासी अपने जीवन और सेवकाई में लागू कर सकते हैं। एक अन्य बात जो कि मैंने इस पुस्तक में देखी है वह यह है कि यह पुस्तक ठोस बाईबिल की शिक्षा और उन व्यवहारिक तरीकों का मिश्रण (जोड़) है, जिस सच्चाई को लागू करने पर कदम दर कदम विश्वास उत्पन्न होता है और अधिकार के साथ हम विश्वास कर पाते हैं। यह पुस्तक प्रेरणा देने वाली, सशक्त बनाने वाली और साथ ही साथ व्यवहारिक भी है।''

''यह पुस्तक हर एक उस विश्वासी के लिये है जो मसीह यीशु में है। आपकी पृष्ठ भूमि कोई भी क्यों न हो, आपको बाईबिल का ज्ञान कम हो या ज्यादा और आपकी सेवकाई का अनुभव कम हो या ज्यादा, यह कुछ भी मायने नहीं रखता है परन्तु इतना तो निश्चित है कि यह पुस्तक विश्वास और विश्वासयोग्यता की जीवन शैली की दिशा में आपको आगे बढ़ायेगी। राबर्ट एक ऐसे प्रशिक्षक हैं जो कि बहुत अनुभवी पास्टर्स की भी पवित्र आत्मा के द्व ारा सशक्त बनाये जाकर सेवकाई करने में सहायता कर सकते हैं खूबसूरत बात यह भी है कि राबर्ट भाई में किसी नये विश्वासी को चेला बनाने की भी योग्यता है, ऐसा चेला जो कि पवित्र आत्मा की आलौकिक समर्थ्य का अपने प्रतिदिन के जीवन में अनुभव करता है। इस पुस्तक को पढ़कर आपकी यह इच्छा पूरी होगी कि आप अपने आपको 'प्रेरितों के कार्य' की पुस्तक को वास्तविकता में जीते हुये पायेंगे।''

क्लिन्ट स्प्रेग

लीड पास्टर

लाईफ मिशन चर्च, ओलाथी, कैन्सस

राबर्ट प्रकाश एक बाईबिल शिक्षक और सुसमाचार प्रचारक हैं जो कि बहुत से लोगों को बड़े जोश के साथ पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में कार्य करने के लिये खड़ा कर रहे हैं। जिससे कि सुसमाचार स्वतंत्रता से फैल सके। इनकी सेवकाई में निरन्तर चमत्कार प्रगट होते हैं, जैसे कि अन्धे देखते हैं, बहिरे सुनते हैं, लंगड़े चलते हैं और लाईलाज बीमारियों से पीड़ित लोग चंगे हो जाते हैं। राबर्ट 14 वर्ष एशिया में रहे हैं और कलीसिया रोपण आन्दोलन को प्रज्जवलित और पोषित करने के दर्शन और कार्य को लेकर दुनिया भर के देशों में यात्रा करते हैं।

सामर्थ्य के साथ सुसमाचार की घोषणा करना

रार्बट प्रकाश

अनुवादक : हनोक मैसी

Proclaiming the Gospel with Power

Copyright © 2020 by Robert Prakash

Unless otherwise noted, all scriptures quotations are taken

from the The Holy Bible

Hindi – OV (Re-edited)

The Bible Society of India

All right reserved

समर्पण

यह पुस्तक मैं श्री बचित्तर सिंह जी को समर्पित करता हूँ जो कि मेरे प्रिय मित्र हैं और सुसमाचार को फैलाने के कार्य में मेरे सहयोगी रहे हैं। आपके पास दूसरों को सशक्त बनाने की जो सच्चाई है, वह इस पुस्तक में साफ–साफ और सरल रीति से बताई गई है। महोदय, आप निःस्वार्थ रूप से और बड़ी नम्रता के साथ पारंपरिक सोच का सामना करते हुये अगुवो की पीढ़ी को तैयार कर रहे हैं, जिसके लिये मुझे आप पर गर्व है।

हमने साथ मिलकर संघर्ष किया है यीशु को महिमान्वित होते हुये देखने के लिये, हमने साथ मिलकर यीशु की गवाही दी है और चंगाई और चमत्कारों को प्रगट होते हुये देखा और अनुभव किया है, और पवित्र आत्मा की महिमायुक्त उपस्थिति और परमेश्वर के अनुग्रह की मिठास एवं मधुरता को अनुभव किया है।

मैं भविष्य में भी आपके साथ मिलकर सेवा करने का इच्छुक हूँ और बेसब्री से बाट जोह रहा हूँ उस समय एवं अवसर की जब हम परमेश्वर की और महान सामर्थ्य और भलाई का अनुभव करेंगे।

आपका भविष्य उज्जवल है, परमेश्वर के द्वारा आपको दी गई बुलाहट महान है और परमेश्वर के अनुग्रह की जरुरत आपके जीवन में बढ़ती चली जा रही है। उसकी उपस्थिति में विश्वासयोग्य बने रहें, उसके अनुग्रह में बने रहें और जो कुछ परमेश्वर पिता का है, वह सब आपके लिये और आपका है।

राबर्ट प्रकाश

प्रस्तावना

इस पुस्तक के विषय में बताने से पहिले मैं इस पुस्तक के लेखक राबर्ट प्रकाश जी का सम्मान करना चाहता हूँ। राबर्ट प्रकाश परमेश्वर के लोगों के लिये परमेश्वर का एक उपहार हैं। यह एक काबिल शिक्षक हैं, अभिषिक्त प्रचारक हैं और इनके पास विश्वासियों को सेवकाई के कार्य के लिये तैयार करने एवं सशक्त बनाने की अद्भुत योग्यता है।

मैंने इनके साथ रहते हुये जो एक बात देखी है वह यह है कि राबर्ट आत्म विश्वास और नम्रता का मिश्रण हैं। ये वे दो खूबियाँ हैं जो कि प्रायः एक ही व्यक्ति में एक ही समय पर बहुत कम ही देखने को मिलती हैं, परन्तु ये दो खूबियाँ (आत्मविश्वास और नम्रता) राबर्ट की जीवन शैली और अगुवाई में पाई जाती है। राबर्ट अपने जीवन के द्वारा लोगों के लिये एक उदाहरण को प्रस्तुत करके लोगों की अगुवाई करते हैं और उन्हें देखकर यह साफ–साफ पता चलता है कि उनके हृदय परमेश्वर पिता के प्रेम से भरकर लोगों के लिये उमड़ता है। जब मैं राबर्ट के बारे में सोचता हूँ तो मैं गलातियों 5:22–23 में बताये गये 'आत्मा के फल' के विषय में सोचता हूँ और साथ ही साथ उनका ख्याल आने पर मेरे जेहन में याकूब 3:17 में वर्णित 'ऊपर से आये ज्ञान' और प्रेरितो 1:8 में बताई गई 'यीशु की सामर्थ्य' आते हैं। यह एक सामर्थ्यी मिश्रण है।

मैं तो यह सलाह देना चाहता हूँ कि प्रत्येक सेवकाई अगुवे को प्रार्थनापूर्वक भाई राबर्ट को सेवकाई में भागीदार बनने के लिये निमंत्रण देने के बारे में सोचना और विचार करना चाहिये ताकि जिन लोगों की आप सेवकाई में अगुवाई कर रहे हैं, उन्हें राबर्ट प्रशिक्षण देकर सेवकाई के लिये तैयार कर सकें। हमारे बहुत से लोगों को भाई राबर्ट कई साल से सेवकाई के लिये प्रशिक्षित करते चले आ रहे हैं और हमने इनके द्वारा दिये गये प्रशिक्षण का बहुत प्रशावशाली और स्थायी परिणाम देखा है। जब वह (राबर्ट) किसी चंगाई सभा का संचालन करते हैं तो साफ–साफ दिखाई पड़ता है कि वह पवित्र आत्मा के साथ कदम मिलाकर चलते हैं और साथ अधिकार को लेकर चलते हैं जिससे चमत्कारों के प्रगट होने के लिये द्वार खुलता है। जब भी राबर्ट ने हमारी कलीसिया में सेवकाई एवं प्रचार किया है तब हमने अपनी आँखों से बहुत सी चंगाईयाँ प्रगट होते देखी हैं। मेरे स्वयं के परिवार पर भी राबर्ट की चंगाई की सेवकाई का गहरा असर पड़ा है। इनकी सेवकाई का स्थायी असर ऐसा है कि राबर्ट के सेवकाई करके चले जाने के बाद भी मैंने यह देखा है कि हमारे लोग चंगाई और चमत्कारों के लिये विश्वास रखते हुये जीना सीखे हैं। इनकी सेवकाई का ऐसा फल एवं असर यहाँ पर दिखाई देता है।

अब मैं थोड़ा इस अद्भुत पुस्तक के बारे में भी बताना चाहता हूँ। पहिली बात जो मैंने देखी, वह यह है कि किस प्रकार से इस पुस्तक को पढ़ने के दौरान मेरा विश्वास अद्भुत तरीके से बढ़ने लगा। इस पुस्तक ने मुझे उभारा और साथ ही साथ मुझे सामर्थ्यी रूप से सेवकाई करने के लिये प्रेरित किया एवं एक चुनौती मेरे सामने रखी है। यह पुस्तक चंगाई और चमत्कारों की सामर्थ्यी गवाहियों से भरी हुई है। जैसे–जैसे मैंने इसके पन्नों को पढ़ा

तो मैं और अधिक विश्वास करने के लिये प्रेरित हुआ और हियाव के साथ पवित्र आत्मा की भागीदारी वाली जीवन शैली जीने को प्रेरित हुआ ताकि लोगों के जीवन में सामर्थ्यी बदलाव (परिवर्तन) को देख सकूँ।

इस पुस्तक को पढ़ना बड़ा आसान है परन्तु इसको पढ़ना बन्द कर देना कठिन है। प्रत्येक अध्याय को समाप्त करने के बाद, मैं आगे के अध्याय को पढ़ना जारी रखना चाहता था। यह पुस्तक परमेश्वर के वचन से भरपूर हैं और भरपूर है उस व्यवहारिकता से जिसे यीशु के सभी विश्वासी अपने जीवन और सेवकाई में लागू कर सकते हैं। एक अन्य बात जो कि मैंने इस पुस्तक में देखी वह यह है कि यह पुस्तक ठोस बाईबिल की शिक्षा और उन व्यवहारिक तरीकों का मिश्रण (जोड़) है जिस सच्चाई को लागू करने पर कदम दर कदम विश्वास उत्पन्न होता है और अधिकार के साथ हम विश्वास कर पाते हैं। यह पुस्तक प्रेरणा देने वाली, सशक्त बनाने वाली और साथ ही साथ व्यवहारिक भी है।

यह पुस्तक हर एक उस विश्वासी के लिये है जो मसीह यीशु में है। आपकी पृष्ठभूमि कोई भी क्यों न हो, आपको बाईबिल का ज्ञान कम हो या ज्यादा और आपकी सेवकाई का का अनुभव कम हो या ज्यादा यह कुछ भी मायने नहीं रखता परन्तु इतना तो निश्चित है कि यह पुस्तक विश्वास और विश्वासयोग्यता की जीवन शैली की दिशा में आपको आगे बढ़ायेगी। राबर्ट एक ऐसे प्रशिक्षक हैं जो कि बहुत अनुभवी पास्टर्स की भी पवित्र आत्मा के द्वारा सशक्त बनाये जाकर सेवकाई करने में सहायता कर सकते हैं। खूबसूरत बात यह भी है राबर्ट भाई में किसी नये विश्वासी को चेला बनाने की भी योग्यता है, ऐसा चेला जो कि पवित्र आत्मा की आलौकिक सामर्थ्य का अपने प्रतिदिन के जीवन में अनुभव करता है। इस पुस्तक को पढ़ कर आपकी यह इच्छा पूरी होगी कि आप अपने आप को 'प्रेरितों के कार्य' की पुस्तक को वास्तविकता में जीते हुये पाएंगे।

''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' (प्रेरितो 1:8)

जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, उस दौरान पवित्र आत्मा के साथ कदम से कदम मिलाते हुये आगे बढ़ें। इस पुस्तक में पायी जाने वाली सच्चाई यीशु के साथ भागीदारी की सामर्थ्यी जीवन शैली का आपके लिये द्वार खोलेगी जिससे कि आप लोगों की जिन्दगी को बदलते हुऐ देखेंगे।

क्लिन्ट स्प्रेग

लीड पास्टर

लाईफ मिशन चर्च, ओलाथी, कैन्सस

विषय सूची

परिचय

1. लोगों को सामर्थ्यी बनाने का सौभाग्य
2. आपकी मज़बूत बुनियाद
3. राज्य का सुसमाचार
4. अनुग्रह का सुसमाचार
5. छुटकारा
6. यीशु का नमूना और प्रेरितों की प्रेरणा का स्त्रोत
7. पवित्र आत्मा, हमारा सुसमाचार का साथी
8. चंगाई चमत्कार
9. छुटकारा और प्रभुता
10. सामान्य रूप से पूछे जाने वाले सवाल

परिचय

मैं उत्साहित हूँ कि यह पुस्तक आपके हाथों में है। परमेश्वर के वचन को परखा जा सकता है और हर परिस्थिति में परमेश्वर का वचन विश्वासयोग्य और सत्य साबित होता है। यद्यपि मेरे पास बहुत से प्रमाण और गवाहियाँ हैं, आपको परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने हेतु प्रेरित करने के लिए, फिर भी मैं अपने स्वंय के अनुभवों के द्वारा ऐसा नहीं करना चाहूँगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इस पुस्तक में पाई जाने वाली सच्चाई आपके जीवन को पूरी रीति से बदल देगी और मैंने कई बार स्वंय इसका अनुभव किया और पाया कि इस पर संदेह नहीं कर सकता। चाहे आप कोई भी क्यों न हों, पृष्ठ भूमि कोई भी क्यों न हो और आप किसी भी प्रकार की समस्याओं या संघर्षों का सामना क्यों न कर रहे हों परन्तु मैं आपको बताना चाहता हूँ कि बेदारी/जागृती आपकी पहुँच से दूर नहीं है। आप बेदार हो सकते हैं जरुरत बस इस बात की है कि कोई आपको आगे बढ़ने का सरल/आसान सा रास्ता दिखाए।

पंजाब की रहने वाली निक्की यीशु मसीह में एक नयी विश्वासी थी। बीस साल से अधिक समय तक दुष्ट आत्मायें उसे सताती रहीं, परन्तु यीशु ने उसे छुटकारा दिया दुष्ट–आत्माओं के बन्धनों से, इस कारण वह यीशु से बहुत प्रेम करती थी। मैं पजाब में गया इस उद्देश्य/मकसद के साथ कि वहाँ नये विश्वासियों को प्ररित और उत्साहित करूँ कि वे उत्साह और जोश के साथ लोगों को सुसमाचार प्रचार करें। वहाँ पर मेरी मुलाकात निक्की से हुई। उसको यीशु पर विश्वास लाये हुए महज 6 महीने ही हुए थे और वहाँ मैं प्रशिक्षण कार्यक्रम/सभा में लोगों को सिखा रहा था। निक्की भी वहाँ पर उन सभाओं में सम्मिलित हुई। उस ने वहाँ चंगाई और चमत्कारों को स्वंय देखा एवं अनुभव किया। वहाँ उसने सीखा कि किस प्रकार से दूसरों को यीशु का सुसमाचार सुनाया जाए। वहाँ पवित्र आत्मा से उसका परिचय और मुलाकात हुई। मैंने उन लोगों को कहा कि वे बड़े उत्साह के साथ अपने विश्वास की गवाही औरों को दें और परमेश्वर पर भरोसा रखें कि वह चमत्कार एवं चंगाई के द्वारा कार्य करेगा। निक्की ने बड़ी आज्ञाकारिता दिखाई और लोगों को यीशु की गवाही देने लगी।

निक्की गाँव में अपने घर लौटी और तुरन्त जाकर अपनी सास को उसने यीशु के बारे में बताया। उसकी सास लकवा रोग से पीड़ित थी, उनका एक पैर पूरी तरह से मुड़ गया था, वह पैर काँपता रहता था और वह चल नहीं पाती थी। वह अपने पेशाब को भी नहीं रोक पाती थी और अक्सर बिस्तर में ही उनका पेशाब निकल जाया करता था। निक्की ने पवित्र आत्मा को आमंत्रित किया और अपनी सास की चंगाई के लिए प्रार्थना की। दो मिनट के अंदर उसकी सास उठ खड़ी हुयी और अपने पैरों पर चलने लगी। अगले दिन वह अपने डाक्टर

(Neurologist) को दिखाने को चिकित्सको में गयी। वह डाक्टर उस क्षेत्र के सबसे अच्छे क्लीनिकों में माना जाता था और बहुत समय से निक्की की सास का ईलाज कर रहा था। डाक्टर उनकी जाँच करते हुए सवाल पूछ रहा था। निक्की की सास ने कहा, ''मेरी बहु (पुत्रवधु) निक्की ने मेरे लिए यीशु के नाम मे प्रार्थना की और मैं अपनी बीमारी से मुक्त हो गयी।'' डाक्टर कहने लगा, ''अपनी बहु निक्की को बुलाओ, मुझे उससे बहुत से सवाल पूछने हैं।''

मैंने स्वप्न में देखा कि मसीह विश्वासियों की एक पीढ़ी जो कि धार्मिक परम्पराओं से आज़ाद है, बड़े जोश के साथ सामर्थ्यी रूप से सुसमाचार का प्रचार कर रही है। बड़ी खुशी के साथ में यह कह सकता हूँ कि जो कुछ भी मैंने स्वप्न में देखा था, वह वास्तविकता में आँखों से देखने पर सामने पूरा होता दिखाई दे रही हैं।

जरा सोचिये कि यदि जोश से भरपूर नये विश्वासिओं को यह बताया जाये कि अगर वे साहस के साथ (हियाव से) सुसमाचार लोगों को सुनायें तो यीशु उनके साथ रहते हुए अपने वचन को सत्य साबित करने के लिए चंगाई और चमत्कारों/आश्चर्यकर्मों को प्रगट करते हुए उन्हें अपने कार्य के लिए इस्तेमाल करेगा। यदि मसीह की देह में पाये जाने वाले सभी अगुवे अपना मकसद यह बना लें कि हमें सभी विश्वासियों को सुसमाचार की सेवा करने के लिए तैयार और सुसज्जित करना है, तो सोचिये इसका परिणाम क्या होगा? इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य/मकसद यह है कि मैं इन सभी सवालों के जवाब परमेश्वर के वचन में से दूँ और कई वर्षों तक यात्रा कर अनुभवों के द्वारा भी मैं इन सवालों के जवाब देने की कोशिश करूँगा।

जब मैं दिल्ली में था, तो वहाँ मुझे एक ऐसी कलीसिया का पता चला जहाँ पर बहुत से युवा लोग संगति किया करते थे। जैसे ही मुझे मौका मिला इन लोगों को प्रेरित करने का, मैंने अवसर का लाभ उठाते हुए उन्हें उभारा की वे चमत्कारों के लिए प्रभु यीशु पर भरोसा कर सकतें हैं। मैंने उनके लिए प्रार्थना की और उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया। इन युवाओं में अभिषेक नाम का व्यक्ति भी था जिसकी उम्र महज 23 साल थी। मैंने प्रेमपूर्वक उससे कहा, ''जाओ और जाकर लोगों को यीशु के बारे में बताओ और जो कोई भी अपनी समस्याओं और बिमारियों के लिए प्रार्थना करवाना चाहे, उसकी समस्याओं और बिमारियों के लिए यीशु के नाम में प्रार्थना करो।''

अभिषेक स्थानीय सब्जी मंडी में गया और वहाँ एक सब्जी बेचने वाले से उसने पूछा, ''क्या आपके शरीर में दर्द है? क्या आपको कोई ऐसी शारीरिक समस्या या बिमारी है, जिसके लिए मैं प्रार्थना कर सकूँ? यीशु आपको बिमारी से चंगाई देंगे।'' उस बुजुर्ग व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''मैं तो ठीक हूँ पर आप सच में किसी के लिए प्रार्थना करने के इच्छुक हैं तो

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे एड्स का रोग है और वह अपनी मृत्यु का इन्तज़ार कर रहा है। आप उसके लिए जाकर प्रार्थना करें। अभिषेक ने उस व्यक्ति का पता पूछा और तुरन्त उसे खोजने/ढूढ़ने चल पड़ा।

अभिषेक ने उस व्यक्ति को खोज निकाला और उसे अपने वहाँ आने का कारण बताया। उसने बताया, ''मैं यहाँ तुम्हारी चंगाई के लिए प्रार्थना करने आया हूँ और मैं यह विश्वास करता हूँ कि यीशु तुम्हें तुम्हारी इस बिमारी से चंगाई देगा।'' इस व्यक्ति की उम्र लगभग 28–29 वर्ष रही होगी। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''डाक्टरों ने मुझे बताया है मेरी बिमारी लाईलाज है और मैं इस बिमारी के आखिरी चरण (last stage) में हूँ। मेरी रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immune System) पूरी तरह से खत्म हो गयी है।'' अभिषेक ने उस व्यक्ति के द्वारा कहे गये शब्दों पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया और उससे कहा, ''कोई फर्क नहीं पड़ता कि डाक्टर क्या कहते हैं आपकी बिमारी के बारे में, परन्तु मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यीशु ही इस जगत को बनाने वाले परमेश्वर हैं और आपको चंगाई दे सकते हैं।'' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''सच कहूँ तो मुझे बिल्कुल भी विश्वास नहीं है कि मैं इस बिमारी से चंगा हो सकता हूँ और मैं परमेश्वर पर भी इस समय विश्वास नहीं कर सकता हूँ।'' उत्साह से भरकर अभिषेक ने कहा, ''मैं इस समय आपके लिए प्रार्थना करने जा रहा हूँ और आपको यीशु चंगा करेंगे और यदि आपको चंगाई नहीं मिलती है तो आप मेरे मुँह पर थूक सकते हैं।'' उस व्यक्ति ने सोचा कि बहस करने की जगह इसे प्रार्थना करने दिया जाये और अभिषेक ने बड़े हियाव के साथ उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना की।

दो हफ्तों के बाद अभिषेक को समाचार मिला कि वह व्यक्ति डॉक्टर के पास गया और अपनी जाँच करवायी। जाँच के नतीजे न केवल उस व्यक्ति के लिए चौंकाने वाले थे परन्तु उन रिपोर्ट को देखकर डाक्टर भी हैरान रह गया और कहने लगा, ''मुझे समझ नहीं आ रहा है कि कैसे तुम्हारे शरीर में एड्स के ज़रा भी लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे हैं और तुम्हारी रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immune System) भी बिल्कुल सामान्य हो गई है।''

कुछ समय पहले मैं रोहतक (हरियाणा) में गया था। मैं वहाँ पर विश्वासियों को सिखा रहा था कि किस प्रकार बीमारों के लिए प्रार्थना करने पर और उनके चंगाई प्राप्त करने पर सुसमाचार प्रचार करने के द्वार/रास्ते खुल जाते हैं। वहाँ एक बुजुर्ग दम्पत्ति से मेरी मुलाकात हुई। ये दोनों पति–पत्नी यीशु को प्रेम करते थे परन्तु व्यक्तिगत तौर पर उन्होंने कभी चंगाई का कोई अनुभव नहीं किया था। मैंने वहाँ मौजूद लोगों को वचन में से सिखाया (शिक्षा दी) कि किस तरह से बीमारों की चंगाई के लिए प्रार्थना की जाए। इसके बाद मैंने उन सभी को उभारा कि वे भी जाकर इसी रीति से बीमारों के लिए प्रार्थना करें। उसी शाम इस बुजुर्ग दंपत्ति का जाना एक ऐसी जगह में हुआ जहाँ उन्हें एक जवान महिला दिखाई दी, जो कि

अपने बिस्तर पर पड़ी थी। पता करने पर मालूम हुआ कि उसे रीढ़ की हड्डी की टीबी है और तीन वर्ष से वह न चल फिर सकी है, न खड़ी हो पायी है। तीन वर्ष से वह सिर्फ अपने बिस्तर पर पड़ी हुयी थी। इस दंपत्ति ने शुरू में उस महिला के लिए प्रार्थना करने की हिम्मत नहीं दिखाई और उम्मीद करने लगे कि कोई पास्टर या अन्य विश्वासी जन आकर उस महिला की चंगाई के लिए प्रार्थना करें। लेकिन जैसे–जैसे समय गुजरता गया, इन दोनों के अंदर उस महिला के लिए प्रार्थना करने की इच्छा प्रबल और तीव्र होती चली गयी। उन्होंने विश्वास किया कि याशु इस महिला को चंगाई देंगे और उस महिला के लिए प्रार्थना की। प्रार्थना के तुरन्त बाद वह महिला रोने लगी और फिर अपने पैंरों पर उठ खड़ी हो गई और उसने चंगाई प्राप्त की। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उसे अपने पैंरों पर चलकर घर तक जाते हुए देखकर उसके परिजनों/रिश्तेदारों और पड़ोसियों के चेहरे के भाव कैसे रहे होंगे? इस प्रकार चमत्कार सुसमाचार प्रचार के लिए सुनहरा रास्ता तैयार करते हैं/मार्ग प्रश ास्त्र करते हैं कि हम यीशु के प्रेम और उद्धार के बारे में लोगों को बता सकें कि लोग यीशु पर ईमान लायें।

इस पुस्तक को लिखने के दौरान मुझे खुशी हो रही है आपको यह बताते हुए कि इन दिनों ईरान में संसार का सबसे बड़ा कलीसिया रोपण अभियान चल रहा है। वहाँ अधिकतर अगुवाई का कार्य महिलायें और साधारण विश्वासी कर रहे हैं वहाँ पर कोई संस्थागत कलीसिया नहीं है परन्तु फिर भी साधारण विश्वासी, सरल तरीके से सामर्थ्यी सुसमाचार को लोगों तक पहुँचा रहे हैं। मित्रों हमें जाँचने और मुल्यांकन करने की आवश्यकता है कि हमने अभी तक अपना कितना प्रभाव छोड़ा है। कहीं ऐसा तो नहीं कि हम एक संस्थागत स्थापित ध ार्मिक मॉडल को एक मूर्ति समान बनाकर उसकी उपासना करने में तो नहीं लगे हैं? एक ऐसा धार्मिक तरीका जिसमें आत्माओं को बचाने के लिए कोई स्थान नहीं है।

इस पुस्तक को पढ़ने पर आप देखेंगे कि यहाँ पर मैंने अपने जो अनुभव साझा किये हैं वे अधिकतर भारत के हैं क्योंकि पिछले 15 वर्ष से भारत ही मेरा घर और सेवकाई क्षेत्र रहा है। यद्यपि मसीही अगुवों और विश्वासियों को समय–समय पर प्रशिक्षण (training) देने के लिए मैं दुनिया के बहुत से देशों में गया हूँ और सब जगहों पर मैंने पवित्र आत्मा के सामर्थ्यी कार्य को होते देखा है। इस पुस्तक में बताई गयी सच्चाई और बातें न केवल भारत के सन्दर्भ में कारगर साबित होती है वरन् मैं यह कहना चाहता हूँ कि परमेश्वर का वचन किसी एक विशेष देश या लोगों का पक्षपात नहीं करता। इसी तरह के अच्छे अनुभव मुझे एशिया, अफ्रिका, यूरोप और अमेरिका के विभिन्न हिस्सों मे भी हुए हैं। मैंने प्राय यह देखा है कि जहाँ भी धार्मिकता के शिकंजे से मुक्त होकर परमेश्वर के अनुग्रह पर जोर दिया जाता है वहाँ पर सुसमाचार सामर्थ्यी रूप से कार्य करता है, अविश्वासी यीशु पर विश्वास लाते हैं, अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं और अद्भुत और छुटकारे के कार्य होना एक आम बात दिखाई पड़ती है।

पवित्र आत्मा ने मेरी आँखें खोली कि मैं एक साधारण विश्वासी की कीमत को समझूँ और जान पाऊँ कि एक साधारण विश्वासी के अंदर प्रभु का कार्य करने की कितनी अधि ाक क्षमता पाई जाती है। परमेश्वर की ईच्छा और कार्य इस पृथ्वी पर गिने चुने कुछ अगुवों व लोगों के द्वारा पूरा नहीं हो सकता, परन्तु तब ही पूरा हो सकता है जब मसीह की देह अर्थात् कलीसिया अपनी पूरी संख्या और क्षमता के साथ उसके कार्य को पूरा करने के लिए उठ खड़ी हो।

ध्यान दें: इस पुस्तक में मैं प्राय एक शब्द का इस्तेमाल अथवा प्रयोग करूँगा और वह शब्द है ''साधारण विश्वासी।'' मैं यह मानता हूँ कि सभी विश्वासी पवित्र हैं और कोई भी विश्वासी साध ाारण नहीं हैं अपितु असाधारण है। फिर भी मैं ऐसा इस कारण कर रहा हूँ क्योंकि कलीसिया ने अगुवों और विश्वासियों को अलग–अलग करके देखा है, और विश्वासी भी अपने आपको बड़ा साधारण या कम करके आँकते हैं। इसी कारण मैं ''साधारण विश्वासी'' शब्द का इस पुस्तक में प्रयोग करूँगा।

1

लोगों को सामर्थ्यी बनाने का सौभाग्य

परमेश्वर ने अगुवों के लिए 5 प्रकार की सेवकाई ठहराई है – प्रेरित, भविष्यद्वक्ता (नबी), सुसमाचार सुनाने वाले, रखवाले (Pastors) और उपदेशक जो कि एक खास मकसद/उद्देश्य के लिए हैं। यदि हम उस मकसद/उद्देश्य को दर–किनार कर दे तो कलीसिया परमेश्वर के द्वारा दिये गये तरीके और क्षमता के साथ काम करने में असफल हो जाती है, नाकाम हो जाती है। कलीसिया का भविष्य इन पाँच प्रकार की सेवकाई करने वाले अगुवों पर निर्भर करता है और इन अगुवों की सफलता कलीसिया पर निर्भर करती है। मैं यहाँ पर इस बात पर विस्तार से चर्चा करूँगा जिस बात पर बहुत कम लोगों ने ध्यान दिया है, अर्थात् यह कि 5 प्रकार की सेवकाई का जो अभिषेक है, वह हस्तांतरित होने वाला अभिषेक है। कहने का मतलब यह है कि जिस किसी को इन पाँच प्रकार की सेवकाई का अभिषेक मिला वह अपना अभिषेक दूसरे विश्वासियों के साथ बॉट सकता है, अर्थात् दूसरे विश वासी भी उस अगुवे के समान अभिषेक में इस्तेमाल हो सकते हैं।

''उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके और कुछ को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके और कुछ को रखवाले और कुछ को उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाये और मसीह की देह उन्नती पाए।'' (इसिफियों 4:11–12)

यहाँ ''सिद्ध हो जाने'' का युनानी भाषा में मतलब है ''तैयार किये जाना'' और इसके लिये मूल यूनानी शब्द 'काटारटिस्मोस' का प्रयोग किया गया है। पाँच प्रकार की सेवकाई का उद्देश्य/मकसद यह है कि पवित्र लोग तैयार किये जाएं अर्थात सिद्ध किये जाएं ताकि मसीह की देह (कलीसिया) सेवा का कार्य कर सके।

5 प्रकार की सेवकाई इस कारण दी गयी है ताकि साधारण विश्वासी प्रेरित और तैयार किये जा सकें। ये पाँच प्रकार के सेवक अपने आप में संपूर्ण नहीं हैं और उनकी बुलाहट कलीसिया की आज्ञाकारिता पर निर्भर है। ये 5 प्रकार के सेवक एक दर्पण (आइने) के समान कार्य करते हुए साधारण विश्वासियों को उनकी क्षमता से रूबरू कराते हैं और परमेश्वर का अनुग्रह जो उन पर अद्भुत रीति से हुआ है वह उन पर प्रगट करते हैं।

उपरोक्त पदों में साफ–साफ समझाया गया है उस वरदान, अभिषेक और बुलाहट के विषय में जो कि परमेश्वर चाहता है कि हर एक विश्वासी अपने जीवन और सेवकाई में प्रगट

करे/दिखाये। पाँच प्रकार की सेवकाई करने वाले सेवक कोई बहुत खास नहीं स्वंय अपने आप में, परन्तु इसमें खास बात यह है कि परमेश्वर यह चाहता है कि सभी साधारण विश्वासियों को वह खास विश्वासी बनाए। यह महज क्रम है – सबसे पहले पाँच प्रकार की सेवकाई, फिर पवित्र लोगों को तैयार करना और मसीह की देह की उन्नति होना।

यदि आपको इन पाँच प्रकार की सेवकाई में से किसी भी एक सेवकाई करने की बुलाहट प्राप्त हुई है तो आपकी उपलब्धि महज अपने वरदान के द्वारा सेवा करना ही नहीं होना चाहिए परन्तु अपने जैसे वरदान वाले विश्वासियों की प्रतिकृति तैयार करना होना चाहिए। हमें अपने समान अभिषेक वरदान वाले अन्य लोगों को भी तैयार करना चाहिए और सफलतापूर्वक उनके द्वारा सेवा को अंजाम देना चाहिए।

<u>नये नियम का प्रारूप/नमूना (model)</u>

प्रेरित पौलुस जिन्होंने इफिसियों की पत्री लिखी है, अपनी बुलाहट को बखूबी/भलीभॉती समझ पाये थे। वे अपनी शिक्षा में निरन्तरता बनाये रखते थे और लगातार दूसरे सेवकों और विश्वासियों को सेवकाई के लिए सशक्त और सामर्थ्यी बनाते हुए तैयार कर रहे थे। ध्यान दे इस आज्ञा की ओर जिसके द्वारा पौलुस अपने शिष्य तीमुथियुस को उभार रहे हैः

''और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।'' (2 तीमुथियुस 2:2)

प्रेरित पौलुस चाहते थे कि उनके समान वरदान और सामर्थ्य के साथ सेवकाई करने वाले अन्य लोग भी तैयार हों और स्पष्ट तौर पर तीमुथियुस को आज्ञा देते हैं कि वह दूसरे मनुष्यों को भी सिखाए और जो जो बातें उन्होंने तीमुथियुस को सिखाई थी वे बातें वह आगे को अन्य विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को सिखाने के ईच्छुक हों। यहाँ पर विश्वासयोग्यता ही मुख्य कुंजी है क्योंकि पाँच प्रकार की सेवकाई का अभिषेक और वरदान तो हस्तांतरित होने वाला होता है। यह वरदान और अभिषेक एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचता है। विश्वासयोग्य मनुष्यों को ढूँढ़ने की जगह अधिकतर अगुवे ऐसे लोगों को ढूँढ़ रहे हैं जिन्हें विशेष दान मिले हो, जिन पर विशेष अभिषेक हो या फिर जिनकी विशेष बुलाहट हो, ताकि ये बातें उन्हें सिखा सकें और उन्हें ये बातें सौंप सकें और ऐसे विशेष वरदान और अभिषेक पाये लोगों को अपने दल (team) में शामिल कर सकें।

जरा ध्यान दें उस क्रम पर जो 2 तीमुथियुस 2:2 में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया है। पौलुस से तीमुथियुस, तीमुथियुस से विश्वासयोग्य मनुष्यों को, और विश्वासयोग्य मनुष्यों से अन्यों तक ये बातें पहुँचनी हैं। साधारण शब्दों में विश्वासयोग्यता का मतलब है, अपने विश्वास के प्रति समर्पित होना और यह खूबी आपको इस योग्य बना देती है कि आपको सामर्थ्यी बनने के लिए तैयार किया जाए। पौलुस निरन्तर अपने अभिषेक और वरदान को दूसरों को देने और प्रदान करने में लगे रहते थे। वे निरन्तर अपने समान दूसरे मनुष्यों को तैयार करते रहते थे। इन पदों पर ध्यान दें:

''क्योंकि मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूँ कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ; अर्थात् यह कि जब मैं तुम्हारे बीच में होऊँ, तो हम उस विश वास के द्वारा जो मुझमें है, एक दूसरे से प्रोत्साहन पायें।'' (रोमियों 1:11–12)

''उस वरदान के प्रति जो तुझ में है, और भविष्यवाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।'' (1 तीमुथियुस 4:14)

''इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्जवलित कर दे।'' (2 तीमुथियुस 1:6)

याद रखें कि इफिसियों 4:11–12 के अनुसार अगुवों की सफलता इस बात को देखकर पता चलती है कि वह कितनी कुशलता से कलीसिया (मसीह की देह) के दूसरे विश्वासियों को अपने समान प्रभावशाली और सक्षम बनाते हैं। हम इसका प्रमाण यीशु मसीह के जीवन के द्वारा देख सकते हैं कि उन्होंने अपने शिष्यों को सामर्थ्यी रूप से तैयार किया ताकि वे भी यीशु के समान कार्य कर सकें। यीशु के द्वारा कहे गए निम्नलिखित शब्दों पर ध्यान दें:

"चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा (अर्थात् तैयार और प्रशिक्षित किया जाएगा) वह अपने गुरु के समान होगा।" (लूका 6:40)

क्या आपने स्वामी के इन स्पष्ट शब्दों को सुना? हर व्यक्ति जब पूरी तरह से तैयार और प्रशिक्षित किया जाता है तो अपने गुरु के समान बन जाएगा। यीशु का लक्ष्य/उद्देश्य यही था कि अपने चेलों में अपने आप को उतार दे/डाल दे ताकि अपने चेलों को अपने जैसा और अपने समान बना दे। मित्रों, यीशु का उद्देश्य और मिशन अभी भी नहीं बदला है। अभी भी वह यही चाहता है कि उसका हर एक चेला पूरी तरह से तैयार और परिपक्व बने ताकि वह यीशु का प्रतिनिधित्व कर सके। यीशु की इस आज्ञा पर ध्यान दें जो उसने अपने चेलों को छोड़कर स्वर्ग में जाने से पहिले दी:

"इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अंत तक तुम्हारे साथ हूँ।" (मत्ती 28:19–20)

सब बातें जो यीशु ने हर एक चेले को सिखाने की आज्ञा दी है उसमें सुसमाचार प्रचार करना, बीमारों को चंगा करना, मुर्दों को जिंदा करना और दुष्ट आत्माओं को निकालना आदि शामिल है (मत्ती10:7–8)। यहाँ पर कोई ऐसी बात नहीं है जो की विशेष योग्यता वाले अगुवों को साधारण विश्वासियों से अलग करें और उन्हें ऊँचा दर्जा दें।

यीशु ने अपने चेलों पर पूरा भरोसा जताया, जिनकी संख्या 12 से अधिक थी (लूका 10:1 और मरकुस 9:38–39)। यीशु ने अपने चेलों में अपना निवेश किया जैसे कि उसने उन्हें सिखाया और तैयार किया और उन्हें वे कार्य करने के लिए भेजा जो कार्य वह स्वयं करता था। यीशु ने उन्हें अपना दर्जा और स्थान दिया। हालाँकि यीशु परमेश्वर का पुत्र था फिर भी उसने पवित्र आत्मा से सामर्थ्य पाकर और पूरी तरह से पिता के आधीन होकर और महज एक मनुष्य बनकर सेवकाई की (फिलिप्पियों 2:5–8)। इसलिए उसका माडल अनुकरणीय है और उसने अपने चेलों को प्रोत्साहित किया उन सब चीजों और कार्यों को करने के लिए जो कार्य वह स्वयं करता था। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

- पानी पर चलने के दौरान यीशु ने पतरस को भी पानी पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया और पतरस कुछ समय तक सफलतापूर्वक पानी पर चल पाया। (मत्ती 14:26–29)
- यीशु के अंजीर के पेड़ को शाप देने पर जब अंजीर का पेड़ तुरंत सूख गया और इस पर चेले आश्चर्य करने लगे तो यीशु तुरंत उन्हें सिखाने लगे कि तुम भी ऐसा कर सकते हो। (मत्ती 21:20–22)
- यीशु ने बारह और सत्तर चेलों को समय–समय पर तैयार और प्रशिक्षित किया और उन्हें सशक्त बनाया और सामर्थ्य दी कि वे उसी के समान जाकर प्रचार करें, बीमारों को चंगा करें और दुष्ट आत्माओं को निकालें। (लूका 9:1–2, 10:1, 9, 17–19)
- हर एक विश्वास करने वाले से यीशु ने एक अदभुत वादा किया है कि जो चमत्कार और आश्चर्यकर्म उसने किए वही सब कार्य हर एक यीशु पर विश्वास रखने वाला कर सकता है। (यूहन्ना 14:12)

मैं आपको चारों सुसमाचार (इंजील) पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहूँगा ताकि आप सीखें कि दूसरों को किस तरह सेवकाई के कार्य के लिए तैयार किया जाए और सामर्थ्यी और सशक्त बनाया जाए। जब आप मत्ती, मरकुस, लूका और यहून्ना को पढ़ेंगे तो आप देख पाएँगे

कि किस तरह से यीशु ने अपने आराम, अपनी सुविधाओं और अपने व्यक्तिगत समय का त्याग चेलों के लिए किया ताकि वह उन्हें अपने समान बना सके। और तीन वर्ष के कम समय में ही उसने चेलों को अच्छी रीति से प्रशिक्षित और तैयार कर दिया और निश्चिंत होकर यह भरोसा रखते हुए संसार छोड़कर स्वर्ग चला गया कि उसका संदेश इस पृथ्वी पर फैलेगा और उसका मकसद इस पृथ्वी पर इन लोगों के द्वारा अवश्य पूरा होगा जिन्हें उसने तैयार किया है। मित्रों, क्या कहीं आपको ऐसा वाक्य देखने को मिलता है जहाँ यीशु ने अपने चेलों से कहा हो, "रुको! यह करने की कोशिश मत करो! मेरा विशेष रूप से अभिषेक हुआ है यह सब करने के लिए, तुम यह सब नहीं कर सकते हो जो मैं करता हूँ।"

लोगों को सामर्थी और सशक्त बनाने के विभिन्न स्तर (levels):

मैंने कई वर्षों से सेवकाई में जाना है उन विभिन्न तरीकों को जिनके द्वारा अगुवे अपने वरदानों और बुलाहट को लेकर कार्य करते और दूसरों को तैयार करते हैं। नीचे दिए गए चार्ट को देखकर हम जान पाएँगे की हम किस स्तर पर पाए जाते हैं और परमेश्वर हमें किस स्तर पर देखने की इच्छा रखता है।

लोगों को तैयार करने और सशक्त बनाने का स्तर	अगुवों की प्राथमिकताएँ और जीवन जीने का तरीका
निम्न स्तर, स्वयं पर ध्यान केंद्रित	इस प्रकार का अगुवा अपने वरदान और अभिषेक का प्रभु की सेवा में इस्तेमाल करते समय पूरी तरह स्वःकेंद्रित रहता है। इस अगुवे के पास दूसरों को तैयार करने का कोई दर्शन नहीं होता है, इसलिए यह दूसरों को तैयार कर सशक्त बनाने की कोई कोशिश नहीं करता है। इस प्रकार के अगुवे केवल खुद को अभिषिक्त मानते और समझते हैं और दूसरों को महज साधारण समझते हैं। इस प्रकार का अगुवा जो पास्टर है वह केवल अपनी भेड़ों की चरवाही पर ध्यान केंद्रित करता है और इस स्तर का सुसमाचार प्रचारक केवल यीशु के लिए आत्मायें जीतने पर ध्यान देता है।

गिने–चुने लोगों को थोड़ा बहुत तैयार करना एवं सशक्त बनाना। अधिकतर स्वयं केंद्रित	इस स्तर का अगुवा अधिक समय अभिषेक के साथ सेवा करते हुए बिताता है। हालाँकि इस स्तर के अगुवों को इस बात का अहसास होता है की भविष्य के अगुवे भी पाए जाते हैं हमारे बीच उन्हें भी तैयार किया जाना चाहिए। इस प्रकार के अगुवे अपने प्रभाव के क्षेत्र में भविष्य में इस्तेमाल होने के लिए ऐसे लोगों (अगुवों) को खोज निकालते हैं तैयार करने एवं सशक्त बनाने के लिए जो कि उन्हीं के समान अभिषेक एवं वरदान पाए होते हैं और जिनकी बुलाहट उनके स्वयं के जैसी होती है। उदाहरण के तौर पर एक सुसमाचार प्रचारक अगुवा, उभरते हुए सुसमाचार प्राचारकों को कलीसिया में से नाम लेकर बुलाता है और फिर उन्हें तैयार करता है। यहाँ पर केवल कुछ ही लोग तैयार किए जाते हैं न कि पूरी कलीसिया।
कलीसिया को तैयार करना दूसरे नम्बर की प्राथमिकता होना	इस स्तर के अगुवे को विश्वासियों की क्षमता का अच्छी तरह से पता होता है। उसे पता होता है कि कौन सेवकाई में कितना लिप्त है और परमेश्वर की बुलाहट और योजना उनके लिए क्या हैं। लेकिन फिर भी उन्हें तैयार करना दूसरे नम्बर की प्राथमिकता होती है, उसके लिए प्रथम स्थान होता है उसका अपना अभिषेक और बुलाहट। इस प्रकार का अगुवा तब तक तो लोगों को तैयार करने में खुश रहता है जब तक उसका अपना हित सुरक्षित बना रहता है, और दूसरा उस ऊँचाई पर नहीं पहुँचता जिस ऊँचाई पर यह अगुवा है। असुरक्षा की भावना, ईर्ष्या, जलन, आदि इसे दूसरों को सशक्त बनाने से रोकते हैं। यह अगुवा दूसरों को एक स्तर तक ही सशक्त बनाता है, कही ऐसा न हो कि जिन्हें वे तैयार कर रहा है, वे इससे ऊँचे ना उठ जाएँ।

पूरी तरह से लोगों को तैयार। करना एवं सशक्त बनाना और त्यागपूर्ण जीवन जीने का तरीका (एक कुर्बानी वाला जीवन)	पाँच प्रकार की सेवकाई की पूरी अभिव्यक्ति, यह अगुवा हर एक विश्वासी को तैयार करने को अपनी सफलता के रूप में देखता है। यह अगुवा रणनीतिक तरीकों से चेलों को चुनता, उन्हें तैयार करता और उन्हें अवसर प्रदान करता है सेवकाई करने के और सेवकाई में बढ़ने और उन्नति करने के अवसर उन्हें देता है। वह बखूबी जानता है कि मसीह की देह को तैयार करने के लिए अपना आराम, सुविधा और समय का त्याग करना जरूरी है। सेवकाई के दौरान अपने वरदान का प्रयोग करने के हर अवसर का इस्तेमाल वह दूसरों के लिए आदर्श बन उन्हें सिखाने और तैयार करने के लिए करता है। यीशु के समान इस तरह एवं स्तर का अगुवा अपनी अगुवाई के थोड़े से समय में ही दूसरों को तैयार और प्रशिक्षित कर देता है ताकि वे उसके न रहने पर उसका स्थान ले लें, और उसकी सेवकाई किसी एक विषेष अगुवे पर निर्भर नहीं रहती परंतु बहुत से विश्वासयोग्य स्त्री और पुरुषों पर निर्भर रहती है।

व्याप्त धोखा और गलत मकसद / उद्देश्यः

साधारण विश्वासी प्रायः अपने आप को 5 प्रकार की सेवकाई के योग्य समझते ही नहीं हैं। जब उन्हें विशेष बुलाहट या फिर पूर्ण कालिक सेवकाई (full time ministry) करने का अवसर मिलता है तभी अपने आप को इस प्रकार की सेवकाई के योग्य समझ पाते हैं। ज्यादातर कलीसिया सिर्फ बैठकर सुनने वाले (श्रोता) बने रहना पसंद करती है जबकि पाँच प्रकार की सेवकाई अपने साथ जिम्मेदारी का बोझ लेकर आती है। विश्वासी अपनी स्वयं की क्षमता / काबिलियत को ना देखकर अपनी अक्षमता और नाकाबिलियत को देखते हैं। वे अपने आप को अयोग्य समझते हैं। इस समस्या का उपाय यह है कि अगुवे विश्वासियों को बताएं कि वे (अगुवे) कोई विशेष या अनोखे नहीं हैं। और विश्वासियों को यह भी बताया जाना चाहिए कि वे भी अगुवों के समान ही परमेश्वर की सेवा के लिए बुलाए गए हैं और अगुवों के समान ही वे भी सेवा करने के लिए सक्षम और योग्य हैं।

मित्रों, यदि शैतान आपको आपकी बुलाहट जानने से और उसके अनुसार काम अथवा सेवकाई करने से नहीं रोक सका तो उसकी अगली योजना यह है कि आपको इस बात का भरोसा दिलाएं एवं आश्वस्त करें कि आप विशेष रूप से सेवा के लिये चुने गए हो, आपके ऊपर एक अनोखा अभिषेक है और आप दूसरों से अलग हैं। शैतान घमंड के मूल पाप (प्रारम्भिक पाप) को प्रगट करके सफलतापूर्वक मसीह अगुवों की कई पीढ़ियों को धोखा देने में

सफल/कामयाब रहा है। दूसरों को तैयार करने एवं सशक्त बनाने की जगह, परमेश्वर के इन सेवकों ने लोगों की भीड़ और संसाधनों को अपने लिए जमा कर लिया ताकि वे अपने को बड़ा और महान दिखाने के लिए और अधिक क्षमता से कार्य कर सकें – एक मशहूर सुसमाचार प्रचारक (evangelist) को एक अपना स्वयं का हवाई जहाज चाहिए ताकि वह अधिक से अधिक जगह जाकर सभाऐं कर सके। एक पास्टर एक बड़ी इमारत बनाने की कोशिश में लगा रहता है ताकि इमारत की भव्यता से लोगों को प्रभावित कर सके और उस बड़ी इमारत में बैठने और आने वालों की संख्या देख लोग प्रभावित हों। साधारण विश्वासियों को तैयार किया जाना चाहिए जिससे वे सामर्थ्यी रूप से यीशु मसीह के गवाह बन सकें उन खोए हुए लोगों के बीच में, परंतु इन साधारण विश्वासियों को कहा जाता है कि जाकर अपनी जान पहिचान वाले अविश्वासी लोगों को लेकर उस सुसमाचार प्रचारक की सभाओं में आए जो कि हमारे नगर या कलीसिया में सभायें करने को इन दिनों आया हुआ है। साधारण विश्वासियों को तैयार एवं प्रशिक्षित नहीं किया जाता है कि वे अपने परिवार की चरवाही करें और उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाएँ परंतु उन्हें पूरी तरह से रविवार के प्रचार पर (जो कि एक योग्य वक्ता के द्वारा सुनाया जाता है) निर्भर और आश्रित कर दिया जाता है। मसीही अगुवे बड़ी आसानी से शैतान के जाल में फँसकर अपने अभिषेक और वरदनों का इस्तेमाल स्वयं अपने को ऊँचा उठाने और अपनी स्वयं की सेवा करने में लगे रहते हैं। स्वार्थपूर्ण इच्छाएँ और घमंड बड़ी आसानी से परमेश्वर की सेवकाई के लबादे अथवा वस्त्र में छिप जाते हैं। पाप हममें से किसी को भी बड़ी आसानी से धोखा दे सकता है और घमंड हममें से किसी को भी अपना शिकार बना सकता है।

जब हम दूसरों को सेवकाई के लिए तैयार करते हैं और सशक्त बनाते हैं तो ऐसा करके हम घमंड और स्वार्थपूर्ण इच्छाओं पर प्रहार/चोट करते हैं। मेरे ऐसा पास्टर बैन वायर्ड एक निःस्वार्थ अगुवे का अद्भुत उदाहरण रहे हैं। हालाँकि वे मुझसे अधिक योग्य एवं सक्षम थे फिर भी उन्होंने मुझे आगे बढ़ने में, उन्नति करने, परिपक्व बनने और अपने वरदानों का इस्तेमाल करने के अनगिनत अवसर प्रदान किए। किसी भी ऐसे अगुवे को देखिए जो कि दूसरों को उठाने, बढ़ाने और तैयार करने में निवेश कर रहा है, खुद को मिले मौकों को गवाते और त्याग देते हुए और ऐसे अगुवों में निश्चित रूप से आपको यीशु मसीह का स्वभाव दिखाई देगा।

परंतु बड़ी संख्या में अगुवे ऐसे हैं जो कि अपने स्वयं के पद और प्रभाव के क्षेत्र में अधिक निवेश करते हैं। पिता का प्रेम सबको ग्रहण और स्वीकार कर रहा है परंतु एक अनाथ आत्मा जो पिता के प्रेम को न स्वीकारते हुए अपनी एक अनोखी और साधारण लोगों से अलग पहचान बनाने को लालायित और इच्छुक है जिसमें की उसे झूठी सुरक्षा और अपनी कीमत का झूठा अहसास हो सके। दूसरों को सशक्त न बनाकर ये अगुवे निरंतर आजमायिश/परीक्षा

में पड़ते हैं अपने आप को बढ़ाने, परिपक्व करने और अपने वरदान और अभिषेक को और उन्नत बनाने में ताकि जो वे करते हैं उससे भी बहतर कर सकें। ऐसा करके वे साधारण विश्वासी और अगुवों के बीच की दरार एवं खाई (gap) को और अधिक चौड़ा कर रहे हैं और साधारण विश्वासी के उनके स्तर तक के वरदान और अभिषेक के स्तर तक पहुँचने की संभावना को / उम्मेद को वे खत्म कर देते हैं। उनके उस अभिषेक के कारण साधारण विश्वासियों का ध्यान उन्हीं पर लगा रहता है और उन्हें साधारण विश्वासियों का पूरा सहयोग मिलता है क्योंकि साधारण विश्वासी सोचते हैं कि इस प्रकार के अभिषिक्त अगुवों का सहयोग करना ही परमेश्वर की इच्छा है और वह कार्य है जो कि परमेश्वर ने उनके करने के लिए ठहराया है। ऐसा करके हम ऊपर की ओर नहीं उठ रहे होते हैं, वरन नीचे की ओर जा रहे होते हैं। ये सब सुव्यवस्थित कलीसियाओं और संस्थाओं में पाए जाने वाले विश्वासियों की काबिलियत और क्षमताओं लिए एक मृत्यु – दण्ड की सजा के समान साबित होता है।

जब मैंने सुसमाचार प्रचारक के रूप में चांगई की सेवकाई प्रारंभ की थी, तो मेरी सभाओं में शुरू में सैकड़ों लोग आते थे, फिर भीड़ की संख्या जल्द ही बढ़कर हजारों में हो गई। जितनी अधिक भीड़ सभाओं में जुटती थी मैं उतना ही अधिक उत्साहित हो जाता था, और एक नशे के समान यह बात सिर पर अस्थायी तौर पर कुछ समय तक चढ़ी या छायी रहती थी। जिस तरह के अंदरूनी अनुभव से होकर मैं गुजर रहा होता था उसके बारे में किसी को कुछ पता नहीं होता था, परंतु जल्दी ही मुझे अहसास हो गया कि मेरे हृदय का वह हिस्सा एक अनाथ आत्मा या परिचय के बंधन में पाया जाता है। वह जो नशा मुझ पर छाया हुआ था उसके कारण मैं अपनी कीमत/मूल्य को कुछ अधिक ही आँक रहा था और जैसे जैसे मेरे प्रभाव का क्षेत्र बड़ रहा था, वो नशा मेरे सिर चढ़कर बोल रहा था। हालाँकि मेरे कुछ गलत मकसद के बावजूद भी परमेश्वर ने मुझे उन सभाओं में अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल किया और बहरे लोग चंगाई पाकर सुनने लगे, अंधे देखने लगे, लंगड़े चलने लगे, लोगों में से दुष्ट आत्मायें निकलीं और बहुत से अविश्वासियों ने यीशु के नाम पर उद्धार प्राप्त किया। हमारा मकसद सही नहीं होने पर भी परमेश्वर हमें अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करना तुरंत बंद नहीं कर देता, और यह सोचना बिल्कुल गलत है कि पाप के कारण अभिषेक हमें छोड़कर चला जाता है क्योंकि परमेश्वर की बुलाहट और वरदान अटल और स्थिर है (रोमियों 11:29) और कायम रहते हैं। मैं परमेश्वर का धन्यवाद देता हूँ पश्चाताप और तौबा के वरदान के लिए – गलत पहचान जिसे मैं खोज रहा था उसके बारे में मैं जान पाया और मैंने उसका पीछा करना छोड़कर उस सत्य को जाना जो की हमें स्वतंत्र/आजाद करता है। मित्रों, अब मैं बहुत स्वतंत्र महसूस करता हूँ। अब मैं हजारों की भीड़ में खड़े होकर, बड़े चिन्ह और चमत्कारों को प्रगट करते हुए प्रचार करने की जगह महज ऐसे पचास विश्वासियों को तैयार करना ज्यादा पसंद करूँगा जो मुझसे अधिक सामर्थ्यी रूप से सेवकाई करें और

इस्तेमाल हों। अगर हमें इन दोनों बातों को चुनना पड़ें तो ऐसा होगा की पहले पचास विश वासियों को मैं पूरी तरह से तैयारी करूँ और उसके बाद मौका मिलने पर पाँच हजार की भीड़ के बीच सेवकाई करूँ और ऐसा करते समय मैं उन तैयार और प्रशिक्षित किए गए पचास विश वासियों को भी वहाँ सेवकाई करने का और अपनी बुलाहट और वरदानों के साथ इस्तेमाल होने का मौका प्रदान करूँ।

गुणात्मक वृद्धि / बढ़ौत्तरी का मॉडल/नमूनाः

कई वर्षों तक मैंने ऐसे मॉडल (model) को सीखा/अध्ययन किया जो कि बहुत अधिक प्रभावी हैं और ऐसे मॉडल को भी देखा/जाना जो लोगों को पवित्र आत्मा के द्वारा सशक्त बनाए जाने/तैयार किए जाने में बाधक होते हैं। संस्थागत धर्म – विज्ञान की कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा, जिसमें भविष्य की सेवकाई के लिए व्यवहारिक उपयोग प्रतिदिन नहीं करवाया जाता है, यह मॉडल सबसे कम असरदार/प्रभावी है। इस प्रकार के मॉडल में अधिक ध्यान ज्ञान हासिल करने में लगा रहता है और व्यवहारिक आज्ञाकारिता पर ध्यान नहीं दिया जाता है। मित्रों, यीशु ही हमारा सबसे अच्छा मॉडल था और हमेशा रहेगा। अपने स्वामी को ध्यानपूर्वक सेवकाई करते हुए देखना और उसे सेवकाई करते हुए देखकर उसकी सेवकाई में शामिल होना और स्वामी (यीषु) के द्वारा दिए गये कार्य को पूरा करने में आज्ञाकारी बने रहना ही परमेश्वर के द्वारा हमें दिया गया सर्वोत्तम / सबसे अच्छा सूत्र / नुस्खा (formula) है।

आगे बढ़ने से पहिले मैं आपको एक महत्वपूर्ण / खास बात बताना चाहता हूँ। वचन के ये सिद्धांत अगुवों और विश्वासियों के लिए लिखे गए हैं। हालाँकि लगता है कि यह गुणात्मक वृद्धि का भाग सिर्फ अगुवों कि लिए है, लेकिन ऐसा नहीं है। आइए देखते हैं। "और जो बातें तूने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी है उन्हें विश्वासी (विश्वासयोग्य) मनुष्यों को सौंप दें, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमुथियुस 2:2)

यदि आप पाँच प्रकार की सेवकाई में से किसी भी एक सेवकाई को नहीं भी कर रहे हैं तो भी वचन के इस पद के अनुसार आप बुलाए गये हैं। आपकी बुलाहट है कि आप दूसरों को तैयार करें, प्रशिक्षित करें और सक्षम बनाएँ। दूसरे को तैयार करने और सक्षम बनाने का कार्य पौलुस के द्वारा 5 प्रकार की सेवकाई के साथ शुरू होता है – जो आगे तीमुथियुस को सौंपा जाता है और तीमुथियुस उसे अन्य विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंपता हैं और ये विश्वासयोग्य मनुष्य आगे इसे अन्य विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंपते हैं। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि सुसमाचार जैसे जैसे पौलुस तीमुथियुस और अन्य मनुष्यों के द्वारा आगे बढ़ता गया

समय के साथ उसका प्रभाव भी कम होता गया। ऐसा सोचना गलत है। वही पवित्र आत्मा जो पौलुस के अंदर पाया जाता था, वह दूसरे अन्य विश्वासयोग्य मनुष्यों के अंदर भी पाया जाता था। इसलिए यदि आप अपने को विश्वासी कहते हैं, तो परमेश्वर ने आपको भी बुलाया है कि आप दूसरों को सेवा कार्य के लिए तैयार करें और सशक्त बनाएँ।

यीशु के द्वारा दिखाया गया चार कदम (four step) का मॉडल / नमूनाः

1. साधारण आज्ञाकारिता पर आधारित शिक्षाएँः व्यवहारिक आज्ञाकारिता की बुनियादी शिक्षाओं पर जोर दें और वचन में से सिखाएँ। ऐसी बातें सीखना इसलिए जरूरी है ताकि हम आज्ञा का पालन कर सकें। दिमागी समझ / ज्ञान ही काफी नहीं है, परंतु उसका व्यवहारिक उपयोग होना चाहिए / सीखी बातों को अमल में लाना चाहिए। मत्ती रचित सुसमाचार अध्याय 5–7 पर ध्यान दें। ये व्यवहारिक बातें हैं। ये यीशु के द्वारा दी गयीं शिक्षायें हैं जिसमें उन्होंने अपने चेलों को सिखाया कि किस प्रकार का जीवन उन्हें जीना चाहिए। यहाँ पर यीशु अपनी शिक्षाओं का अंत एक दृष्टान्त के साथ करते हैं जिसमें वे आज्ञापालन और व्यवहारिक उपयोग पर ज्यादा जोर देते हैं (मत्ती 7:24)।

2. करके दिखाने के द्वारा सिखाना और तैयार करनाः व्यवहारिक रूप से दूसरों के सामने प्रदर्शित करें कि आप किस प्रकार से सेवकाई करते हैं और आपका आचरण और आत्मिक जीवन शैली लोगों के सामने दिखाई देना चाहिए / लोगों पर प्रगट हो। आपका मकसद यह होना चाहिए कि लोग आपको और आपके जीवन को देख सुनकर तैयार किए जाएँ और सशक्त बनें। जो प्रार्थना आप गुप्त में करते हैं उसे उनके सामने करके दिखाएँः किस प्रकार से आप अपने व्यक्तिगत पापों का अंगीकार करते और उन पापों का सामना करते और जयवंत होते हैं; किस प्रकार बीमारों की चंगाई के लिए प्रार्थना करते हैं; पवित्र आत्मा की आवाज को आप कैसे सुनते हैं; वचन में से सुसमाचार संदेश आप कैसे तैयार करते हैं, आदि सब उनके सामने करके दिखाएँ ताकि वे सीख सकें। आपके आत्मिक जीवन का हर हिस्सा, व्यक्तिगत और सार्वजनिक उनके सामने प्रदर्शित होना चाहिए ताकि वे इन बातों को अपने अंदर ले लें / उतार लें। जब भी आप सेवकाई के लिए तैयार और प्रशिक्षित कर रहे हैं उन्हें अपने साथ रखें और याद रहें ऐसा करने के दौरान आप उन्हें भी सेवकाई की बहुत सी बातें व्यवहारिक रूप से सिखा रहे हों। यीशु तीन वर्ष तक लगातार दिन–रात अपने जीवन और सेवकाई के द्वारा अपने चेलों को तैयार करते और सिखाते रहे उन्होंने कोई भी मौका अपने चेलों को सीख और शिक्षा देने का हाथ से नहीं जाने दिया।

3. <u>उन्हें अभ्यास (practice) कराने के लिए उन्हें सम्मिलित करें और मौका दें</u>: उन्हें प्रार्थना करने, सुसमाचार सुनाने और सेवकाई करने के बहुत से मौके प्रदान करते रहें, जिससे कि वे उन्नति करें और तैयार हो सकें। बहुत सी बातें यदि आप उनके सामने करके उन्हें दिखा चुके हैं तो इसका मतलब वे तैयार हो चुके हैं और आप उन्हें भी सेवकाई में अपना भागीदार अब बना सकते हैं। उन्हें आप अपने साथ सेवकाई के कार्य में सम्मिलित करें।

4. <u>उनके करने के लिए कार्य ठहराए और उस कार्य को करने के लिए उन्हें भेजें</u>: मत्ती 4:18 में हम पाते हैं कि यीशु ने अपने प्रथम शिष्यों को अपने पास बुलाया/इकट्ठा किया। मत्ती 10:1,5 में हम पाते हैं कि यीशु ने उन्हें आज्ञा देकर विभिन्न गाँवों और नगरों में प्रथम बार अकेले (यीशु के बिना) प्रचार करने और सेवकाई करने के लिए भेजा। यीशु ने क्रूस पर चढ़ायें जाने और स्वर्गरोहण से पहिले सिर्फ तीन वर्ष तक ही सेवकाई की। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यीशु ने अपने इन चेलों को कम से कम चार महीने और ज्यादा से ज्यादा नौ महीने तक गहन प्रशिक्षण दिया होगा निरंतर अपने साथ रखकर और दिखाकर। यीशु हमसे आज्ञाकारिता चाहता है; वह चाहता है कि हम सीखें और आगे बढ़ते जाएँ। विश्वास का कदम आगे बढ़ाने से न हिचकिचाएँ और न रुकें और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें। यीशु ने अपने अन्य चेलों को भी भेजा – सत्तर और चेले – कि वे सुसमाचर सुनायें, बीमारों को चंगा करें और दुष्ट आत्माओं को निकालें। ये सत्तर यीशु के मुख्य बारह चेलों से अलग थे (लूका 10:1) । यीशु को समय–समय पर लगातार इन चेलों में सुधार करना पड़ा, परंतु यीशु की प्राथमिकता में आज्ञाकारिता पूर्णसिद्धता (perfection) और परिपक्वता (maturity) से ज्यादा अहम थी।

<u>अंतिम विचार</u>:

चाहें आप अपने बारे में कैसी भी राय क्यों न रखते हों, चाहे आपने जो भी किया हो या ना भी किया हो, और चाहे आप यीशु की आज्ञा मानने में कितना भी संघर्ष क्यों न करते हो, लेकिन फिर भी आप मसीह की देह हैं। मसीह का अर्थ है 'अभिषित्त'। यदि आप उसकी देह हैं तो आप भी 'अभिषित्त' हैं। और उसका अभिषेक और वरदान महज कुछ लोगों के लिए ही नहीं परंतु आपके लिए भी उपलब्ध है।

आप कहाँ रहते हैं किस भाषा को बोलते हैं, और आपका प्रभाव का क्षेत्र क्या है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आपका रहने का स्थान, भाषा या प्रभाव क्षेत्र अलग–अलग जरूर हो सकता है परंतु परमेश्वर के शब्द आज आपके लिए यही है, "मेरे बेटे, जो कुछ मेरा है, सब तेरा और तेरे लिए उपलब्ध है।" आप बुलाए गए हैं, आप चुने हुए हैं। आप अभिषिक्त हैं।

जरुरत सिर्फ यह है कि आप विश्वास करें कि आप बुलाए गए, चुने गए एवं अभिषिक्त हैं। पाँच प्रकार की सेवकाई परमेश्वर ने आपके लिए ठहरायी है और वह आपको इसे करने के लिए निमंत्रण दे रहा है एवं बुला रहा है। पाँच प्रकार की सेवकाई के अनुग्रह से हर एक विश्वासी भर जाए व तैयार हो जाए चरवाहे (pastor) के रूप में चरवाही और पालन पोषण करे, सिखाने वाले उपदेशक (teacher) के रूप में प्रशिक्षण दे और संवारे और तैयार करे, सुसमाचार सुनने वाले (evangelist) के रूप में भटके और खोए हुओं तक पहुँचे, भविष्यवाणी के द्वारा पवित्र आत्मा के कार्य को प्रदर्शित करे और प्रेरित (apostle) के रूप में परमेश्वर के राज्य के प्रभाव को और बदलाव को अपने समाज और संस्कृति में ले आए।

वह दिन तेजी से आ रहा है जब कोई भी यह ना कहेगा कि "मैं खोए हुए और भटके हुए लोगों तक इसलिए नहीं पहुँच सकता क्योंकि मैं एक सुसमाचार प्रचार (evangelist) नहीं हूँ और मैं भविष्यवाणी नहीं कर सकता और बीमारों को चंगा नहीं कर सकता क्येंकि मैं एक अभिषिक्त भविष्यद्वक्ता नहीं हूँ।" अनुग्रह का सुसमाचार सेवकाई क्षेत्र (ministry field) को समतल बनाता है, और परमेश्वर अपनी देह को यीशु के द्वितीय आगमन से पहिले एक ऐसी महानतम बेदारी के लिए उठा रहा (तैयार कर रहा) है जैसी कि अभी तक इस संसार ने नहीं देखी है।

समूह में अथवा व्यक्तिगत रूप में मनन करने के लिए व्यवहारिक प्रश्नः

पाँच प्रकार की सेवकाई वाले सेवकों के लिएः

1. क्या आप अपनी सेवकाई की शैली / तरीकों के द्वारा विश्वासियों को प्रेरित और तैयार कर पाते हैं कि वे आपके स्तर तक सेवकाई में पहुँच सकें या फिर आपकी सेवकाई की शैली / तरीकों और उनकी क्षमता/काबिलियत के बीच में जो अंतर (gap) है उन्हें हतोत्साहित करता है?

2. क्या आप मानते और विश्वास करते हैं की आपका उद्देश्य और आपकी बुलाहट दूसरों को सेवकाई के लिए तैयार करने की है? यदि नहीं, तो कारण बताएँ।

3. क्या आपने अधिक समय और ऊर्जा का निवेश सिर्फ अपने वरदानों को बढ़ाने में किया है या फिर अपने वरदानों को दूसरों को दिया या बाँटा है?

4. क्या आप अपनी बुलाहट या वरदानों का दूसरों में निवेश कर रहे हैं? किस प्रकार से आप अपने समय और कुशलता व क्षमता का उपयोग इस प्रकार से कर सकते हैं कि आप स्वयं अपने वरदानों के साथ प्रभु के लिए इस्तेमाल हो और साथ ही साथ मसीह की देह व कलीसिया व विश्वासियों को भी तैयार कर सकें / सशक्त बना सकें?

5. क्या आपके जीवन में चेलों की कड़ी (chain) है? ध्यान दें: क्या आपके पास पौलुस है गुरु के रूप में जो आपको तैयार करता है एवं सिखाता है? क्या आपके पास जीवन में कोई तीमुथियुस है चेले के रूप में जिसे आप तैयार कर रहे हैं ? क्या आपने अपने तीमुथियुस (चेलों) को कोई निर्देश दिया है कि वे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सिखाए / तैयार करें?

6. अपने वरदानों के साथ प्रभु के लिए इस्तेमाल होना दूसरों को तैयार और सशक्त बनाने / प्रशिक्षित करने से कहीं ज्यादा आसान है क्योंकि दूसरों को तैयार करने के लिए जरुरत होती है अधिक प्रेम दिखाने की, दर्शन, धीरज एवं सहनशीलता की। आप दूसरों में निवेश करने और उन्हें तैयार करने में अपने आप को कैसे जवाबदेह बना सकते हैं? हम दूसरों को सेवकाई के लिए कैसे तैयार करें? यीशु से हम दूसरों को तैयार करने के बारे में क्या सीख सकते हैं?

7. पिछली बार ऐसा कब हुआ जब कि आपने सेवकाई के अवसर को छोड़कर / त्यागकर उस समय का इस्तेमाल अपने किसी चेले को तैयार करने में किया?

8. क्या आप कभी स्वयं की सेवा करने, स्वयं को बढ़ाने / ऊँचा उठाने और स्वार्थीमहत्वकांक्षा के जाल में फँसे हैं / शिकार हुए हैं? यदि हाँ, तो बतायें कि किस प्रकार से अपने वरदान

को चमकाना और बढ़ाना आपके लिए फंदा साबित हुआ हैं और ऐसा करने के दौरान आप स्वयं का हित साधने वाले साबित हुए?

साधारण विश्वासियों के लिए सवाल

1. इस अध्याय को पढ़ने से पहिले क्या आपने देखा और जाना था कि पाँच प्रकार की सेवकाई की बुलाहट और वरदान आपको भी प्राप्त हो सकते हैं? क्या आपने पहिले कभी सोचा था कि पाँच प्रकार की सेवकाई का आत्मिक स्तर आपकी पहुँच में है और आपके अंदर क्षमता है कि आप पाँच प्रकार की सेवकाई को अंजाम दे सकें?

2. कौन–सी वे आत्मिक बातें हैं जो आपको पाँच प्रकार की सेवकाई के अभिषेक और वरदानों के योग्य ठहराती हैं? क्या आपके अंदर वर्तमान में वह खूबी / योग्यता है?

3. क्या आपके पास ऐसा अगुवा है जो कि आपके जीवन में निवेश करने में लगा हो ताकि आपको पाँच प्रकार की सेवकाई के लिए तैयार और प्रशिक्षित कर सके? यदि नहीं तो क्या आपने किसी अगुवे को खोजा हैं जो कि आपको सिखा सके? आप आत्मिक उन्नति और सेवकाई करने के लिए किस प्रकार व्यवहारिक रूप से अपने आप को समर्पित कर सकते हैं कि आप पाँच प्रकार की सेवकाई के लिए प्रशिक्षित एवं तैयार किए जा सकें?

4. क्या आप अपने आपको अभिषिक्त मानते हैं? आप कौन–सा आत्मिक मूल्यांकन करते हैं यह जानने के लिए कि आप अभिषिक्त है अथवा नहीं?

5. क्या आप परमेश्वर के अभिषेक और वरदानों की भूख, प्यास और चाहत रखते हैं? यीशु मसीह का अनुसरण करने के दौरान क्या आप अपने आपको आत्मिक रूप से जीवित देखते व पाते है अथवा आप अपने आपको आत्मिक रूप से मृत देखते / पाते हैं? कौन–सी ऐसी चीज है जो कि आपको सेवकाई के लिए तैयार अथवा प्रशिक्षित होने और सशक्त बनने से रोकती है?

6. आप कुछ समय के लिए अपने आपको तीमुथियुस मान लें। क्या आपके पास आपके जीवन में कोई पौलुस सरीखा मनुष्य है? क्या आप विश्वासयोग्य स्त्री और पुरुषों में भी निवेश कर रहे हैं? ध्यान दे आप किस को अपना पौलुस बना सकते हैं और तैयार होने वालों की कड़ी में कौन वे विश्वासयोग्य स्त्री और पुरुष हो सकते है जिन्हें आप तैयार करेंगे।

2

आपकी मज़बूत बुनियाद

<u>एक ऐसा मॉडल/प्रारूप जिसका अंत पूरी तरह से हो चुका है</u>

पुराने नियम के दिनो में हम पाते हैं कि पवित्र आत्मा – अभिषेक किसी विशेष उद्देश्य और मकसद को पूरा करने के लिए परमेश्वर के कुछ चुने हुए लोगों पर आता / उतरता था। पवित्र आत्मा प्रायः याजकों, भविष्यदक्ताओं और राजाओं पर ही उतरता था और यही लोग पवित्र आत्मा से भरकर इस्तेमाल होते थे। पवित्र आत्मा के इस पाक अभिषेक से भरकर इस्तेमाल होने का सौभाग्य अन्य किसी को प्राप्त नहीं हो पाता था। परमेश्वर के अभिषिक्त लोगों और साधारण यहूदियों के बीच जो अंतर (gap) था वह बहुत बड़ा था। परमेश्वर के लोगों का पूरा देश उस अनुग्रह पर निर्भर रहता था जो कि कुछ गिने – चुने विशेष लोगों पर बना रहता था। हालाँकि समय बदल गया है और अब हम एक नयी वाचा के नीचे अधीन हैं परंतु फिर भी ज्यादातर कलीसिया अभी भी पुराने नियम की मानसिकता की गिरफ्त में है जो कि यह आदेश देती है कि अभिषेक – चमत्कार और आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ्य, बीमारों को चंगा करना और दुष्ट आत्माओं को निकालना आदि सिर्फ गिने चुने, परिपक्व और विशेष सेवक ही कर सकते हैं। जब तक हम मन ना फिराएँ और सुसमाचार पर विश्वास ना करें (मरकुस 1:15) और वाचा की नयी दाखरस को नयी मशकों में ना भरें (मरकुस 2:21–22), तब तक हम पुरानी वाचा की इन बंदिशों में ही जीवन जीते रहेंगे।

आइए, सबसे पहिले हम इस बड़े अंतर को यिर्मयाह 31:31–34 में पढ़ें और फिर हम नीचे बने चार्ट को देखेंगे।

"फिर यहोवा की यह भी वाणी हैः सुन ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्त्राएल और यहूदा के घराने से नयी वाचा बाँधूँगा। वह उस वाचा के समान नहीं होगी जो मैंने उसके पुर्खाओं से उस समय बांधी थी... परंतु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्त्राएल के घराने से बाँधूँगा वह यह है कि मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा। तब उन्हें एक दूसरे से यह ना कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि यहोवा यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।"

पुरानी वाचा	नयी वाचा
भविश्यद्वक्ता, याजक और राजा परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थ (mediator) थे। परमेश्वर के लोगों को निर्देश दिया जाता था परमेश्वर कि अगुवाई (दिशानिर्देश) सामर्थ्य और छुटकारे के लिए वे भविष्यदवक्ता, याजक और राजाओं पर आस लगाए।	मनुष्य और परमेश्वर के मध्य यीशु मसीह ही केवल एकमात्र (अकेला) मध्यस्थ अथवा बिचवई है। हम परमेश्वर के दिशानिर्देशन, सामर्थ्य और छुटकारे के लिए सीधे–सीधे परमेश्वर की ओर देख सकते हैं।
परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ताओं (नबियों) से बात करता था और उनके द्वारा अपना संदेश अपने लोगों तक पहुँचता था।	परमेश्वर सभी विश्वासियों से बात करता है और सभी विश्वासियों के द्वारा भी बात करता है।
परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के सेवक और दासी के रूप में पहिचाना जाता था।	परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रूप में जाना जाता है।
परमेश्वर की आत्मा कुछ गिने चुने लोगों पर विशेष मकसद के लिए उतरती थी।	परमेश्वर की आत्मा सभी विश्वासियों के भीतर वास करती है और उसका एक ही विश्वव्यापी कार्य है।
आप अभिषिक्त थे या नहीं यह आपकी बुलाहट से पता चलता था।	अभिषेक सभी विश्वासियों के अंदर बना रहता है (1 यूहन्ना 2:20,27)।
भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा आबादी का बहुत छोटा हिस्सा थे (तादाद में बहुत कम होते थे यह एक बहुत ही सौभाग्यशाली पद था जिसे कोई भी अपनी इच्छा से नहीं चुन सकता था।	सभी विश्वासी याजक और राजा हैं (प्रकाशितवाक्य 5:10) जिन पर अनुग्रह हुआ है की इस जीवन में बीमारी और दुष्ट आत्माओं पर राज्य करें (रोमियो 5:17)। सभी विश्वासियों पर अनुग्रह हुआ है की वे भविष्यद्वाणी कर सकें (1 कुरिन्थियों 14:31; 1 पतरस 4:11)।
सिर्फ भविष्यद्वक्ता (नबी) ही वे चुने हुए पात्र थे जिनके द्वारा परमेश्वर चमत्कार और आश्चर्यकर्म प्रगट करता था।	सभी विश्वासियों को बड़े – बड़े काम (चमत्कार और आश्चर्यकर्म) प्रगट करने का अधिकार और सामर्थ्य प्राप्त है, जैसे कि बीमारों को चंगा करना, दुष्टआत्माओं को निकालना, आदि (मरकुस 16:17–18)।

हमें पुराने नियम के किसी भविष्यद्वक्ता (नबी) की बुलाहट और अभिषेक का लालच / लालसा नहीं करना चाहिए, हमें मूसा, दाऊद और एलियाह के समान सेवकाई करने की चाह या कोशिश नहीं करनी चाहिए। आज बहुत से लोग एलिय्याह के दोगुने अभिषेक के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। मित्रों, हम नयी वाचा के विश्वासी हैं और हमें उन सबसे अधिक बड़ा सौभाग्य और पद मिला है (मत्ती 11:11)। हम एक अद्भुत मिश्रण हैं भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा भी हैं। हमें चाह होनी चाहिए सिर्फ यीशु के समान बनने की और हमें यीशु के समान बनने की कोशिश करनी चाहिए। अर्थात् उसके अभिषेक और आत्मा से चलना, उसका–सा चरित्र होना और उसके समान ही हमें सेवा करनी चाहिए।

यदि पाँच प्रकार की सेवकाई में से कोई भी एक सेवकाई आप कर रहे हैं तो इसका मतलब यह नहीं है की आपको भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा का विशेष पद मिल गया है, क्योंकि यह सौभाग्य और पदवी तो हमें यीशु पर विश्वास करने से प्राप्त होती है। पाँच प्रकार की सेवकाई को कलीसिया के लिए परमेश्वर ने इसलिए बनाया / रचा है ताकि हर एक विश वासी के अंदर परमेश्वर ने जो अभिषेक दिया है उस अभिषेक का इस्तेमाल दूसरों को तैयार और प्रशिक्षित करने के लिए किया जाए, वह अभिषेक पाँच प्रकार की सेवकाई करने के द्वारा इस्तेमाल हो एवं बाहर आ सके। हर एक विश्वासी परमेश्वर के अनुग्रह और वरदानों के साथ इस्तेमाल हो सकता है। ये वरदान और अनुग्रह एक बीज के समान ही एक विश्वासी के अंदर पाया जाता है और पाँच प्रकार की सेवकाई के द्वारा ये वरदान जो कि अंदर पाए जाते हैं, उभर कर सामने आते और प्रगट होते हैं। दोस्तों, पवित्र आत्मा सबसे महान अभिषेक और वरदान है वह आपके अंदर मौजूद है।

एक बात मैं साफ कर देना चाहता हूँ। जैसा कि मैंने आपको बताया था कि हर एक विश्वासी एक भविष्यद्वक्ता (नबी) भी है, हालाँकि हम यहाँ पाँच प्रकार की सेवाकाई में भविष्यद्व क्ता (नबी) के पद, बुलाहट और सेवकाई को एक अलग सेवकाई के रूप में देखते हैं। ध्यान दें, पाँच प्रकार की सेवकाई में से भविष्यद्वक्ता (नबी) की सेवकाई करने वाला अकेला ही ऐसा नहीं है कि भविष्यवाणी / नबुवत कर सकें परंतु पौलुस सभी विश्वासियों को उभारते हैं कि सभी विश्वासी भविष्यवाणी करने की धुन में लगे रहे (1 कुरिन्थियों 14:1, 39) क्योंकि सभी भविष्यवाणी करने का अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं अर्थात् सभी भविष्यवाणी कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 14:31)। नयी वाचा का भविष्यद्वक्ता परमेश्वर की आवाज को सुनने के लिए अपने कान को लगाए ताकि परमेश्वर जो कहता है उस बात को वह कलीसिया को सिखा सके और कलीसिया को परमेश्वर की आवाज को सुनने के लिए प्रशिक्षित / तैयार करे, और कलीसिया को यह भी सिखाए कि परमेश्वर की आवाज को कैसे पहिचाना जाता है, भविष्यवाणी को कैसे परखा जाता है और उन्हें भविष्यवाणी करने के लिए तैयार करे। हर एक विश्वासी के पास भविष्यद्वक्ता के रूप में सेवकाई करने की क्षमता / काबिलियत / योग्यता होती है। सबसे

पहिले भविष्यद्वक्ता लोगों को तैयार एवं प्रशिक्षित करे, फिर कलीसिया नबुवत अर्थात् भविष्यवाणी की सेवकाई करे। यदि कलीसिया में ऐसा भविष्यद्वक्ता है जो कि केवल खुद भविष्यवाणी करता है, तो इसका मतलब यह है कि वह अपनी बुलाहट को पूरा नहीं कर रहा है।

विश्वासी के पद (पदवी) और कार्य की परिभाषाः

आइए, विश्वासी की परिभाषा समझते हैं। साधारण शब्दों में, विश्वासी वह होता है जो कि यीशु के विश्वास में आज्ञाकारी और वफादार (विश्वासयोग्य) होता है। जबकि चेला एक वफादार विश्वासी होता है जो कि बड़ी ही निष्ठा / वफादारी से अपने विश्वास के प्रति प्रतिबद्ध होता है और पालन करता है। और उसके अनुसार कार्य करता/जीवन बिताता है। वफादार विश्वासी (चेला) ही वह योग्यता है जिसे पौलुस खोजता है, ताकि दूसरों को तैयार एवं प्रशिक्षित किया जा सके।

"और जो बातें तूने ने बहुत से गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं उन्हें विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौप दे, जो दूसरो को भी सिखाने के योग्य हों।" (2 तीमुथियुस 2:2)

वे कौन–सी बातें हैं जिनके विषय में पौलुस तीमुथियुस से कह रहा है तू (तीमुथियुस) ने मुझसे (पौलुस) से सुनी हैं? यदि इन बातों को पौलुस तुरन्त दूसरों को सौपने के लिए तीमुथियुस से कह रहा है तो निश्चय ही ये बातें बहुत महत्त्वपूर्ण होंगी। हमें यह समझना जरूरी है कि प्रेरित पौलुस की शिक्षा बिना सामर्थ्य, चमत्कारों और बिना पवित्र आत्मा के प्रगटीकरण के नहीं थीं। पौलुस ने जो बातें विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौपने का निर्देश तीमुथियुस को दिया है, वे बातें महज कोई साधारण शिक्षा नहीं है परन्तु सामर्थ्य के साथ अपनी अभिव्यक्ति करने वाला सुसमाचार है। प्रेरित पौलुस का यह विश्वास था कि यह सामर्थ्य के साथ प्रगट होने वाला एक सुसमाचार पौलुस में से तीमुथियुस में हस्तांतरित होगा/जायेगा और तीमुथियुस से विश्वासयोग्य मनुष्यों में हस्तांतरित होगा और उन विश्वासयोग्य मनुष्यों में से अन्य लोगों तक हस्तांतरित होगा।

निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें:

"और मेरे वचन और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभावनी बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।" (1 कुरिन्थियों 2:4–5)

"क्योंकि मैं सुमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ्य है।" (रोमियों 1:16)

"क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही मे वरन् सामर्थ्य और पवित्र आत्मा में, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है। (1 थिस्सलुनीकियों 1:5)

इस पुस्तक मे मैं खास तौर से उन तीन सेवकाई पर आपका ध्यान केन्द्रित कराना चाहता हूँ जो कि अधिकतर समय यीशु, उनके चेले और प्रेरित जन किया करते थे : सुसमाचार प्रचार करना, बीमारों को चंगा करना और दुष्ट–आत्माओं को निकालना। सुसमाचार प्रचार करना, बीमारों को चंगा करना और दुष्ट–आत्माओं को निकालने का आदेश/आज्ञा सभी चेलों और विश्वासियों को दिया गया है। यह बहुत जरूरी है कि आप इसके प्रति पूरी तरह से आश्वस्त हो जाये, वचन में यह बातें साफ–साफ लिखी हैं, कहीं ऐसा न हो कि शैतान इस बात पर विश्वास करने से आपको रोककर आपकी और दूसरों की क्षमता/कबिलियत को इस काम को करने से रोकने में सफल हो जाये। आपके अंदर इन तीन कार्यों/सेवकाई को करने की क्षमता/योग्यता जो परमेश्वर ने दी है उसे इस्तेमाल करने से शैतान आपको रोकने न पाये। इस स्थान को चिन्हित कर लीजिये, वचन के इन पदों का मनन करते रहें, लिख कर इन पदों को घर में किसी मुख्य स्थान पर रख लें या चिपका दें ताकि आप उसे पढ़कर उस क्षमता/काबिलियत की घोषणा बार–बार कर सकें जो परमेश्वर ने सुसमाचार प्रचार, बीमारों की चंगाई और दुष्ट–आत्माओं को निकालने के लिये आपको दी है।

"फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें... और चलते–चलते यह प्रचार करो : स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्ट–आत्माओं को निकालो...। (मत्ती 10:1, 7–8)

"इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और... उन्हें यह कहकर भेजा, 'जिस नगर में जाओ... वहाँ के बीमारों को चंगा करो और उन से कहो, 'परमेष्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।'... वे सत्तर आनन्द करते हुए लौटे और कहने लगे, 'हे प्रभु तेरे नाम से दुष्ट आत्मा भी हमारे वश में है।'... और उस ने उन से कहा, 'देखों मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है, और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।" (लूका 10:1, 7–8, 17–19)

"और उसने उन से कहा, 'तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो... विश्वास करने वालों में से चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को निकालेंगे... वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाऐंगे।" (मरकुस 16:15, 17–18)

"मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़' और अपने मन में संदेह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिये वहीं होगा।" (मरकुस 11:23)

"जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।' उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा..." (यूहन्ना 7:38–39)

"मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।" (यूहन्ना 14:12)

"यीशू नें उससे कहा, 'विश्वास करने वालों के लिये सब कुछ हो सकता है।" (मरकुस 9:23)

अक्सर लोग सोचते हैं कि सुसमाचार प्रचार करने के लिये, बीमारों को चंगा करने के लिये और दुष्ट–आत्मओं को निकलने के लिये एक विशेष बुलाहट होती है। परन्तु यह सत्य नहीं है, हर एक विश्वासी के लिये परमेश्वर ने यह तीनों कार्य और सेवकाई ठहराई हैं। यह अनुग्रह, सामर्थ्य और पवित्र आदेश हर एक उस विश्वासी को दिया गया है कि जो यीशु मसीह के समान बनने की इच्छा और चाहत रखता है। सुसमाचार प्रचार करने, बीमारों को चंगा करने और दुष्ट–आत्माओं को निकालने के लिये किसी प्रकार के धर्मविज्ञान की उपाधि/डिग्री (Theological Degree), भविष्यवाणी (नबूवत) के वचन या फिर किसी विशेष सुसमाचारीय अभिषेक की कोई जरुरत नहीं होती है। आपको महज यीशु पर विश्वास रखने की जरुरत होती है।

ऐसी गवाहियाँ जिन्हें नकारा नहीं जा सकता

मेरी साली का नाम आराधना है, और गरमियों की छुट्टियों के दौरान हमने उन्हें अपनी उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में होने जा रही सभाओं में आमंत्रित किया। उसके अंदर प्रभु

और प्रभु की बातों की भूख पाई जाती थी और प्राय जब वह हमारी सभाओं में आती थी तो वह प्रभु के आत्मा के चालन और चमत्कारों को प्रगट होते हुए देखती थी। उसने लगातार मुझे यह कहते और लोगों को सिखाते हुए सुना कि सभी विश्वासियों को प्रभु ने सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार करने के लिये बुलाया है और प्रभु सभी विश्वासियों के लिये यह इच्छा रखता है कि वे इस कार्य के लिये तैयार किये जाये। इन बातों से वह प्रोत्साहित हुई और थोड़े से समय में ही वह क्षमता/काबिलियत (वरदान) जो प्रभु ने उसके अंदर दी थी, वह खुलकर सामने आने लगी।

आराधना एक प्राथमिक विद्यालय में टीचर है। जब विद्यालय का नया सत्र (session) शुरू हुआ तो उस में नये छात्रों ने दाखिला लिया। आराधना ने ध्यानपूर्वक देखा तो उसे पता चला कि कई बच्चे इन नये दाखिला पाए बच्चों का मजाक उड़ा रहे हैं, और उन्हें परेशान कर रहे हें। उसने उन बच्चों से पूछा कि तुम इस नये दाखिला लिये हुए बच्चे का क्यों मजाक उड़ा रहे हो और उस पर क्यों हँस रहे हो? तो उन कुछ बच्चों ने उत्तर दिया कि यह लड़का बेवकूफ है और इसकी समझ में कुछ भी नहीं आता है। इसके बाद आराधना को दिखाई दिया कि उस बच्चे के कान में श्रवण यंत्र अर्थात् कान की मशीन (hearing aids) लगी हुई है। उस बच्चे से बात करने पर पता चला कि उसे बिल्कुल सुनाई नहीं देता है और कान की मशीन लगाने पर भी उसे कुछ ज्यादा फायदा नहीं होता है और वह बहुत कम सुन पाता है। आराधना ने क्लास के सब बच्चों को शान्त/चुप कराया और फिर उन सब से कहा कि वह उस बच्चे के लिये यीशु के नाम से प्रार्थना करेगी। आराधना ने जैसा मुझे कई बार करते देखा था ठीक उसी तरह से उस बच्चे के कान पर अपने हाथ को रखा और उसके लिये प्रार्थना की। उस लड़के के कान तुरन्त खुल गये और उसे सब कुछ साफ–साफ सुनाई देने लगा। सभी छात्र चकित रह गये। क्लास खत्म होने के बाद आराधना ने उस लड़के के बड़े भाई से जो कि उसी विद्यालय में पढ़ता था, बात करी। बड़े भाई ने बताया कि उसका छोटा भाई पूरी तरह से बहरा था। बड़ा भाई भी उस चमत्कार को देखकर चकित रह गया और उसने आराधना से निवेदन किया कि वह उसके लिये भी प्रार्थना करे क्योंकि वह पढ़ाई ठीक से नहीं कर पाता है, उसकी समझ में कुछ नहीं आ पाता है और वह अपनी क्लास में सब बच्चों से पढ़ाई में पीछे है। अतः आराधना ने उसके लिये भी प्रार्थना की।

जब बच्चे स्कूल के बाद घरों पर लौटे और घर पर माता–पिता ने उन से पूछा कि आज का दिन स्कूल में तुम्हारा कैसा रहा तो अधिकतर बच्चों ने कहा "आज का दिन अद्भुत था और आज हमने अजीब बात देखी। हमारी क्लास में एक लड़का बहरा था और टीचर ने उसके लिये प्रार्थना करी और वह लड़का तुरन्त चंगाई पाकर सुनने लगा।

कुछ माता–पिता अगले दिन उस लड़के को देखने जिसे चंगाई मिली थी, स्कूल पहुँचे। कुछ माता–पिता ने आराधना से निवेदन किया कि वह उनकी भी शारीरिक चंगाई के लिये प्रार्थना करे। जिस लड़के को चंगाई मिली थी, उसके बड़े भाई में भी तीन सप्ताह के भीतर बड़ा बदलाव/सुधार देखा गया और आगे वह अपनी क्लास का सबसे मेद्यावी और पढ़ाई में सबसे अच्छा छात्र बन गया।

चमत्कार करने वाली इस टीचर की खबर सारे गाँव और आसपास फैल गई एक पुरानी पारंपरिक कलीसिया (old traditional church) में आराधना को प्रचार करने के लिये आमंत्रित किया गया। इस कलीसिया में वे कभी महिलाओं को बोलने/प्रचार करने का अवसर/अनुमति नहीं देते थे, परन्तु वे उन अद्भुत गवाहियों को सुनने के इच्छुक थे। आराधना ने उस कलीसिया में ठीक उसी प्रकार से प्रचार और सेवकाई की जैसा कि उसे सिखाया गया था। प्रचार करना शुरू करने से पहिले परमेश्वर ने उसे कई ज्ञान के वचन दिये। पवित्र आत्मा ने उसे लोगों के नाम और उनकी विभिन्न अवस्था/समस्यायें भी बताईं। उसने थोड़ी हिचकिचाहट/संकोच के साथ उन बातों को और अवस्थाओं को बोला जो कि पवित्र आत्मा ने उस पर प्रगट की थी। एक व्यक्ति का नाम उसने बोला और कहा कि इस नाम के व्यक्ति को पेट की यह समस्या है और उसे सामने बुलाकर उसके लिये प्रार्थना करी। वह व्यक्ति जमीन पर गिर पड़ा और परमेश्वर की सामर्थ्य के नीचे बहुत जोर से काँपने लगा कि उसका चश्मा दूर जा गिरा। इसके तुरन्त बाद उसकी बीमारी के सभी लक्षण गायब हो गये और उसने गवाही दी। जब आराधना परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रही थी तो उसी व्यक्ति ने पढ़ने के लिये अपनी बाईबिल खोली, उस व्यक्ति को एहसास हुआ कि उसकी आँखों की रोशनी बढ़ गई है। उसने अपनी आँखों को जाँचा परखा और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि उसकी आँखें अब बिल्कुल ठीक हो चुकी हैं और वह बिना चश्मे के भी बाईबिल को साफ–साफ पढ़ सकता है।

कुछ महीनों के बाद जब हम एक अन्य गाँव में सभायें कर रहे थे, तब उन सभाओं में आराधना भी हमारे साथ जुड़ी। वहाँ पर सभा में एक 50 वर्ष से अधिक आयु की महिला थी जिन्हें स्तन कैंसर (breast cancer) था। इस से पहिले उस महिला के दूसरे स्तन में एक ट्यूमर हुआ था जिसे आपरेशन करके चिकित्सकों ने निकाल दिया था। अब उसके दूसरे स्तन में भी कैंसर फैल गया था। जैसे ही आराधना ने उस महिला के लिये प्रार्थना की, वह महिला पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के नीचे जमीन पर गिर गई। कुछ समय के बाद जब वह उठी तो ट्यूमर गायब हो चुका था।

उन सभाओं का लुफ्त उठाकर वह वापस अपने कार्य पर पहुँची। विद्यालय के एक कमरे की मरम्मत का कार्य चल रहा था। उस कमरे में रंग–रोगन/पेन्ट करने के लिये एक

पेन्टर भी आये हुए थे। चाय के अवकाश के समय आराधना ने उन पेन्टरों को चाय दी। उन में से एक पेन्टर किसी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं कर रहा था। उसके साथी पेन्टर ने आराधना को बताया कि वह तो जन्म से बहरा है। आराधना ने इशारों से बताया कि वह उसके लिये प्रार्थना करना चाहती है, और उसके लिये प्रार्थना करी। तुरन्त उस पेन्टर के कान खुल गये और वह सुनने लगा। सभी पेन्टर यह सब देखकर चकित रह गये। वे सभी मुसलमाने थे और जानना चाहते थे कि यह कैसे हुआ। आराधना ने उन्हें समझाया कि यह चमत्कार यीशु ने किया है और उन सभी को नया नियम दिया। वे सभी आदर में झुके और नये नियम की पुस्तकों को ग्रहण किया और उन्होंने यीशु के नाम की स्तुति और प्रशंसा की।

दोस्तों इन गवाहियों को पढ़ने के दौरान जो आपकी प्रतिक्रिया है उसे मैं बखूबी समझ सकता हूँ आप में से कुछ चकित हो रहे होंगे, कुछ असंमजस (confusion) में होंगे, कुछ उत्सुक एवं उत्साहित होंगे और कुछ संदेह कर रहे होंगे, लेकिन मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि ये घटनायें बिल्कुल सही एवं सत्य हैं और ये तो उन बहुत सी गवाहियों में से महज कुछ गिनी–चुनी गवाहियाँ हैं, आराधना के द्वारा प्रभु ने जो कार्य पिछले कुछ वर्षों में प्रगट किये उन में से ये थोड़े से चमत्कार हैं जिन्हें यहाँ बताया गया है। आराधना ने कभी यह नहीं सोचा था कि इस प्रकार से सेवकाई करने और प्रभु के लिये इस्तेमाल होने के लिये किसी विशेष/अनोखी बुलाहट और वरदान की जरुरत होती है क्योंकि यह पारंपरिक बात उसे नहीं सिखाई गयी थी। उसने तो महज यह विश्वास किया कि यह सब साधारण विश वासियों के लिये सामान्य सी बात है, और प्रभु के लिये सामर्थ्यी रूप से इस्तेमाल होने लगी।

जब भी मैं किसी जगह सेवकाई (ministry) करने के लिये जाता हूँ, किसी न किसी को अपने साथ लेकर जाता हूँ ताकि मैं उसे भी सिखा और दिखा सकूँ कि पवित्र आत्मा की अगुवाई में किस तरह से सुसमाचार प्रचार किया जा सकता है। हर एक विश्वासी परमेश्वर की महिमा के लिये इस्तेमाल हो सकता है क्योंकि पवित्र आत्मा सभी विश्वासियों के अंदर वास करता है। मेरे सबसे अच्छे दोस्तों में से एक गुंजन नाम का जवान है। वह बहुत जगहों पर मेरे साथ सेवकाई के दौरान रहा है। एक बार हम पंजाब में थे और खुले आसमान के नीचे एक मैदान में हमारी सभायें चल रही थीं। मैंने गुंजन का उत्साह बढ़ाया और उससे कहा कि वह पवित्र आत्मा की आवाज को सुने और विश्वास करे कि प्रभु उसे सामर्थ्यी रूप से चमत्कारों के द्वारा इस्तेमाल करेगा। गुंजन निश्चित रूप से चमत्कारों पर विश्वास करता था और उसने मेरे साथ विभिन्न स्थानों पर सेवकाई करने के दौरान बहुत से चमत्कारों को देखा था, परन्तु इस बात को लेकर वह आश्वस्त और निश्चित नहीं था।

मैंने उसके ऊपर हाथ रखा और विश्वास के साथ अनुग्रह का हस्तांतरण उस के ऊपर किया ताकि पवित्र आत्मा से उसे सामर्थ्य और वरदान प्राप्त हों। कुछ क्षणों में उसने एक दर्शन देखा और उस दर्शन में एक ऐसे बूढ़े व्यक्ति को देखा जो कि बाँई आँख से अंधा था और नहीं देख सकता था। बड़े उत्साह के साथ मैंने उस से कहा कि यह जो ज्ञान का वचन परमेश्वर ने उसे दिया है उसे वहाँ मौजूद लोगों को मंच पर से बताये। वह थोड़ा हिचकिचा रहा था और असमंजस में था कि क्या यह परमेश्वर की ओर से ही प्रगट हुआ है? दोस्तों, हमें लोगों को मौका देना चाहिये कि वे बिना किसी शर्म के और असफलता के भय के, विश्वास का एक कदम बढ़ायें। मैंने उसे मंच पर से इस बात को बताने के लिये मजबूर कर दिया और गुंजन ने वह ज्ञान का वचन लोगों को बताया जो परमेश्वर ने उस पर प्रगट किया था। भीड़ में पीछे खड़े एक बूढ़े व्यक्ति ने खड़े होकर कहा कि यह मेरी अवस्था के बारे में आप बोल रहे हैं। उसकी बाँई आँख से उसे दिखाई नहीं देता था। गुंजन आश्चर्य के साथ मेरी ओर मुड़कर मुझे देखने लगा। वह उत्साह और आश्चर्य से भरा दिखाई पड़ रहा था। वह मुझसे उम्मीद कर रहा था कि मैं जाकर उस व्यक्ति की चंगाई के लिये प्रार्थना करूँ, परन्तु मैंने उसे निर्देश दिया कि वह उस ज्ञान के वचन के अनुसार उस व्यक्ति के लिये चंगाई की घोषणा करते हुए उसके लिये प्रार्थना करे। गुंजन ने मेरे कहे अनुसार किया और कुछ ही क्षण में उस व्यक्ति की आँख खुल गई और वह साफ–साफ देखने लगा। यह सभा रात को हो रही थी जब सूरज पूरी तरह से डूब चुका था, परन्तु वहाँ उस कम रोशनी में भी वह बूढ़ा व्यक्ति बिल्कुल साफ–साफ देख पा रहा था। वहाँ मौजूद भीड़ आनन्दित होने लगी और बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया।

<u>पीपे का तल? (**Bottom of the Barrel**)</u>

जिस प्रकार की सेवकाई के बारे में मैंने आपको बताया कि ठीक उसके विपरीत/उलट कलीसिया ने इस प्रकार से सेवकाई करने का आदेश/अनुमति कुछ गिने–चुने लोगों को दे रखा है। और आत्मिक लाल–फीताशाही (spiritual red tape) कलीसिया में आ घुसी है जिसके बहुत से कठिन नियम और कानून है जो कि साधाराण विश्वासियों को प्रभु के लिये इस्तेमाल होने से रोकते और हतोत्साहित करते हैं। आज की दुनिया में 'विश्वासी' को तुच्छ समझा जाता है। आज की मसीही संस्कृति में विश्वासी का अर्थ है एक साधारण जन जिसको केवल यह प्रयास करना चाहिए कि कैसे वह स्वर्ग राज्य में प्रवेश करके अनन्त जीवन को प्राप्त कर ले। वह एक ऐसा जन है जो अभिषिक्त नहीं है, विशेष सेवकाई की बुलाहट वाले लोगों से वह अलग है, वह आत्मिकता के शुरुआती स्तर/पायदान पर समझा/माना जाता है और कलीसिया में मौजूद तो रहता है परन्तु कलीसिया में क्रियाशील

(active) नहीं रहता है। कुछ विशेषणों का इस्तेमाल कर के विश्वासी का सकारात्मक वर्णन कर दिया जाता है, जैसे कि 'आज्ञाकारी विश्वासी', 'उदार विश्वासी' (दान देनावाला विश्वासी) या फिर 'समर्पित विश्वासी'। यह एक मामूली सा परिचय बदलकर अधिक प्रभावशाली और महत्व वाला परिचय होना चाहिए और जैसे कि आराधना अगुवा (worship leader), प्रार्थना वाला सेवक (prayer minister), सलाहकार (counselor), उपशिक्षक या भेट कराने वाला (usher), डीकन (deacon), प्राचीन (elder), पास्टर (pastor), प्रचारक (preacher), आदि। क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि अगुवे (leaders) प्रायः अपने आप को महज विश्वासी कहकर कभी भी संबोधित नहीं करते हैं? दुनिया भर में मेरा जाना होता है और मैंने यह बात सभी जगह पर देखी है।

विशेष सौभाग्य और पदवीं

दोस्तों, मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि यह जो आधुनिक परिभाषा है, सर्वथा गलत है। विश्वासी होने का सौभाग्य सबसे महान सौभाग्य है और एक विश्वासी की पदवी सबसे ऊँची पदवी है जो कि कोई हासिल कर सकता है। यही हमारे परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ होने का मूल है और विश्वासी होने के आधार पर ही हमें सर्वशक्तिमान परमेश्वर का आत्मा विरासत में प्राप्त होता है। यह जो हमारा परिचय है, एक अनन्त परिचय है, और परमेश्वर के महानतम वायदे/प्रतिज्ञायें इसी परिचय के आधार पर हमें मिलती/हासिल होती हैं।

पाँच प्रकार की सेवकाई और आत्मिक वरदान अस्थायी हैं (1 कुरिन्थियों 13:8–10)। परन्तु विश्वासी और पुत्र/बेटा होने का अधिकार/हक अनन्त और स्थायी है। स्वर्ग में भविष्यद्वक्ताओं (नबियों), सुसमाचार प्रचारकों और पास्टरों की कोई जरुरत नहीं होगी, क्योंकि हम सब वहाँ पूर्णता/भरपूरी में चमकेंगे और अपने भले और प्रेम करने वाले पिता की मौजूदगी/उपस्थिति में उसके सिद्ध पुत्र और पुत्रियाँ होंगे।

नीचे दिये गये दोनों लेखाचित्रों (graphs) पर ध्यान दें और दोनों की तुलना करेंः

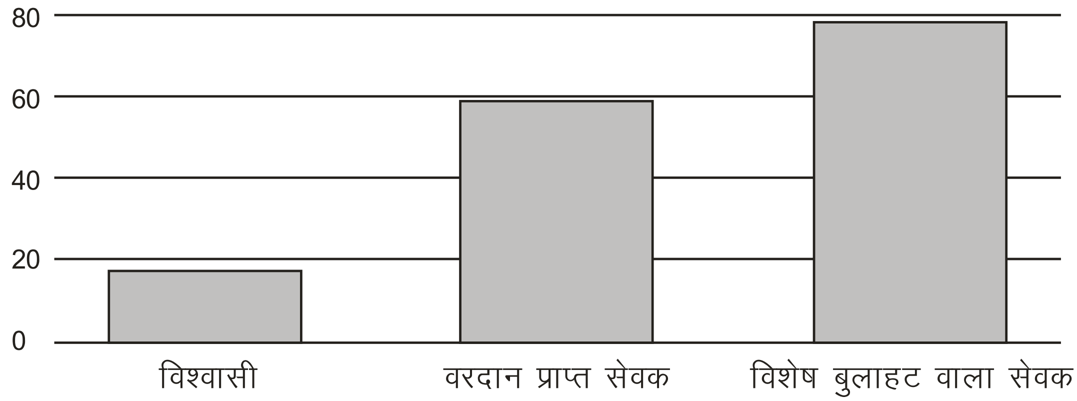

पहला चित्र—गलत सोच : यह कि विश्वासी बिल्कुल शुरुआती स्तर है, विश्वासी ज्यादा प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण नहीं होता है। वरदान प्राप्त सेवक का स्तर अधिक ऊँचा होता है और विशेष बुलाहट वाला सेवक उससे भी अधिक ऊँचा और महत्वूपर्ण होता है। यह गलत सोच कि जिसके पास विशेष वरदान और बुलाहट है अधिक महत्वपूर्ण है।

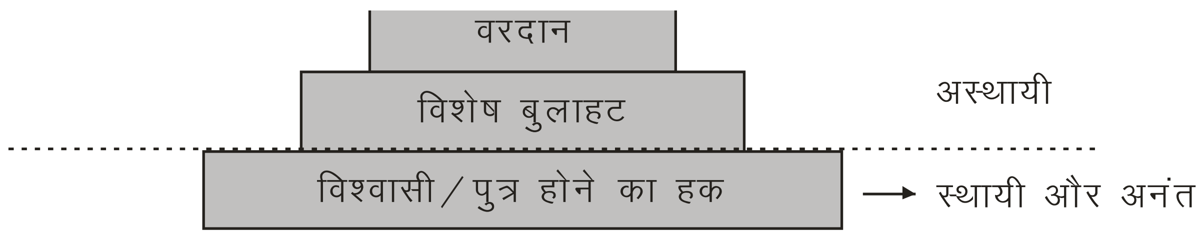

दूसरा चित्र – सच्चाई : विश्वासी होने के कारण हम मूल्यवान और प्रभावशाली हैं। हम इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि हम परमेष्वर के राज्य में पुत्र और पुत्रियाँ हैं। हमारे वरदान और बुलाहट इस नींव/बुनियाद पर निर्भर करती है। वह बुनियाद विश्वासी या पुत्र होना है और हम विश्वास और सुरक्षा में पुत्रत्व अर्थात् बेटापन में बढ़ते जाते हैं।

सुसमाचार प्रचार करने, बीमारों को चंगा करने और दुष्टआत्माओं को निकालने का जो आदेश आपको मिला है वह आदेश सभी मसीही विश्वासियों के लिये भी है। यह आदेश केवल पाँच प्रकार की सेवा करने वाले कुछ विशिष्ट लोगों तक सीमित नहीं है। पाँच प्रकार की सेवकाई करने वाले चाहे पास्टर हों, शिक्षक हों, प्रेरित, आदि कोई क्यों न हों, सभी को ये सब काम करने चाहिये क्योंकि आखिर बुनियादी तौर पर देखा जाये तो सभी सबसे पहिले 'विश्वासी' हैं। सुसमाचार प्रचारक को भी सुसमाचार प्रचारक करने का आदेश एक विश्वासी होने के कारण ही दिया गया है। एक सुसमाचार प्रचार का कार्य केवल इतना ही नहीं होता कि सुसमाचार प्रचार करे, परन्तु उसका कार्य और जिम्मेदारी यह भी होती है कि

वह लोगों को सिखाए एक नमूना बन कर दिखाए, लोगों को उभारे/प्रोत्साहित करे और उन्हें सुसमाचार प्रचार करने के लिये तैयार करे और सशक्त बनाये।

आत्मा के मन्दिर

विश्वासी बनने के कारण ही आपको एक महानतम् अनन्त पहचान मिलती हैः आप जीवित परमेश्वर के पुत्र और पुत्री बन जाते हैं। उस पर विश्वास करने के कारण आप उसके पुत्र/पुत्रियाँ (सन्तान) बन गये हैं।

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।" (यूहन्ना 1:12)

क्योंकि आप उसके बेटे/बेटी (सन्तान) हो उस कारण आपको सबसे महान खजाना – पवित्र आत्मा – मिला है।

"और तुम जो पुत्र हो इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा हे पिता' कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है।" (गलतियों 4:6)

हम उस अभिषेक पर जो कि किसी अगुवे पर पाया जाता है, बहुत जोर/महत्व देते हैं, परन्तु अक्सर उस अभिषेक के स्त्रोत पवित्र आत्मा को नजर अन्दाज कर देते हैं, जो कि हर एक विश्वासी के अंदर पाया जाता है। हम अपना ध्यान किसी भी मशहूर सेवक के वरदानों पर ज्यादा लगाते हैं, परन्तु उस वरदान को देने वाले पवित्र आत्मा को नजरअंदाज कर देते हैं जो कि सभी विश्वासियों के अंदर रहता/वास करता है। कुछ लोगों के लिये बाईबिल कॉलेज की धर्म–विज्ञान की उपाधि (theological degree) या फिर किसी बड़े भविष्यद्वक्ता (नबी) के द्वारा कहा गया नबूबत का वचन किसी को भी सेवकाई के लिये योग्य/उपयुक्त ठहराने के लिये ज्यादा महत्वपूर्ण होता है न कि यह बात कि पवित्र आत्मा हमारे अंदर वास करता है। यदि पवित्र आत्मा हमारे अंदर है तो हम निश्चित रूप से उस के कारण सेवकाई करने के योग्य ठहरते हैं न कि किसी धर्म–विज्ञान की उपाधि (degree) या फिर किसी नबी द्वारा की गयी भविष्यवाणी के कारण हम सेवकाई के लिये योग्य ठहरते हैं। हमने सबसे महान वरदान अर्थात् पवित्र आत्मा को सबसे कम महत्व दिया है और इस हकीकत को नजरअंदाज किया है कि पवित्र आत्मा जो सबसे महान वरदान और खजाना है, वह हमारे अंदर पाया जाता है। ऐसा करने के द्वारा शैतान ने हमें ६

ाोखा दिया है और हमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ्य/प्रभाव से वंचित किये रखा है।

यही वही पवित्र आत्मा है जो कि यीशु के द्वारा सामर्थ्यी रूप से कार्य करता था (लूका 4:18–19) और इसी आत्मा ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया (रोमियों 8:11)। वही आत्मा सभी विश्वासियों को इसलिये दिया गया है ताकि हम में से जीवन जल की नदियाँ बीमारों को चंगाई देने, दबे हुओं को छुटकारा देने और सभी राष्ट्रों (देशों) में परमेश्वर की सामर्थ्य को प्रगट करते हुए सुसमाचार प्रचार करने के लिये बह निकले (यूहन्ना 7:38–39; मरकुस 16:20; 1 थिस्सलुनीकियों 1:5; 1 कुरिन्थियों 2:4–5)।

दोस्तों, जब हम वरदान को वरदान देने वाले से अधिक महत्व देते हैं तो हम बहुत बड़ी भूल कर रहे होते हैं। वही हर प्रकार के अभिषेक का स्त्रोत है। जब उसकी उपस्थिति आपके अंदर पायी जाती है तो सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार करने के लिये आप सुसज्जित, सक्षम, योग्य और तैयार हैं। अब और किस चीज का इन्तजार है आपको?

मैंने हर एक विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के महत्व पर जोर दिया और ऐसा करने पर जो परिणाम देखने को मिले उनको देखकर मैं दंग रह गया कि जब पवित्र आत्मा को महत्व दिया गया तो पवित्र आत्मा ने अद्भुत रूप से उन्हें सामर्थ्यी और सशक्त बना कर इस्तेमाल किया। पंजाब के पूर्वी इलाके में एक गाँव में मेरा जाना हुआ। वहाँ सभाओं में लगभग दो सौ लोग इकट्ठा थे, जिनमें से ज्यादातर नये विश्वासी थे जो कि कुछ महिने पहिले ही प्रभु पर विश्वास लाये थे और उनमें से कुछ ऐसे थे जो कि कुछ साल पहिले ही प्रभु में आये थे। मैंने इसी संदेश के द्वारा उन्हें उभारा। पहिले मैंने उन्हें यह भरोसा दिलाया कि उनके अंदर पवित्र आत्मा वास करता है, और इस बात के प्रति आशवस्त करने के बाद मैंने जनसमूह/भीड़ में मौजूद बीमार, दुर्बल और अपाहिज/विकलांग लोगों से हाथ ऊपर उठाने को कहा और इन साधारण विश्वासियों के पास उन बीमार लोगों को अपनी चंगाई के लिए प्रार्थना कराने के लिये भेजा। इसके परिणाम चकित कर देने वाले थे। हर एक उस व्यक्ति ने चंगाई पाई जिसने अपने लिये प्रार्थना करायी थी। कई किशोर और युवा जो कि जन्म से बहरे थे, उन्हें तुरन्त चंगाई मिली और उन्हें तुरन्त सुनाई देने लगा। कई लोग जो बीमारी और दर्द से पीड़ित थे उन्हें बीमारी और दर्द से तुरन्त छुटकारा मिला। यह सब किसी विशेष अभिषिक्त भविष्यद्वक्ता (नबी), मशहूर प्रेरित या प्रचारक की प्रार्थनाओं से नहीं हुआ और ना ही मैं हर एक व्यक्ति के लिये व्यक्तिगत् रूप से प्रार्थना कर रहा था परन्तु यह सब परिणाम था साधारण विश्वासियों के द्वारा इस बात को जान लेने का कि यीशु मसीह में यदि वे हैं तो वे कितने महान हैं और यीशु ने उन सभी को महान और बड़े–बड़े काम करने के लिये चुना है।

जिन नये विश्वासियों को मैं प्रशिक्षण देता एवं तैयार करता हूँ, वे यदि ज्ञान के वचन को हासिल कर पाते हैं, भविष्यद्वाणी कर पाते हैं, बीमारों को चंगा कर पाते हैं और चमत्कार कर पाते हैं तो इस कारण क्योंकि वे पवित्र आत्मा के पात्र (बर्तन) हैं, और पवित्र आत्मा उनके अंदर वास करता है। मैंने ऐसे लोगों को लिया जिन्हें यीशु पर विश्वास लाये हुए महज दो हफ्ते ही बीते थे। और मैंने तुरन्त उन्हें सिखाना आरम्भ कर दिया कि पवित्र आत्मा की आवाज को कैसे सुना जाए और किस तरह से वे सामर्थी रूप से चिन्ह और चमत्कारों के साथ सेवकाई कर सकते हैं। धर्म कलीसिया को आगे बढ़ने से रोके हुए हैं और कलीसिया के आगे न बढ़ पाने का कारण वे अगुवे भी हैं जो कि कलीसिया की काबिलियत/ताकत/क्षमता को समझ पाने में असफल रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि हजारों हजार लोग पाप में नाश हो रहे हैं और बीमारियाँ और दुष्टआत्मायें लोगों को बेवजह सता रही हैं। दोस्तों, हमें कलीसिया को तैयार करने और सेवकाई के लिये सशक्त बनाने को ही अपना लक्ष्य और मकसद बना लेना चाहिए।

स्पष्टिकरण

जैसा कि मैंने बताया कि हर एक विश्वासी को पवित्र आत्मा ने स्वयं पूरी तरह से सेवकाई करने के लिये तैयार और सुसज्जित किया और सशक्त बनाया है, तो फिर क्या हर एक विश्वासी को चर्च इमारत (building) बनवा कर पारंपरिक तरीके से अपनी–अपनी सेवकाई (ministry) अलग–अलग शुरू कर देनी चाहिए? नहीं, ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। यदि हर एक विश्वासी बड़े जोश और लगन के साथ सुसमाचार प्रचार कर रहा होता और सामर्थ्य के साथ प्रार्थना कर रहा होता तो फिर alter call की स्थानीय कलीसिया में जरुरत ही नहीं पड़ती और न ही पास्टर को कोई अस्पताल जाना पड़ता। हर एक विश्वासी को तैयार और सशक्त बनाया जाना चाहिए उसके अपने प्रभाव के क्षेत्र में, जहाँ लोग उसकी सुनते हैं, अपने जान पहचान वालों के बीच और अपने कार्यस्थल में जहाँ वह अपने सहकर्मियों के बीच काम करता और समय बिताता है। जरा निम्नलिखित कार्यस्थल और प्रभाव के क्षेत्रों पर ध्यान देते हैं और वहाँ पर साधारण विश्वासी जन किन–किन लोगों तक सुसमाचार पहुँचा सकते हैं।

- नौसेना का कप्तान (navy captain)
- गायक (professional singer)
- घर पर रहने वाली बच्चों की माँ

● आयुक्त (commissioner)

● बावर्ची (restaurant cook)

● दूसरे देश में सेवा करने वाला सेवक (overseas missionary)

● अस्पताल की नर्स (hospital nurse)

● आई. टी. प्रोफैशनल (IT professional)

● बैंक कैशियर (bank cashier)

● रिटेल मैनेजर (retail manager)

1 कुरिन्थियों 12:12; 26 में पौलुस के द्वारा दी गयी शिक्षा की कुछ लोगों ने गलत ढंग से व्याख्या कर ली है और उस गलत व्याख्या के आधार पर वे समझते हैं कि कुछ लोगों को दूसरो से अधिक सामर्थ्यी/महान अभिषेक और वरदान प्राप्त हैं। मैं आपको साफ–साफ बता देना चाहता हूँ कि वचन के ये पद जो पौलुस की शिक्षा में है, किसी भी तरह से यहाँ इस पुस्तक में जो कुछ मैंने अभी तक सिखाया है, उसे किसी भी तरह से न खारिज करते हैं और न गलत ठहराते हैं। यहाँ इन पदों में प्रेरित पौलुस कह रहे हैं कि कुछ लोगों को उनके प्रभाव के क्षेत्र के कारण दूसरों से अधिक आदर/सम्मान मिलता दिखाई देता है। जो व्यक्ति जहाज का कप्तान है या जो विदेश में मिशनरी का कार्य कर रहा है उन्हें उनके प्रभाव के क्षेत्र के कारण (क्योंकि उनका प्रभाव का क्षेत्र ज्यादा बड़ा फैला हुआ और व्यापक है) उन्हें उस महिला से अधिक आदर और सम्मान मिलता दिखाई देगा जो कि घर पर रहकर अपने बच्चों की देखभाल करती है। लेकिन इसका मतलब यह कदाचित नहीं है कि घर पर रहकर बच्चों की देखभाल करने वाली महिला किसी भी मायने में कम अभिषिक्त है या फिर उसका अधिकार का क्षेत्र कम महत्वपूर्ण है। वह उन बच्चों पर अपना प्रभाव डाल रही है जो उसकी देखरेख में बड़े हो रहे हैं। कई जगहों पर विभिन्न परिवेशों में यह देखा गया है कि जो महिलायें घर पर ही रहकर घर का कामकाज करती हैं उन्होंने अपने प्रभाव का सही इस्तेमाल करते हुए राष्ट्रों/देशों को बदल दिया है या बदल रही हैं। जैसे कि मैंने शुरुआत में कलीसिया रोपण आंदोलन (church planting movement) जो कि इन दिनों ईरान में चल रहा है, उसके बारे में बताया था। यह बड़ा काम जो प्रभु ईरान में कर रहे हैं, वहाँ ज्यादातर घरेलू महिलायें ही अगुवाई कर रही हैं।

दोस्तों, उठ खड़े हों और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से सुसमाचार की रोशनी को जलाए ँ। यह आपकी मंजिल हैं, यह आपको स्वामी के द्वारा दिया गया आदेश है और यह आपको मिला सुनहरा मौका है। और जब आप चमकते हैं तो आपका मकसद और इच्छा दूसरों को सेवकाई के कार्य के लिये प्रशिक्षित और तैयार करने का होना चाहिये।

सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से पूछे जाने वाले और ध्यान देने वाले व्यवहारिक प्रश्नः

पाँच प्रकार की सेवकाई करने वाले सेवकों के लिएः

1. इस अध्याय को पढ़ने से पहले अपने आप और दूसरों को लेकर आपका नजरिया क्या ज्यादा पुराने नियम वाला था या फिर नये नियम वाला? यदि आपके नजरिये में कुछ बदलाव हुआ है तो वो क्या है जो आप समझते हैं कि नये नियम के नजरिये के अनुसार होना/बदलना चाहिए?

2. इस अध्याय को पढ़ने से पहले आप अपने आप को विश्वासी के रूप में किस प्रकार देखते थे? क्या आपका नजरिया बदला है? यदि हाँ, तो आप इसके द्वारा दूसरों को तैयार करने और सशक्त बनाने के लिये किस प्रकार प्रोत्साहित हुए/उभारे गये?

3. क्या आपकी सामर्थ्य के साथ सुसमाचार प्रचार करने की अपेक्षा (आशा/उम्मेद) केवल पाँच प्रकार की विशिष्ट सेवकाई तक ही सीमित थी? जैसे कि शिक्षक (सिखाने वाले) या पास्टर तक ही बने रहना और क्या आपने अपने आप को बड़ी सामर्थ्य और चिन्ह चमत्कारों के साथ सुसमाचार प्रचार करने के लिये अभिषिक्त के रूप में कभी नहीं देखा था क्योंकि आप सुसमाचार प्रचारक या भविष्यद्वक्ता (नबी) नहीं है?

4. इस पुस्तक को पढ़ने से पहिले क्या आप आश्वस्त थे कि परमेश्वर आपको लोगों की चंगाई और छुटकारे के लिये इस्तेमाल करेगा और परमेश्वर से इसकी उम्मेद लगाये हुए थे? विश्वासी के सेवकाई के लिये तैयार और सशक्त बनाए जाने के इस सोच ने किस प्रकार से आपके आत्मविश्वास को बढ़ाया और सामर्थ्यी और आलौकिक रूप से प्रभु के लिये इस्तेमाल होने की उम्मेद आपके अंदर जगाई है?

5. क्या आपने अपनी कलीसिया के विश्वासियों को बखूबी सिखाया है कि मसीह में वे कौन हैं, वे क्या कर सकते हैं और वे कितने योग्य और समर्थ हैं मसीह में होने के कारण? इस अध्याय ने किस प्रकार से उनकी योग्यता/काबिलियत को लेकर आपके सोच और नजरिये को बदला है?

6. क्या आप विश्वास करते हैं कि मसीह की देह अर्थात् कलीसिया को सुसमाचार प्रचार करने और चंगाई और चमत्कारों के लिये विश्वास करने के लिये प्रेरित करना/उभारना और तैयार करना/सशक्त बनाना अब आपके लिये आसान होगा? यदि नहीं तो क्यों? कौन–सी रूकावटें हैं जो उन्हें तैयार होने/सशक्त बनाने से रोक सकती हैं?

और आप इन रूकावटों को दूर करने के लिये या उन पर विजयी होने के लिये क्या करेंगे?

साधारण विश्वासियों के लिये सवालः

1. इस अध्याय को पढ़ने से पहले क्या आपने कभी यह सोचा था कि आप याजक, भविष्यद्वक्ता (नबी) और राजा हैं? प्रतिदिन के व्यवहारिक जीवन में परमेश्वर के लिये/सामने याजक, भविष्यद्वक्ता (नबी) और राजा बनना कैसा होता है?

2. इस अध्याय को पढ़ने से पहिले क्या आप यीशु मसीह की तरह बनने से ज्यादा इच्छुक पुराने नियम के किसी भविष्यद्वक्ता (नबी) के जैसे बनने में थे? यीशु के समान बनना पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता (नबी), याजक और राजा बनने से अलग कैसे और किन मायनों में है?

3. आपको सुसमाचार प्रचार करने, बीमारों को चंगा करने और दुष्ट आत्माओं को निकालने का पूरा आदेश मिला है। क्या यह बात आपको उत्साहित करती है या फिर आपको डराती है? क्यों? यीशु के इस आदेश का पालन करने और सेवकाई की तैयारी करने के लिये आप कौन–से व्यवहारिक कदम उठाने जा रहे हैं?

4. इस हकीकत (वास्तविकता) को आप कितना जानते हैं कि पवित्र आत्मा आपके अंदर वास करता (रहता) है? पवित्र आत्मा का आपके अंदर वास करने के क्या मायने है? और सुसमाचार को सामर्थ्य के साथ प्रचार करने के आपके लिये क्या मायने हैं? क्या उसकी उपस्थिति उसके आदेश का पालन करने और उसके लिये तैयार होने के लिये आपको आश्वस्त करने के लिये काफी (पर्याप्त) है, या फिर आप किसी और चीज का इन्तजार कर रहे हैं?

5. समाज में आपका पेशा क्या है और कौन–कौन लोग आपके प्रभाव के क्षेत्र में आते हैं जिन पर आप अपना प्रभाव डाल सकते हैं? कौन–से वे व्यवहारिक तरीके हैं जिनका इस्तेमाल करके आप अपने प्रभाव के क्षेत्र में आने वालों को सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर चमत्कार प्रगट करेगा?

3

राज्य का सुसमाचार

उद्धार के लिये छुटकारा

पश्चिम पंजाब के एक गाँव से दूसरे गाँव में सफर करने के दौरान मैं एक छोटे से शहर में अपने कुछ दोस्तों से मुलाकात करने और वहाँ के स्थानीय पास्टर्स को प्रशिक्षण देने के लिये रुका। मैं इस बात से बिल्कुल अनजान था पर पवित्र आत्मा रास्ता तैयार कर रहा था मेरी मुलाकात किसी एक जन से कराने के लिये ताकि वहाँ पवित्र आत्मा अपने आप को उस व्यक्ति पर प्रगट कर सके। उस शहर में एक पढ़ा लिखा हिन्दू व्यक्ति रहता था दर्द और स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं से पीड़ित था। उसकी छाती और सिर में बहुत दर्द बना रहता था। डाक्टरों ने तमाम जाँच की लेकिन किसी भी जाँच में कुछ न निकला। और भी जाँच हुई और अन्त में डाक्टरों ने कहा कि उसके लक्षण वास्तविक नहीं हैं और उसकी यह बीमारी उसके स्वयं के सोच और कल्पना की उपज है।

उसकी बीमारी के लक्षण बने रहे और आत्महत्या/खुदकुशी करने के विचार और इच्छा उसे सताती रहती थी। उसकी इच्छा होती थी कि आत्महत्या कर ले और उस ने कब का अपने आप को खत्म कर लिया होता परन्तु यह चिन्ता कि उसके मरने के बाद उसके परिवार, बच्चों का क्या होगा, ऐसे ही विचार उसे आत्महत्या करने से अभी तक रोके हुए थी। कुछ महीनों तक वह इन विचारों से जूझता रहा और उसके बाद उसके अंदर एक झूठी शान्ति आ गई और आपने आप को खत्म कर लेने की इच्छा उसके अंदर और बलवंत होती चली गयी (बढ़ती गई)। भयभीत होकर उसने मनोचिकित्सक के पास जाने का फैसला किया। जिस सुबह वह मनोचिकित्सक के पास जाने को निकला रास्ते में ही उसकी मुलाकात अपने एक मित्र से हुई जो कि एक मसीही विश्वासी था। बातचीत के दौरान वह अपने आप को रोक न सका, और उसने अपने इस विश्वासी मित्र को अपनी समस्या बताई और यह भी बताया कि वह इस समय कहाँ जा रहा है। उस विश्वासी मित्र को पता था कि मैं उस दिन उनके शहर में हूँ और उसने उससे निवेदन किया कि मनोचिकित्सक को दिखाने से पहले वह मुझ से जरूर मिल ले।

उस दिन वह व्यक्ति मुझ से मिला। उससे मुलाकात करने और उसकी पूरी कहानी सुनने के बाद मैंने बड़े भरोसे के साथ उसे जवाब दिया, "आज यीशु तुम्हें इस पीड़ा और सताव से आजाद करने जा रहा है।" मैंने उसे यह सब नहीं समझाया कि कैसे और क्यों ये सब होगा और तुरन्त आगे बढ़कर मैंने उसके सिर पर हाथ रखा, सताने और पीड़ित करने

वाली आत्माओं को बाँधा और उन्हें निकल जाने की आज्ञा दी। क्षण भर में उसकी बीमारी के सभी लक्षण चले गये। दिमाग में जो संघर्ष चल रहा था और शारीरिक समस्या के लक्षण सब गायब/खत्म हो गये। अब सच्ची शांति और आजादी उसे महसूस हो रही थी। वह चकित था यह सब अनुभव करके और उसके बाद मैंने राज्य का सुसमाचार उसे सुनाया और उसी समय उसने अपना सिर प्रार्थना में झुकाया और उद्धार प्राप्त करने के लिये यीशु को पुकारा।

राज्य की परिभाषा

हम में से ज्यादातर लोगों के लिये राज्य का विचार (idea of a kingdom) एक बाहरी विचार है, इसलिए कि राज्य आत्मिक और अंदेखा भी है। आईये राज्य की परिभाषा जानने के साथ हम शुरुआत करते हैं।

''राज्य वो होता है जहाँ राजा का राज होता है, एक ऐसा प्रान्त जहाँ सिर्फ राजा की इच्छा पूरी होती/सर्वोपरी होती है।''

हालांकि इस संसार में बहुत से राज्य हैं राष्ट्र हैं जहाँ मनुष्य शासन/राज्य करते हैं परन्तु यदि हम आत्मिक क्षेत्र की बात करें तो केवल दो ही प्रकार के आत्मिक राज्य पाये जाते हैं। ये दोनों राज्य एक दूसरे के विरोध में (खिलाफ) और एक दूसरे से बिल्कुल अलग (विपरीत) हैं। स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि 'परमेश्वर का राज्य' और 'स्वर्ग का राज्य' एक ही है।

राज्य	परमेश्वर का राज्य	शैतान का राज्य
राजा	यीशु	शैतान
सेना	आज्ञाकारी विश्वासी और स्वर्गदूत	हिंसक सताने वाले अविश्वसी और दुष्ट आत्माऐं
नागरिक	निष्क्रिय विश्वासी	अविश्वासी
संस्कृति	प्रेम, दया, अनुग्रह, धार्मिकता और सच्चाई	स्वार्थ (मतलबीपन), घृणा (नफरत), लालच, बदला लेना और झूठ
प्रगटीकरण	जीवन, चंगाई, तन्दुरूस्ती, आशा, शान्ति, मेलमिलाप और आशीष	मृत्यु, बीमारी, दर्द (पीड़ा), निराशा, सताव, कलह और शाप

जहाँ भी आत्मिक राज्य की प्रभुता होगी वहाँ पर हमेशा अलग–अलग तरह के प्रगटीकरण दिखाई देंगे। जहाँ कहीं भी राज्य का सुसमाचार विश्वास के साथ सुनाया और प्रचार किया जायेगा, वहाँ पर चिन्ह और चमत्कार प्रगट होंगे। राज्य का सुसमाचार सुनाए जाने या प्रचार किये जाने और राज्य के प्रगटीकरण (बीमारियों, दुष्टआत्माओं और मृत्यु के ऊपर प्रभुता) के बीच में एक गहरा सम्बन्ध है।

"यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन के आराधनालयों में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। और सारे सीरिया देश में उसका यश फैल गया। और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टआत्मायें थीं, और मिर्गीवालों को और लकवे के रोगियों को, उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।" (मत्ती 4:23–24)

"यीशु सब नगरों और गाँवों में फिरता रहा और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।" (मत्ती 9:35)

"और चलते चलते यह प्रचार करो : 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।' बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टआत्माओं को निकालो। तुमनें सेतमेत पाया है, सेतमेत दो।" (मत्ती 10:7–8)

"फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टआत्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और बीमारों को अच्छा करने के लिये भेजा।" (लूका 9:1–2)

"और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था, उन्हें देख–देखकर एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गये।... परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री, बपतिस्मा लेने लगे।' (प्रेरितों 8:5–7,12)

हम राजा यीशु की इच्छा को कैसे पहचानते या जानते हैं? जब हम उपरोक्त वचन के पदों को पढ़ते हैं, तब हमें इसका उत्तर मिलता है। जब हम यीशु के बताये तरीके के अनुसार प्रार्थना करते हैं तब हमें उसकी इच्छा का पता चलता है।

"तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।" (मत्ती 6:10)

यह पद यीशु की इच्छा को साफ–साफ और स्पष्ट रूप से प्रगट करता है। परमेश्वर की इच्छा यह है कि जो कुछ स्वर्ग में प्रगट होता है, वही सब पृथ्वी पर भी प्रगट हो। स्वर्ग में कोई रोग, बीमारी, मृत्यु, शाप या पाप नहीं पाया जाता है। जो कुछ स्वर्ग में नहीं पाया जाता है, वह सब पृथ्वी पर भी नहीं पाया जाना चाहिए और जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर स्थापित हो जायेगा तब कोई भी वह चीज जो स्वर्ग में नहीं पायी जाती है, वह पृथ्वी पर भी नहीं पायी जायेगी।

परमेश्वर ने अपनी इच्छा से मनुष्य को इस पृथ्वी पर प्रभुता करने का अधिकार दे रखा है (उत्पत्ति 1:28/भजन संहिता 115:16)। मनुष्य के पाप के कारण शैतान ने मनुष्य को ध ोखा देकर पृथ्वी पर प्रभुता करने का अधिकार मनुष्य से छीन लिया (रोमियो 6:16) और जगत के राज्य शैतान के अधिकार में आ गये और उसके हो गये (लूका 4:5–6)। यीशु मनुष्य बन कर इस पृथ्वी पर इसलिये आया ताकि मनुष्य के पृथ्वी पर प्रभुता करने के उस खोये हुए अधिकार को मनुष्य के लिये फिर से वापिस हासिल करे और इस पृथ्वी पर अपनी कलीसिया के द्वारा फिर से परमेश्वर के राज्य को स्थापित करे (फिलिपियो 2:5–11)। हिंदी बाइबल में जो मती 16:19 का अनुवाद हुआ, वह मूल यूनानी भाषा के अनुसार सही नहीं हुआ। जैसा मूल भाषा में है, वैसा ही मैंने नीचे अनुवाद किया।

"मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में पहिले से बँधा हुआ होगा और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में पहिले से खुला हुआ होगा।"

राज्य के प्रगटीकरण के लिये यीशु के द्वारा दिया/सिखाया गया नमूना

जैसे कि आप वचन के निम्नलिखित पदों को पढ़ते हैं तो ध्यान दे कि यीशु ने बताया है कि किस प्रकार से दो राज्यों में आपस में संघर्ष चलता रहता है।

“जब लोग एक अंधे–गूंगे को जिसमें दुष्ट–आत्मा थी, उसके पास लाए। और उसने उसे अच्छा किया, और वह बोलने और देखने लगा। इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, ‘यह क्या दाऊद की सन्तान है?’ परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, ‘यह तो दुष्टआत्माओं के सरदार बालजबूल की सहायता के बिना दुष्टआत्मओं को नहीं निकालता।’ उस ने उन के मन की बात जानकर उनसे कहा, ‘जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिसमें फूट होती है, बना न रहेगा। और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा? भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टआत्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारे वंश किसकी सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय करेंगे। पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टआत्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।” (मत्ती 12:22–28)

आइये अब हम परमेश्वर के राज्य को प्रगट करने वाले तीन कारकों (factors) को देखते हैं। ये तीन कारक हैं : प्रतिनिधि, अधिकार और सामर्थ्य।

प्रतिनिधि : परमेश्वर के राज्य और अंधकार के राज्य, दोनों ही को तलाश होती है किसी ऐसे मानव प्रतिनिधि की, जो कि उनकी इच्छा के प्रति पूरी तरह से समर्पित हो। यह मानव प्रतिनिधि वह माध्यम या जरिया है जिसके द्वारा राज्य की आत्मा अपने आप को प्रगट करती है।

अधिकार : आदम के मूल पाप ने शैतान को सारा अधिकार दे दिया, इसलिए पाप और मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गये। (रोमियों 5:12)

यीशु ने पिता के प्रति समर्पित जीवन जीया और अपने अधिकार का उसने इस्तेमाल किया। यीशु ने दुष्टात्मा को निकल जाने का आदेश देने के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल किया। उस व्यक्ति के अन्धे और गूंगे होने का कारण वह दुष्टात्मा थी।

आत्मा : राज्य का आत्मा – परमेश्वर के राज्य के लिये पवित्र आत्मा और अंधकार के राज्य के लिये दुष्ट आत्मायें – मानव प्रतिनिधि के अधिकार का इस्तेमाल करके अपना प्रकटीकरण करती और अपने आप को जाहिर करती हैं। दुष्ट आत्मायें बीमारी, पाप, शाप और मृत्यु को प्रगट करती हैं। पवित्र आत्मा चंगाई, धार्मिकता और जीवन को प्रगट करता है। उपरोक्त घटना में हम देखते हैं कि उस मनुष्य के अन्धापन और बहरेपन का कारण एक अदृश्य दुष्टआत्मा थी। परन्तु पवित्र आत्मा ने चंगाई को प्रगट किया और उस व्यक्ति को दुष्ट आत्मा के बंधन और सताव से आजाद किया।

“पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टआत्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।”

हमें परख कर पहचानना है कि क्या परमेश्वर के राज्य की ओर से है या क्या परमेश्वर के राज्य की ओर से नहीं है और जो बात परमेश्वर के राज्य की ओर से नहीं है उसका सामना हमें अपने अधिकार का इस्तेमाल करने के द्वारा करना चाहिये। हमें विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुये अपने अधिकार का इस्तेमाल करना चाहिए और तब हम पवित्र आत्मा को परमेश्वर के राज्य को चंगाई, चिन्ह, चमत्कार और छुटकारे के साथ प्रगट करते हुये देखेंगे।

अन्धकार का सामना करना

राज्य का सुसमाचार (सन्देश) सीधे–सीधे अंधकार का सामना करता है। जब एक विश्‍वासी परमेश्वर के राज्य की घोषणा करता है तो शैतान घबरा जाता है। जब यीशु राज्य का प्रचार/घोषणा करते थे तो अक्सर दुष्टआत्मायें अपने आप को प्रगट करती थीं (मरकुस 1:21–28)।

राज्य का सुसमाचार शैतान को लज्जित करने और नीचा दिखाने का मंच तैयार कर देता है और जब हम राज्य के सुसमाचार की घोषणा करते हुए स्वर्ग के राज्य को प्रगट करते हैं, तो दुष्ट के कार्य हमारी आँखों के सामने ध्वस्त/नष्ट होते जाते हैं।

कुछ समय पहले मैं ताईवान में था और वहाँ पर लिविंग वाटर चर्च में प्रचार कर रहा था। मैंने राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया और ज्ञान के वचन जो पवित्र आत्मा ने प्रगट किये थे, मैंने लोगों को बताये, और लोगों को कहा है कि जो अवस्थायें/समस्या मैंने इस समय बताई है वैसी अवस्था वाले लोग सामने आ जायें। एक महिला मेरे पास आयी जिसे कैंसर था। मैंने पवित्र आत्मा को आमंत्रित किया और सताने वाली आत्माओं को उसे छोड़ कर चले जाने की आज्ञा दी। वह तुरन्त झुकी और जोर से खाँसने लगी। वह जोर लगाकर साँस लेने लगी। कुछ देर की प्रार्थना के बाद वह उठ खडी हुई और उसने बताया कि उसने ऐसा महसूस किया है जैसे कि कोई चीज उसके अंदर से निकलकर बाहर गई है और अब वह अपने शरीर में बहुत हल्कापन महसूस कर रही है। उसके पेट के निचले हिस्से में जो दर्द था, वह भी चला गया था और अब वह महसूस कर रही थी कि वह कैंसर के रोग से मुक्त और चंगी हो चुकी थी।

एक और महिला सामने आई जिसे कई सालों से ठीक से नींद न आने (अनिद्रा) की बीमारी थी। मैंने उससे मेरी ओर देखने को कहा और मैंने आज्ञा दी, "सताने वाली अनिद्रा की दुष्टआत्मा, मैं तुझे बाँधता हूँ और कहता हूँ निकल जा।" जैसे ही ऐसा कहा, उस महिला की आँखें भावशून्य हो गई, उसका शरीर निढ़ाल हो गया और वह सामने की ओर गिर पड़ी। मैंने उसकी चंगाई और छुटकारे के लिये प्रार्थना जारी रखी। इसके बाद एक व्यक्ति को उसके कुछ विश्वासी मित्र सामने लेकर आये। यह व्यक्ति प्रभु में एक नया विश वासी था। उसने बताया कि जब से उसने यीशु पर विश्वास किया है, तब से दुष्टआत्मायें उसे सता रही हैं और उसके लिये रूकावटें उत्पन्न कर रही हैं। जन्म के समय ही इस व्यक्ति को मूर्तियों की सेवा के लिये समर्पित कर दिया गया था। अब वही दुष्टआत्मायें इस व्यक्ति पर फिर से कब्जा/नियंत्रण हासिल करने के लिये लड़ रही थी। हियाव के साथ मैंने उस व्यक्ति की आँखों में देखा और मैंने दुष्टआत्माओं को डाँटा। उस व्यक्ति का शरीर ऐठने लगा और वह उल्टी करने लगा। उसके बाद वह आजादी महसूस कर रहा था और हल्कापन और शान्ति और तसल्ली भी महसूस कर रहा था।

अगला व्यक्ति जो मेरे सामने खड़ा था, वह एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था। उसकी आँखों से जो आँसू बह रहे थे, उसकी पिछले कई सालों के सताव और पीड़ा का वर्णन कर रहे थे। अचानक पवित्र आत्मा ने मुझ पर प्रगट करना शुरू कर दिया कि बचपन मे वह मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक शोषण से होकर गुजरा है और मैंने परमेश्वर के प्रेम और उसकी उपस्थिति के बारे में इस व्यक्ति को बताना आरम्भ कर दिया। वह व्यक्ति रोने लगा। उसे सताने वाली दुष्टआत्माओं को मैंने बाँधा और तुरन्त उसे अपने अंदर तसल्ली और राहत महसूस होने लगी।

मनुष्य को लाचार/असहाय बना देने वाली सभी चीजें अन्धकार के राज्य के कारण होती हैं। राज्य का सुसमाचार सुनने वाले को छुटकारे के लिये तैयार करता है, वातावरण को आलौकिक ईश्वरीय गतिविधियों से भर देता है और विश्वासी को विश्वास का कदम बढ़ाने के लिये तैयार करता है।

<u>पंथनिरपेक्ष मसीहियत</u>

पाश्चात्य मसीहियत में पूर्वी संस्कृति की तुलना में चीजों को आत्मिक दृष्टिकोण/नजरिये से देखने की कमी पाई जाती है और पाश्चात्य मसीहियत में दुष्टआत्माओं के अस्तित्व और कार्यों पर कम ध्यान दिया जाता है। वहाँ इस बारे में कम सोचा जाता है कि हमारी समस्याओं और बीमारियों के लिये दुष्टआत्मायें जिम्मेदार हैं और

इन लोगों का यह मानना है कि हमारी समस्यायें महज सैद्धांतिक होती है और यह सोच विचार (कि हमारी समस्यायें दुष्टआत्माओं के कारण होती हैं) हमारी उन्नत (विकसित) बुद्धिमता का अपमान है। पाश्चात्य कलीसिया ने मैडिकल साईन्स अर्थात् औषधीय–विज्ञान को परमेश्वर के वचन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना है, वह विज्ञान उन्होंने अपनाया है जो कि दुष्टआत्माओं के द्वारा मनुष्यों के उत्पीड़न की धारणा को खारिज करता है। कोई भी व्यक्ति दुष्टआत्माओं के कार्य की पुष्टि करता है या फिर यह कहता है कि मनुष्य की भावनात्मक और शारीरिक समस्या/बीमारी का स्त्रोत आत्मिक शाप है तो उसे विरोध और मजाक का सामना करना पड़ता है। कुछ लोग कलीसिया में ऐसे होते हैं जो कि दुष्टआत्माओं के अस्तित्व पर तो विश्वास करते हैं परन्तु उन्हें दुष्ट आत्मा का सामना करने के लिये जो सामर्थ्य और प्रकाशन पवित्र आत्मा हमें देता है, उस सामर्थ्य और प्रकाशन के विषय में कुछ भी ज्ञान/समझ और पता नहीं होता है।

हमारी सभ्यता के विकास और उन्नति के साथ–साथ हमने इस बात को भुला दिया है कि सुसमाचार में शैतान को और उसके कार्यों को नाश करने और बड़े–बड़े चमत्कार करने की सामर्थ्य है। हमने सुसमाचार को समय के साथ–साथ शैतान को नाश करने और चमत्कार करने की सामर्थ्य से विहीन कर दिया और समझा है कि सुसमाचार सिर्फ मनुष्यों को अनन्त जीवन प्रदान करने की कुंजी मात्र है। मित्रों, मुझे गलत न समझे – अनन्त जीवन सबसे अधिक महत्वपूर्ण और महान आशीष है। परन्तु यदि हम सुसमाचार प्रचार के दौरान या सुसमाचार में से चंगाई और छुटकारे जैसी खूबियों को निकाल देते हैं तो ऐसा करने के द्वारा हम सुसमाचार को खोये और भटके हुओं के अनन्त उद्धार तक महज सीमित कर देते हैं और सुसमाचार को उसकी चंगाई और छुटकारा देने वाली सामर्थ्य से रिक्त (खाली) और वंचित कर देते हैं। चाहे हम परमेश्वर के वचन में देखें चाहे इतिहास को खंगाल कर देखें, हम एक बात जो देखेंगे (परमेश्वर के वचन और इतिहास में) वो यह है कि जहाँ कहीं भी सुसमाचार प्रचार के साथ–साथ चंगाई, चमत्कार और दुष्टआत्माओं से बहुतायत में छुटकारे आदि प्रगट होते हैं वहाँ बहुत अधिक संख्या में लोग यीशु पर विश्वास लाते और उद्धार पाते हैं। कोई भी कलीसिया रोपण अभियान (church planting movement) न कभी चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्योकर्मों के बिना शुरू हुआ है और न ही चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्मों के बिना कभी आगे बढ़ा है। थोड़ा–सा समय निकाल कर वचन के निम्नलिखित पदों को अवश्य पढ़ें : यूहन्ना 6:2; लूका 6:17–19, 8:2; प्रेरितों 5:12–16, 9:32–42, प्रेरितों 28:8–9।

अधिकतर पाश्चात्य कलीसियों में राज्य का सुसमाचार प्रचार नहीं किया जाता है, वहाँ महज उद्धार का संदेश प्रचार किया जाता है। मुझे इसे समझाने की अनुमति दें:

उद्धार का संदेश केवल पापों की क्षमा और अनन्त जीवन की मनुष्य की आवश्यकता को संबोधित करता है। यहाँ सिर्फ दो पक्षों को प्रस्तुत किया जाता है परमेश्वर और पापी मनुष्य। परमेश्वर हमारी विकट परिस्थितियों और समस्याओं से ऊपर है और उन्हें वर्तमान में बदलने की क्षमता रखता है। परन्तु उद्धार के सन्देश में यह नहीं बताया जाता, न शैतान को सम्बोधित किया जाता है और न ही उसका सामना और मुकाबला किया जाता है। चंगाई की उम्मीद छुटकारा और अद्‌भुत ईश्वरीय सामर्थ्य के कार्यों का जिक्र ही नहीं किया जाता है।

राज्य का संदेश मनुष्य की समस्त आत्मा, प्राण और देह (शरीर) की आवश्यकताओं को सम्बोधित करता है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (परोक्ष) रूप में अन्धकार के राज्य के द्वारा प्रभावित सभी मानवीय आवश्यकताओं को राज्य का सन्देश सम्बोधित करता है (मत्ती 13:19, 13:24–25, 37–39; इफिसियों 6:12)। मनुष्य न सिर्फ एक पापी है जिसे पापों से क्षमा की आवश्यकता है परन्तु वह शैतान के अधिकार में है और उसका गुलाम है (प्रेरितों 26:18)। यह सन्देश परमेश्वर की उपस्थिति की घोषणा करता है और यह घोषणा करता है कि परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य की आत्मा, प्राण और देह (शरीर) अन्धकार और शैतान के अधिकार से और पापों के प्रभाव (असर) से आजाद हो और परमेश्वर अपनी सामर्थ्य के द्व ारा मनुष्य की आत्मा, प्राण और देह (शरीर) को शैतान के अधिकार से छुटकारा प्रदान करता है (गलातियों 1:4; कुलुस्सियों 1:13)। चंगाई और छुटकारे जैसे ईश्वरीय प्रगटीकरण परमेश्वर के हृदय को प्रगट करते हैं और यीशु की वास्तविकता को स्थापित करते हैं और राज्य के सन्देश को सही और सत्य साबित/प्रमाणित करते हैं (मरकुस 16:20)।

यीशु ने हमें आदेश दिया है कि हम राज्य का प्रचार करें (लूका 9:2, 10:9) और यह वादा किया है कि राज्य का सन्देश/सुसमाचार सभी जाातियों के लिये एक गवाही होगा।

“और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।” (मत्ती 24:14)

यहाँ पर यीशु किस गवाही की बात कर रहे हैं? यहाँ उन आलौकिक चिन्ह, आश्चर्यकर्मों, चंगाई और चमत्कारों की बात हो रही है जो कि तब प्रगट होते हों जब कि हम राज्य के सोच और नजरिये के साथ राज्य का सन्देश/सुसमाचार प्रचार करते हैं। रोग नियंत्रण केन्द्र (Center of Disease Control) के द्वारा दिये गये इन आंकड़ों पर जरा ध्यान दें : 10 में से 6 लोगों में जीर्ण रोग/पुरानी एवं लम्बी बीमारी पायी जाती है; 10 में से 4 लोगों में दो या दो से अधिक बीमारियाँ पायी जाती हैं और प्रत्येक 4 में से 1 व्यक्ति में चिन्ता विकार (anxiety disorder) और अवसाद (depression) जैसे

मानसिक रोग पाये जाते हैं। अधिकतर अविश्वासियों को आत्मिक रीति से इस बात का पता/आभास नहीं होता कि उन्हें क्षमा (माफी) और परमेश्वर से मेल–मिलाप की आवश्यकता/जरुरत है। उन्हें उद्धार का सन्देश सुनाना ठीक किसी बहरे को प्रचार करने जैसा ही है। परन्तु अपनी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक आवश्यकताओं/जरुरतों का सभी को पता होता है और जब राज्य का सन्देश/सुसमाचार उनकी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को सम्बोधित करता और पूरा करता है तो बड़ी संख्या में लोग यीशु पर विश्वास लाते हैं। खोए और भटके हुए लोगों के कारण हमें राज्य के सन्देश/सुसमाचार को अपनाना चाहिये और उसका प्रचार करना चाहिए।

राज्य के सुसमाचार (सन्देश) के पहलू या स्वरूप :

1. आलौकिक (supernatural) : परमेश्वर और उसका राज्य आलौकिक हैं, इसलिये राज्य का सुसमाचार लोगों के अंदर आलौकिक और अद्‌भुत कार्यों के प्रगटीकरण की उम्मीद पैदा करे। परमेश्वर का राज्य केवल स्वर्ग तक ही सीमित नहीं है, वह स्वर्ग से परे इस पृथ्वी पर भी अपनी सामर्थ्य को प्रगट करता है। यीशु ने अक्सर राज्य का सुसमाचार सुनाने के दौरान या उससे पहले या उसके बाद में आलौकिक कार्यों को प्रगट किया। लूका रचित सुसमाचार के 5 वें अध्याय में हम देखते हैं राज्य का उपदेश सुनाने के बाद यीशु ने पतरस से समुद्र में जाल डालने के लिए कहा। ऐसा करने पर बहुत मछलियाँ जाल में फसीं, और उनके जाल फटने लगे और भार के कारण नावें डूबने लगीं – आलौकिक कार्य। राज्य का उपदेश शिक्षा देने के बाद यीशु ने पाँच हजार पुरुषों को भोजन खिलाया (मरकुस 6:34–44)। आत्मा का प्रगटीकरण – दर्शन देखना, परमेश्वर और उसके आत्मा की उपस्थिति से भर कर उमड़ना, आलौकिक सामर्थ्य और उपस्थिति का अनुभव करना – ये सब राज्य के पहलू (स्वरूप) हैं।

"और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।" (1 कुरिन्थियों 2:4–5)

2. अनुग्रह पर आधारित सुसमाचार (Good News based upon grace) : यह एक शुभ (अच्छा) समाचार है, परमेश्वर की दया और अनुग्रह से भरा समाचार। जब समस्त मानव परमेश्वर से दूर हो गया, सबने अपना अपना मार्ग चुन लिया/अपना लिया और अन्धकार में खो गये, तब यीशु अपनी आँखों में दया लिये हुए, हमें खोजता हुआ हमारी ओर

दौड़ता हुआ चला आया। हमें पश्चाताप करने, मन फिराने और अपने सोच को बदलने की आवश्यकता/जरुरत है क्योंकि उसकी भलाई हमारे सीमित सोच और कल्पना से कहीं अधिक और परे है।

यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया, और कहा, 'समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।' (मरकुस 1:14—15)

"हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दें।" (लूका 12:32)

3. <u>बीमारी, दुष्ट—आत्माओं और मृत्यु के ऊपर प्रभुता (Dominion over disease, demons and death)</u> : परमेश्वर/स्वर्ग का राज्य बीमारी, मृत्यु और अन्धकार की शक्तियों के विरोध में है और जहाँ कहीं भी विश्वास और पवित्र आत्मा के प्रति समर्पण पाया जाता है वहाँ पर वह बीमारी, मृत्यु और अन्धकार की शक्तियों पर प्रबल और जयवन्त होता है। शारीरिक चंगाई, चमत्कार और दुष्टआत्माओं को निकालना प्रथम चिन्ह थे जो यीशु और उसे मानने वालों ने प्रगट किये।

4. <u>ईश्वरीय आमंत्रण (न्यौता) (Divine invitation)</u> : परमेश्वर सिर्फ आमंत्रित करता है, वह हमारी इच्छा के विरोध में हमें मजबूर नहीं करता है। राज्य का सुसमाचार महज एक बेहतर/उत्तम राज्य का अनुभव करने और उस राज्य में जीवन जीने का आमंत्रण (न्यौता) है। हमारी प्रतिक्रिया (response) एक सक्रिय और क्रियाशील विश्वास की होती है (मत्ती 11:12 लूका 10:10—11)।

व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से ध्यान देने के लिये व्यवहारिक सवाल :

1. इस अध्याय को पढ़ने से पहले तक आपके विचार से "राज्य के सुसमाचार" की परिभाषा क्या थी?

2. किस प्रकार (कैसे) और क्यों "राज्य का सुसमाचार" भौतिक क्षेत्र (physical realm) पर प्रभाव डालता है?

3. स्वर्ग/परमेश्वर के राज्य के मुख्य दिखाई देने वाले चिन्ह (visible signs) कौन–से हैं?

4. जहाँ कहीं भी यीशु और उसके चेलों ने राज्य का सुसमाचार प्रचार किया, वहाँ पर कौन–से कार्य हमेशा देखने को मिले?

5. परमेश्वर का राज्य किस तरह से (कैसे) प्रगट होता है?

6. प्रभु में बढ़ने (आत्मिक उन्नति) के दौरान कौन–सा सन्देश आपने ज्यादा सुना, उद्धार का सन्देश या फिर राज्य का सन्देश? कौन–सा सन्देश आपने दूसरों को सुनाया?

7. राज्य का सन्देश (सुसमाचार) सुनाने पर क्यों उद्धार का सन्देश सुनाने की तुलना में अधिक लोग उद्धार और अनन्त जीवन पाते हैं? कारण बताइए।

8. क्या आपकी संस्कृति में लोग राज्य का सन्देश ज्यादा आसानी और सहजता से समझ पाते हैं? यदि नहीं तो क्या आप राज्य के सुसमाचार/सन्देश का कोई ऐसा तरीका बता सकते हैं जो कि सांस्कृतिक रूप से अधिक उपयुक्त, सही और ज्यादा कारगर हो? समझाइये कि क्यों हमारी संस्कृति हमें राज्य का सन्देश (सुसमाचार) सुनाने से प्रतिबन्धित कर सकती है/रोक सकती है और क्यों नहीं प्रतिबन्धित कर सकती है।

9. अपने प्रभाव के क्षेत्र में क्या आप लगातार अन्धकार के राज्य को सक्रिय देख रहे हैं और उसका सामना कर रहे हैं? क्या इस अध्याय ने आप के ऊपर प्रभाव डाला है कि आप अधिक प्रभावशाली रूप से शैतान के बन्धनों में जो पाये जाते हैं उन्हें आजाद कराये? इस कार्य को आप कैसे करेंगे?

10. आपके प्रभाव के क्षेत्र में जो लोग पाये जाते हैं, क्या उन्हें उद्धार के सन्देश के प्रचार की तुलना में राज्य के सन्देश (सुसमाचार) से ज्यादा लाभ/फायदा होगा? आप उन तक राज्य का सुसमाचार कैसे पहुँचाऐंगे?

4

अनुग्रह का सुसमाचार

दर्द से कराहते हुए जयप्रीत ने अपने पति से कहा, "अब मुझसे और सहन (बर्दाश्त) नहीं होता, हमें चंडीगढ़ में इलाज के लिये जाना चाहिए।" उसे पता था कि आपरेशन का खर्जा उसके परिवार के लिये बहुत बड़ा बोझ साबित होगा इसलिये वह हर दिन दर्द को सहती रही और समस्या इतनी अधिक बढ़ गई कि पाँच साल तक उनका चलना फिरना बिल्कुल बन्द हो गया था। उसकी हालत लगातार बिगड़ती चली गई और वह अपने बच्चों और परिवार की देख–भाल करने लायक भी नहीं रही। यह सब देखकर उसके पति ने उसका आपरेशन (surgery) कराने का जोखिम लेने का फैसला किया। पति को लगता था कि शायद आपरेशन कराने पर वह ठीक हो जाये या फिर किसी चमत्कार की आस या उम्मीद ही बाकी बची थी।

जयप्रीत महज 30–32 साल की थी, फिर भी (गठिया रोग के कारण) जब वह चलती थी तो नब्बे साल की बुजुर्ग महिला की तरह चलती थी। चलते समय जयप्रीत की रीढ़ की हड्डी पर बहुत अधिक दवाब पड़ता था जिसके कारण उसे और भी कई समस्यायें शरीर में होने लगी थीं। उसे हर समय दर्द बना रहता था, चलने में बहुत परेशानी होती थी और वह घर का या फिर अपना कोई भी काम नहीं कर पाती थी। वे लोग गाँव के रहने वाले और आर्थिक रूप से गरीब थे। उन्होंने स्थानीय अस्पतालों के कई चक्कर लगाये परन्तु वहाँ से उन्हें लौटा दिया गया क्योंकि उसका ईलाज और आपरेशन जोखिम भरा था, उसके आपरेशन का खर्च भी बहुत था और उस जगह पर इस प्रकार के आपरेशन को करने वाला कोई डाक्टर भी नहीं था। आखिरकार वे चंडीगढ़ के सबसे अच्छे अस्पताल में गये। डाक्टर ने बताया कि उसका आपरेशन बहुत जोखिम भरा होगा क्योंकि रीढ़ की हड्डी में आगे की ओर दबाव पड़ रहा था। आपरेशन का खर्च उनके अनुमान से कहीं अधिक था। वे यह सोचते हुये इतना अधिक खर्चा करके इतना बड़ा जोखिम लेना सही होगा या नहीं अपने गाँव वापस लौटे। अब उन्हें सिर्फ किसी चमत्कार की उम्मीद थी। इस दौरान मेरी उनसे पहली बार मुलाकात हुई।

मेरे मित्र हरपाल वहाँ पर गाँव में एक कलीसिया चलाते हैं। उनके साथ बातचीत करते हुए हम लोग चाय पी रहे थे। इस दौरान जयप्रीत को लेकर उसका पति वहाँ आया। साथ में उनका बेटा भी था। पास्टर हरपाल से जयप्रीत ने पंजाबी में कहा कि उसने सुना है कि आप लोग बीमारों और समस्याग्रस्त लोगों के लिये प्रार्थना करते हो, इस कारण मैं भी

प्रार्थना करवाने के लिये आपके पास आई हूँ। मुझे ध्यान आया कि किस प्रकार से धीरे–धीरे चलकर वह आई है। पास्टर हरपाल ने मुझ से कहा कि मैं उसके लिये प्रार्थना करूँ।

मुस्कुराते हुए मैंने बड़े विश्वास के साथ उस से कहा कि इसी समय यीशु तुम्हें इस बीमारी से चंगा और स्वस्थ करने जा रहा है। उसे मेरी कही बात का जरा भी यकीन और विश्वास नहीं हुआ। मैंने अपने हाथ को उसकी पीठ पर रखा और पवित्र आत्मा की उपस्थिति को आमंत्रित किया। मैंने जीवन और चंगाई का आहवान किया और उसकी रीड़ की हड्डी को ठीक हो जाने का आदेश दिया। मैंने उसे निर्देश दिया, "अपने जिस्म को परखो जाँचो, चलकर उधर जाओ और फिर वापस आओ।" उसने मेरे कहे अनुसार किया। उसे यकीन नहीं हो पा रहा था, वह आसानी और आजादी से चल पा रही थी। उसने बताया कि चुभन वाला तीखा दर्द जो उसकी रीड़ की हड्डी में होता था, वह चला गया है। सायाटिका (कटिस्नायुशूल) का दर्द जो उसके कूल्हे और पैरों में पीड़ा पहुँचाता था, वह भी चला गया था। परन्तु उसकी रीड़ की हड्डी के आस पास की माँसपेशियों में अभी भी तनाव और दर्द था। हमने फिर से प्रार्थना की और तुरन्त उसकी माँसपेशियों में उसे आराम और राहत मिली। मैंने फिर से उसे चलाया और इस बार वह बिल्कुल भी किसी प्रकार का दर्द या परेशानी महसूस नहीं कर रही थी। वह आसानी से और बिना दर्द महसूस किये हुये चल फिर पा रही थी और झुक भी पा रही थी। आनन्द के साथ पास्टर हरपाल ने उन्हें सुसमाचार सुनाया और उन्होंने ध्यानपूर्वक सुना। उन्होंने अपने सिरों को यीशु के सामने झुकाया और उस पर विश्वास किया, जो कि चंगाई देता है और उसके लम्बे समय से चले आ रहे दर्द को गायब किया। अब वे सब लगातार कलीसिया में संगति करते हैं और जयप्रीत के कई रिश्तेदार भी प्रभु में आए हैं।

अनुग्रह को परिभाषित करना

"परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसको प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई हैं।" (प्रेरितों 20:24)

दोस्तो, सुसमाचार 'अनुग्रह' का सुसमाचार है। आगे बढ़ने से पहले हमें 'अनुग्रह' को परिभाषित करने की जरुरत है। एक क्षण रूके और अनुग्रह की अपनी परिभाषा को सोचें।

अनुग्रह क्या है? यदि आप धर्मविज्ञानियों से पूछें तो ज्यादातर का जवाब यह होगा कि अनुग्रह परमेश्वर के द्वारा हम पर किया गया वह उपकार/एहसान है जिसके योग्य हम

नहीं थे। हालांकि यह एक अच्छा जवाब है, परन्तु मैं अनुग्रह को अपने शब्दों में परिभाषित करना चाहूँगा ताकि मैं और अन्य लोग अनुग्रह को और बेहतर और पूरी तरह से समझ सकें। 'अनुग्रह परमेश्वर का वह प्रेम और भलाई है जो कि बुरे और अयोग्य और नाकाबिल लोगों को मुफ्त में प्राप्त हुआ है।' अनुग्रह अयोग्य लोगों को किया गया परमेश्वर का प्रेम और उनके लिये परमेश्वर के द्वारा की गई भलाई है। अनुग्रह मुफ्त में और बिना किसी शर्त के प्राप्त हुआ है। यदि इसमें जरा सी भी कोई शर्त होती तो यह मुफ्त न होता और न ही अनुग्रह कहलाता। यदि आप इसके योग्य हैं तो जो आपने प्राप्त किया है वह अनुग्रह नहीं है परन्तु एक पुरस्कार/ईनाम है।

यीशु मसीह परमेश्वर के तत्व की छाप है (इब्रानियों 1:3) और अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है (कुलिस्सियों 1:15)। उसका हर एक शब्द, आचरण और कार्य पिता को सिद्धता/पूर्णता में प्रगट करता है (यूहन्ना 5:19–20; 14:9–10)। पमरेश्वर का वचन यीशु का किस प्रकार से वर्णन करता है?

"और वचन देहधारी हुआ और अनुग्रह और सच्चाई से पूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना 1:14)

सुसमाचार को समझना हमारी समझ से परे है। इस बात को समझने के लिये कि परमेश्वर कितना अधिक भला है, हमें पवित्र आत्मा की जरुरत पड़ती है। यीशु अनुग्रह से परिपूर्ण है।

"क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया, अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।" (यूहन्ना 1:16)

यीशु प्रेम, भलाई और दया से भरकर उमड़ रहा है। उसके उमड़ने के कारण हमें एक चीज प्राप्त हुई है, और वह है अनुग्रह पर अनुग्रह। परमेश्वर का वचन यहाँ पर परमेश्वर के कोप (क्रोध/रोष), न्याय, नाराजगी और प्रतिकार की बात नहीं करता है। सुसमाचार परमेश्वर के उस बेशुमार प्रेम और भलाई के विषय में है जो कि उसने बिना किसी शर्त के बुरे और पापी मनुष्यों पर प्रगट किया है।

<u>वाचाओं के मध्य भिन्नता</u>

दोस्तों, ज्यादातर विश्वासियों के मसीही जीवन में जिस समस्या का सामना उन्हें अक्सर करना पड़ता है, वह है परमेश्वर के सुसमाचार और बाईबिल को लेकर उनकी गलतफहमी। यह समस्या है इस कारण है क्योंकि उन्हें पुरानी और नई वाचा में भिन्नता या भेदकर पाने की शिक्षा नहीं दी गई। इस कारण वे दोनों वाचाओं में भिन्नता नहीं कर पाते हैं। वाचाओं में भिन्नता न कर पाने के कारण सुसमाचार उनके लिये अनुग्रह से रिक्त/खाली साबित होता है। जैसे कि प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी है :

"मुझे आश्चर्य होता है कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह में बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं, पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं... हे निर्बुद्धि गलतियों, किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानो आँखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया है। मैं तुमसे केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम में आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के समाचार से पाया? क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ कर के अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?" (गलातियों 1:6–7; 3:1–3)

जब भी व्यवस्था (पुरानी वाचा) को सुसमाचार के साथ मिला दिया जाता है तो वहाँ पर पवित्र आत्मा का कार्य और परमेश्वर की सामर्थ्य निष्प्रभावी बन जाते हैं और वहाँ पर विधि सम्मत (legalistic) मसीही उत्पन्न होते हैं। उपरोक्त वचन के पदों में प्रेरित पौलुस गलतिया की कलीसिया को उन विधि सम्मत (legalistic) यहूदियों के बारे में सचेत कर रहे हैं जो कि यीशु मसीह का प्रचार व्यवस्था की शर्तों पर करते हैं। मित्रों, ध्यान दें और सोचें कि आप किन बातों पर विश्वास करते हैं!

व्यवस्था	अनुग्रह
पुरानी वाचा	नयी वाचा
मूसा के द्वारा स्थापित	यीशु के द्वारा स्थापित
अस्थायी	अनन्त
परमेश्वर के साथ मनुष्य का सम्बन्ध मनुष्य के कार्यों पर आधारित होता है।	परमेश्वर के साथ मनुष्य का सम्बन्ध परमेश्वर के अनुग्रह और मनुष्य के विश्वास पर आधारित होता है।
मनुष्य को परमेश्वर के समक्ष धर्मी नहीं बना सकती है।	यीशु ने मनुष्य को धर्मी बनाकर परमेश्वर के समक्ष खड़ा किया है।

शैतान और दुष्ट–आत्माओं का सामना करने की मनुष्य में क्षमता या काबिलियत नहीं है।	अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा यीशु ने अन्धकार को हरा दिया और हमें अन्धकार और शैतान की शक्तियों पर अधिकार दिया है।
मनुष्य न्याय के भय और सजा के डर के कारण पश्चाताप करता है।	परमेश्वर के प्रेम और भलाई के कारण मनुष्य मन फिराता या पश्चाताप करता है। (रोमियों 2:4)

आइये, हम पुरानी और नयी वाचाओं की भिन्नता पर ध्यान दें, और ध्यान दें कि किस प्रकार से परमेश्वर का वचन हमें परमेश्वर की भलाई को ग्रहण करने का निर्देश देता है। हमारा पहला उदाहरण है ईश्वरीय चंगाई (ईश्वर के द्वारा प्रदान की गई शारीरिक चंगाई)। दूसरा है पापों की क्षमा और परमेश्वर से हमारा मेल–मिलाप।

"यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैंने मिस्त्रियों पर भेजे हैं उनमें से एक भी तुझ पर न भेजूँगा, क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूँ।" (निर्गमन 15:26)

"तब वह उनके साथ उतरकर चौरस जगह में खड़ा हुआ, और उसके चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहूदिया, यरूशलेम, और सूर और सैदा के समुद्र के किनारे से बहुत लोग, जो उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये उसके पास आए थे, वहाँ थे। और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुए लोग भी अच्छे किये जाते थे। सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर सबको चंगा करती थी।" (लूका 6:17–19)

दोस्तो, आप पुराने नियम के वायदे को लेकर उसे लागू करने की कोशिश करके नाकाम होकर बीमारी और रोग से अपनी जान गवाँ सकते हैं। ऐसा मेरा अनुभव मेरी प्रिय माँ के मामले में रहा है। मेरी माँ की जाँच कराने के बाद पता चला कि उन्हें डिम्बग्रन्थि या गर्भाश्य का कैंसर है जो कि स्टेज 3 में पहुँच चुका है। उन दिनों में मैं चंगाई और चमत्कारों को अपने जीवन में लगातार होते हुए अनुभव कर रहा था लेकिन मुझे उन दिनों अनुग्रह के बुनियादी सिद्धांत और बातों के बारे में अधिक पता नहीं था।

एक शाम मैं अपनी माँ के साथ बैठा और मैंने उनसे यह कहा, "ठीक है मम्मी, अब हम बाईबिल में से चंगाई से सम्बन्धित पदों को खोजेंगे और उन्हें पढ़ेंगे। हम निर्गमन की पुस्तक में से शुरू करेंगे जहाँ पर परमेश्वर ने पहली बार चंगाई देने वाले के रूप में स्वयं

को प्रगट किया है।" मैंने निर्गमन 15:26 को खोला और अपनी माँ से धीरे–धीरे पढ़ने को कहा।

पढ़ने के बाद मैंने उस वचन के बारे में सोच–विचार और मनन करने का उन्हें काफी समय दिया। फिर मैंने उन से पूछा, "तो फिर मम्मी, वचन के इन पदों के द्वारा परमेश्वर आपसे क्या कह रहे हैं?" मेरी माँ चुप रही जबकि उनकी आँखें आसुओं से भर आयी थीं। आसुओं की धारा बह निकली जबकि उन्होंने दिल से खेद प्रगट करते हुए धीरे से कहा, "मैंने वचन के इन पदों का कभी भी पालन नहीं किया और न ही कभी मैं इन पदों का पालन कर सकूँगी।" परमेश्वर के वचन की शर्तों को पूरा करने में नाकाम रहने पर और अपनी चरम बीमारी पर वह फूट–फूटकर रोने लगी।

दोस्तो, यहाँ पर निर्गमन 15:26 में न ही यीशु के जीवन, मृत्यु और जयवन्त पुनरूत्थान का वर्णन है और न ही उसके अनुग्रह का यहाँ पर हमें कुछ वर्णन मिलता है। चंगाई का पहला वादा बहुत सी शर्तों और माँगों से भरा हुआ है। आप चंगाई के बारे में सब कुछ सीख–समझ सकते हैं परन्तु अनुग्रह ही वह कुंजी है, जो कि परमेश्वर की चंगाई देने वाली सामर्थ्य को खोलती है। मैं पीछे मुड़कर अतीत के दिनों में देखने पर यह समझ पाया हूँ कि यदि आप पुराने नियम की व्याख्या यीशु को लिये बिना करेंगे तो आप अवश्य ही नाकाम हो जायेंगे। अब मैं निर्गमन 15:26 की व्याख्या इस बात को जानकर कर सकता हूँ कि यीशु मेरे स्थान पर आया और उसने परमेश्वर की वाणी (वचन) को ध्यानपूर्वक और तन मन से सुना, उसने वह सब जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक है, वही मेरे लिये किया और उसने परमेश्वर की सभी विधियों का पालन किया और उसके अनुग्रह के कारण परमेश्वर मेरा चंगा करने वाला है। दोस्तो, यीशु ने सभी शर्तों और माँगों को पूरा किया है, इसी कारण परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाऐं और वायदें यीशु में हाँ के साथ हैं (2 कुरिन्थियों 1:20)।

लेकिन उन शुरुआती दिनों में अपनी माँ पर यीशु को सही तरह से प्रगट कर पाने में मैं नाकाम रहा। मैंने व्यवस्था को सुसमाचार के साथ मिलाकर (मिश्रण करके) परमेश्वर के प्रति उनके नजरिये को विषम बना दिया। मैंने अपनी आँखों के सामने उन्हें कैन्सर से मरते हुए देखा। वह एक–एक साँस के लिये संघर्ष करती रही और यह संघर्ष उनकी अन्तिम साँस के साथ समाप्त हुआ। मैंने अपनी गलतियों से बहुत कुछ सीखा और मैंने अपनी नाकामी को अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया और न ही अपनी नाकामी को अपने भविष्य पर कभी हावी होने दिया। उसके बाद से मैंने बहुत से कैंसर के ट्यूमर्स को तुरन्त घुलते हुए और ठीक होते हुए देखा है। मेरी माँ यीशु के साथ स्वर्ग में आनन्द मना रही हैं लेकिन मुझे उनकी कमी महसूस होती है। काश वह मेरे साथ अभी होती। दोस्तो,

आप अतीत को तो नहीं बदल सकते, परन्तु आप अपने भविष्य को आशा से भरने की अनुमति यीशु को दे सकते हैं।

जैसे कि आप लूका 6:17–19 में देख सकते हैं कि एक बड़ी भीड़ यीशु के पास आई। उस भीड़ में सन्त और पापी सभी पाये जाते थे। कुछ झूठ बोलने वाले, कुछ गाली देने वाले, कुछ समलैंगिक और लालची उस में पाये जाते थे, जो भीड़ यीशु के पास आयी थी। यीशु ने उन सभी को चंगा किया। यीशु ने उन्हें चंगाई देने के लिये कोई माँग या शर्त नहीं रखी। यीशु ने परमेश्वर की भलाई सेंतमेंत उनके ऊपर खोल दी, जो भी उसके पास आया यीशु ने सभी पर परमेश्वर की भलाई को बहने दिया।

क्या आपको पता है कि क्यों बहुत से मसीही लोग चंगाई नहीं पाते हैं? मेरे विचार से उनके चंगा न होने का मुख्य कारण है उनका व्यवस्था पर आधारित विश्वास। मेरी माँ को भी इसी कारण चंगाई नहीं मिल पाई थी। व्यवस्था हमारे सच्चे विश्वास को लूट लेती है। लेकिन एक बार जैसे ही हमें परमेश्वर के अनुग्रह का एहसास होता है तब चंगाई हमारे लिये आसान और हमारी पहुँच में होती है। आइये, अब हम चंगाई से आगे बढ़कर पापों की क्षमा और परमेश्वर से मेल–मिलाप की ओर बढ़ें।

"तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँगा। (2 इतिहास 7:14)

"ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल–मिलाप कर लिया, और मेल–मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल–मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उस ने मेल–मिलाप का वचन हमें सौप दिया है।" (2 कुरिन्थियों 5:18–19)

इस बात में कोई सन्देह या शक नहीं कि जब भी बेदारी (जागृति) की बात होती है तो 2 इतिहास 7:14 का सब जगह वर्णन किया जाता है। दुनिया भर में पास्टर्स और अगुवे अपनी कलीसिया की प्रार्थना में अगुवाई करते हुए, पापों का अंगीकार कर रहे हैं और परमेश्वर के दर्शन के खोजी बनकर एक बदलाव या परिवर्तन के लिये विनती निवेदन कर रहे हैं। उनका मकसद तो अच्छा है परन्तु बेदारी को अनुभव करने का उनका तरीका पूरी तरह से गलत है। दोस्तो, याद रखें इस सच्चाई/हकीकत को कि व्यवस्था हमेशा 'यदि' शब्द का इस्तेमाल करती है और शर्तों को हमारे सामने रखती है। बड़ी भीड़ बेदारी के

लिये प्रयासरत् है लेकिन वे इस हकीकत/सच्चाई से अन्जान है कि यीशु मसीह में और उसके द्वारा बेदारी पहले ही आ चुकी है।

जो विश्वासी वचन के इन पदों का इस्तेमाल बेदारी के सन्दर्भ में करते हैं, वे पाप के एक अंगीकार की दूरी पर हैं। वे बेदारी का अनुभव करने से महज एक प्रार्थना की दूरी पर हैं। वे हमेशा यह महसूस करते हैं कि वे बेदारी के मुहाने पर खड़े हैं परन्तु वे बेदारी का कभी भी अनुभव नहीं कर पाते हैं। क्यों? क्योंकि व्यवस्था हमें बेदारी का अनुभव न करने देने के लिये ही बनी है। लेकिन जब हम यीशु की ओर देखते है तो हम उस बात की खूबसूरती को देख पाते हैं जो कि यीशु ने हमारे लिये पहले से ही कर दिया है।

उसके नाम को पुकारने से पहले, अपने आप को दीन करने से पहले, उसके दर्शन के खोजी होने और अपनी बुरी चाल से फिरने से पहले ही हमारे सभी पापों के लिये एक बलिदान चढ़ा दिया गया और कीमत चुका दी गई है और यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल–मिलाप परमेश्वर से हो चुका है। इस मेल–मिलाप के द्वारा हमारी पहुँच हर एक अच्छी वस्तु तक और उसकी उपस्थिति की गहराईयों तक हो चुकी है। अब स्वर्ग आपके वास्ते हमेशा के लिये खुल गया है।

दोस्तो, हर एक परिपक्व विश्वासी को न सिर्फ परमेश्वर का अनुग्रह और आशीष प्राप्त करने के लिये दीन बनना, बुरी चाल से फिरना, और उसके दर्शन को खोजी बनना चाहिए परन्तु हर एक परिपक्व विश्वासी को परमेश्वर की बड़ी भलाई (रोमियों 2:4) के कारण दीन बनना, बुरी चाल से फिरना और उसके दर्शन का खोजी बनना चाहिये। यीशु के द्वारा परमेश्वर ने अपने साथ संसार का मेल–मिलाप कर लिया है। हमारे आत्मिक कार्य परमेश्वर की भलाई के प्रत्युत्तर में एवं परमेश्वर की भलाई से प्रेरित होने चाहिए।

यदि आप निराश और हताश हैं तो विश्वास करें कि शान्ति के राजकुमार से आपका पहले ही मेल–मिलाप हो चुका है, और उसकी शान्ति सेंतमेंत आपकी ओर आपके लिये बह रही है। यदि दुष्ट–आत्माऐं आपको सताती हैं या फिर आप बीमारी से पीड़ित हैं, तो विश्वास करें कि चंगाई और छुटकारा देने वाले से पहले ही आपका मेल–मिलाप हो चुका है। आप यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ जोड़े गये हैं और परमेश्वर के साथ हुए इस मिलाप के कारण परमेश्वर की भलाई अब आपकी है और आपके लिये उपलब्ध है। यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ आपका कभी न टूटने वाला मिलाप और एकीकरण हो गया है और इस अद्‌भुत बात का एहसास और अनुभव करने से बेहतर अन्य कोई आत्मिक आशीष नहीं है। परमेश्वर के साथ यह जो मिलाप और एकीकरण जो आपका हुआ है, वो आपकी अपनी

आज्ञाकारिता, भक्ति या आपके अपने प्रयास के कारण नहीं परन्तु सब यीशु के द्वारा हुआ है।

मैं ताईवान में एक समुद्र किनारे बसे हुए एक गाँव में था। मैं एक सेवकाई करने वाले दल के साथ था, और उन्हें प्रशिक्षित कर रहा था। मैं उन्हें सिखा रहा था कि सुसमाचार प्रचार करने के साथ–साथ बीमारों की चंगाई के लिए प्रार्थना करना एक कारगर तरीका है जिसके द्वारा लोग विश्वास लाते हैं और सुसमाचार को ग्रहण करते हैं। वहाँ एक महिला ने हम से प्रार्थना करने के लिये निवेदन किया। इस महिला के कन्धे में दर्द बना रहता था। जैसे ही मैं उसके लिये प्रार्थना करने जा रहा था, मैंने टीम के अपने उन साथियों से कहा कि वे ध्यानपूर्वक देखें कि मैं किस प्रकार से उस महिला के लिये प्रार्थना करूँगा।

मैंने पवित्र आत्मा को आमंत्रित किया, उसके बाद मैंने अपने हाथ उस महिला के कन्धे पर रखे यह कहते हुए, "पवित्र आत्मा, अपनी चंगाई की उपस्थिति को लेकर इस महिला के कन्धे में आये। मैं आपकी सामर्थ्य को इसके शरीर में बहने के लिये कहता हूँ। दर्द इसके शरीर में से अभी निकल जा। इसके कन्धे में चंगाई प्रगट हो।" उस महिला का सारा शरीर काँपने लगा। परमेश्वर की भलाई की तरंगे उसमें होकर बह रही थी। वह महिला समझ नहीं पा रही थी कि क्यों उसका शरीर काँप रहा है, परन्तु उसने खुशी के साथ हमें बताया कि उसका सारा दर्द चला गया।

अचानक, पवित्र आत्मा मुझे एक दर्शन दिखाने लगा। मैंने दर्शन में उस महिला को एक छोटी सी नाव में बैठे हुए देखा। उस छोटी नाव में एक या दो लोग ही बैठ सकते थे। लहरें उठ रही थीं और वह महिला नाव में खड़ी होकर अपने वजन को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही थी। उसके हाथ में एक गोल आकार का बर्तन था जो कि पानी से आधा भरा हुआ था। यह उस बर्तन के समान था जिसमें गोल्डफिश रखी जाती है, परन्तु उस बर्तन में मछली के स्थान पर मैंने उस महिला के हृदय को तैरते हुये देखा। वह महिला उस बर्तन में से अपने हृदय को गिरने से बचाने की कोशिश भी कर रही थी। फिर मेरे जरिये पिता की आवाज उस तक पहुँची। मैंने उसे बताया कि परमेश्वर पिता को उसकी परवाह/चिन्ता है। वह उसकी देख–भाल करता है, और वह चाहता है कि उसका साथी बन जाये और उसके बहुमूल्य हृदय को अपने करूणामय मजबूत हाथों में ले ले। उस महिला की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने मुझे रोककर कहा, "मैं यीशु के पीछे चलना चाहती हूँ। मुझे क्या करना होगा।" परवाह करने वाली पिता की आवाज, उसकी चंगाई की उपस्थिति और सामर्थ्य उस महिला के लिये बहुत थी; उसने खुशी से अपना जीवन यीशु को सौप दिया और उसके प्रेम का अनुभव किया। कुछ लोगों का कहना है कि यह तस्वीर हजारों शब्दों से बेहतर/कीमती है। पर मैं कहता हूँ कि चंगाई, चमत्कार और छुटकारा जो

परमेश्वर देता है, वह परमेश्वर के हृदय और प्रेम को जो आपके लिये उसके दिल में है प्रगट करता है।

दोस्तों, अनुग्रह ने मेरे विश्वास को आजाद किया है। परमेश्वर की भलाई, प्रेम और सामर्थ्य को अनुभव करने के लिये किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं है। आपके जीवन को बदल देनेवाली उसकी भलाई, प्रेम, और उपस्थिति के लिए किसी भी प्रकार की माँग या किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। आपके ऊपर अपनी भलाई और प्रेम को प्रगट करने के लिये परमेश्वर ने कोई भी माँग नहीं रखी है। मुझे उस महिला के पापों के बारे में सोच–विचार नहीं करना पड़ा। संभावित अक्षमाशीलता, पैतृक पापों के बारे में भी नहीं सोच–विचार करना पड़ा। यीशु ने पिता के प्रति सिद्ध आज्ञाकारिता प्रगट की और ऐसा करके हमारे लिये व्यवस्था की हर माँग को पूरा कर दिया। आप जैसे भी हैं उसी हाल और अवस्था में अनुग्रह परमेश्वर की भलाई को आपके ऊपर प्रगट करता है।

अनन्त बलिदान

अनुग्रह का सुसमाचार न्याय (justice) के द्वारा दया (mercy) की विजय को प्रगट करता है। यदि परमेश्वर पाप का न्याय करने या सजा देने में चूक या गलती करता तो इसका मतलब यह होता कि परमेश्वर ने अपने न्याय/इन्साफ के अनन्त गुण के साथ समझौता कर लिया। यदि परमेश्वर ने सच्चा न्याय/इन्साफ हमें हमारे पापों की सजा देकर किया होता तो हमारे लिये जो उसका प्रेम और दया है, उस प्रेम और दया का उसे इन्कार करना होता अथवा उस प्रेम और दया को उसे छोड़ना पड़ता। पाप का न्याय/इन्साफ करना और मनुष्य से असीम प्रेम करना ये दोनों ही परमेश्वर के विशेष गुण/खूबियाँ हैं। एक गुण/खूबी को परमेश्वर दूसरे गुण या खूबी के लिये कभी नहीं छोड़/त्याग सकता है। परन्तु कुछ गुण दूसरे गुणों से कहीं अधिक बड़े, महान और महत्वपूर्ण होते हैं जैसे कि उसका प्रेम, दया और अनुग्रह। सुसमाचार की अद्‌भुत बात यह कि परमेश्वर ने न्याय/इन्साफ का पूरी तरह से निर्वाह/पालन किया और साथ ही साथ हमारे प्रति अनुग्रह और दया को प्रगट किया हमारे पापों को यीशु मसीह के शरीर पर डालकर उसने हमारे पापों की सजा यीशु के शरीर को दी (यशायाह 53:4–10)।

"क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।" (रोमियों 8:3)

प्रेम, अनुग्रह और दया परमेश्वर के परम गुण हैं। उसने स्वेच्छा से हमारी सजा को सह लिया ताकि ईश्वरीय न्याय/इन्साफ को तृप्त करे, और ऐसा करके उसने अपने महानतम् और परम गुणों को प्रगट किया। मनुष्य का सृजन/रचना करने के लिये परमेश्वर ने मनुष्य को मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया (उत्पत्ति 2:7)। जबकि मनुष्य को पाप से छुड़ाने/आजाद करने के लिये, अर्थात् पापी मनुष्य का परमेश्वर से मेल–मिलाप कराने के लिये, परमेश्वर को स्वयं निन्दित होना पड़ा, शापित होना पड़ा, मार सहनी पड़ी, कोड़े खाने पड़े और खून की हर एक बूँद को बहा कर मर जाना पड़ा (इब्रानियों 9:22)। यदि परमेश्वर चाहता तो इस दुनिया को धो कर साफ कर देता और फिर से इस दुनिया की एक नई शुरुआत करता परन्तु परमेश्वर के हृदय में आपके लिये जो असीम प्रेम था वह इस बात से प्रगट होता है कि उसने स्वेच्छा से आपकी सजा को गले लगाया और आपकी मौत की सजा उसने सह ली।

अनुग्रह का सुसमाचार यह घोषणा करता है कि आपके पापों का लेखा दर्ज किया गया था, उनका मूल्यांकन किया गया था और उसकी सजा भी मिली परन्तु उसकी सजा किसी और के शरीर को सहनी पड़ी, ताकि हम आजाद हो जायें। आपके अतीत, वर्तमान और भविष्य के सभी पाप का न्याय हो चुका है। यही हकीकत दोष, शर्मिन्दगी और अनिश्चितता से आजाद करती है। अब आपको अपने पापों के न्याय और सजा से डरने की आवश्यकता नहीं है। विधि–सम्मत (legalistic) मसीही तर्क (reasoning) इस अनुग्रह की शिक्षा को खतरनाक समझते हैं क्योंकि वे डर को प्रेम से अधिक बड़ा/महान प्रेरक (motivator) या नियंत्रक (controller) मानते हैं। जबकि परमेश्वर बिल्कुल इससे अलग सोच रखता है। परमेश्वर इस बात के प्रति आश्वस्त है कि राष्ट्रों और लोगों को मन फिराव की ओर लाने के लिये सबसे सफल उपकरण एवं साधन सतत् प्रेम और भलाई हैं (रोमियों 2:4)।

"इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है वैसे ही संसार में हम भी हैं। प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है। क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।" (1 यूहन्ना 4:17–18)

परमेश्वर पिता चाहता है कि आपकी आज्ञाकारिता का हर एक मकसद और भरोसा उसके प्रेम पर आधारित हो। उसने खुलेआम अपने पुत्र को सजा दी ताकि आपका हृदय कभी भी भय से भरकर प्रतिक्रिया न दे। परमेश्वर आपको आपके पापों के लिये सजा नहीं देगा क्योंकि यदि वह आपको सजा देता है तो ऐसा करने के द्वारा वह अपने पुत्र यीशु के योग्य बलिदान को नकार रहा होगा या उसका खंडन कर रहा होगा अथवा उसे

अस्वीकार कर रहा होगा। एकमात्र पाप जो यीशु के बलिदान के द्वारा नहीं ढका गया (अथवा समाधान नहीं किया गया) वह अविश्वास का पाप और यीशु को अस्वीकार करने (ग्रहण न करने) का पाप है।

आजकल के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अक्सर कयामत और संसार के विनाश और अन्त की भविष्यवाणियाँ की जाती हैं। परन्तु उन भविष्यद्वाणियों के ठीक उलट/विपरीत परमेश्वर संसार का उनके पापों के कारण न्याय नहीं कर रहा है और न ही सजा दे रहा है (2 कुरिन्थियों 5:18–19)। जब यीशु अपने चेलों के साथ सामरिया के एक गाँव में गया और उस गाँव के लोगों ने यीशु का तिरस्कार किया, तब यीशु के चेलों ने अपनी समझ के अनुसार उस गाँव के लोगों के लिये एक सजा ठहराई। चेलों ने सोचा कि उन लोगों के लिये उपयुक्त एवं सही सजा यह है कि स्वर्ग से आग गिर कर उन्हें भस्म करे।

"यह देख कर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा, 'हे प्रभु, क्या तू चाहता है कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे?' परन्तु उसने फिरकर उन्हें डाँटा और कहा, 'तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों का नाश करने नहीं वरन् बचाने के लिये आया है।' और वे किसी दूसरे गाँव में चले गए।" (लूका 9:54–56)

यीशु ने उन्हें डाँटा और उनके मकसद को शैतान की ओर से प्रेरित बताया। यीशु मनुष्यों के बचाने के लिये आया न कि उनका नाश करने के लिये और यीशु आज भी बदला नहीं है (इब्रानियों 13:8)। एक दिन आयेगा जब यीशु जगत का न्याय करेगा। उस दिन सब लोग यीशु के सामने खड़े होंगे परन्तु उस दिन के आने तक परमेश्वर जगत के पापों का न्याय नहीं कर रहा है। मनुष्य का एकमात्र पाप जिसका न्याय के दिन न्याय किया जायेगा, वह है अविश्वास/यीशु पर विश्वास न करने का पाप अथवा यीशु और उसके बलिदान का तिरस्कार करने का पाप (मरकुस 16:16)। यीशु पर भरोसा रखने वाले विश्वासी के रूप में आप अभी और अनन्तकाल के लिये पाप के दोष से एवं दण्ड से पूरी तरह आजाद हैं।

पूरा किया हुआ कार्य

सुसमाचार परमेश्वर के द्वारा पूरे किये गये कार्य का सन्देश है, जो कि मनुष्य के लिये अर्थात परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के लिये शर्तरहित प्रेम और भलाई को ठोस तरीके से प्रगट करता है। सुसमाचार का सन्देश यह नहीं है कि परमेश्वर क्षमा करेगा, चंगा करेगा और

छुटकारा देगा, परन्तु वह तो आपको क्षमा कर चुका है, चंगा कर चुका है और छुटकारा दे चुका है। पिता ने आप से और संसार से मेल–मिलाप कर लिया है (2 कुरिन्थियों 5:18–19)।

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे।" (रोमियों 5:8–10)

दोस्तों, जब हम परमेश्वर के विरोधी और शत्रु थे तभी परमेश्वर ने हमारा मेल–मिलाप अपने आप से कर लिया। एक विरोधी या शत्रु पाश्चाताप नहीं करता है; प्रार्थना उपवास नहीं करता है और बुराई से फिरकर आज्ञा पालन नहीं करता है। परमेश्वर ने अपने महान प्रेम को हमारे प्रति ऐसे प्रगट किया कि जब हम परमेश्वर के विरोधी और शत्रु थे, उसी समय उसने हर भली वस्तु की हम पर वर्षा कर दी। यह सच्चाई विधि सम्मत सोच पर प्रहार करती है और इस सोच पर भी घातक प्रहार करती है कि हमारे भले कार्यों के कारण परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया। परमेश्वर के प्रेम के पात्र बनने के लिये कोई भी ऐसा कार्य नहीं है जो आप कर सकें। आप परमेश्वर को क्षमा करने, चंगाई देने, आशीष और छुटकारा देने के लिये विवश/मजबूर नहीं कर सकते हैं क्योंकि यह सब परमेश्वर आपके लिये पहले ही कर चुका है। नीचे दिये गये चंगाई और छुटकारे के पदों पर ध्यान दें जो कि भूतकाल (past tense) में हैं।

"उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया है।" (कुलुस्सियों 1:13)

"वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर कर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ : उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" (1 पतरस 2:24)

विश्वास के द्वारा ग्रहण किया जाना

जो भी आपकी आत्मा, प्राण और शरीर के छुटकारे के लिये आवश्यक था, सब कुछ भले पिता ने पूरा कर दिया बिना आपकी स्वेच्छा (free will) को नियंत्रित किये हुए।

अनुग्रह के सुसमाचार के प्रति हम या तो विश्वास प्रगट कर सकते हैं या फिर अविश्वास की प्रतिक्रिया कर सकते हैं। विश्वास महज उस बात/कार्य पर भरोसा करना है जो कि परमेश्वर आपके लिये कर चुका है।

जो कुछ भी परमेश्वर ने अनुग्रह से हमारे लिये किया है उसे ग्रहण करने की आत्मिक प्रतिक्रिया ही विश्वास है (इफिसियों 2:8)। विश्वास परमेश्वर के द्वारा हमें प्रदान की गई पापों की क्षमा अर्थात् अतीत, वर्तमान और भविष्य के पापों की क्षमा को ग्रहण करना है और स्वीकार करना है। विश्वास यीशु के घावों के द्वारा प्रदान की गई चंगाइ को ग्रहण करना है। विश्वास अंधकार के वश से प्रदान किये गये छुटकारे और आजादी को ग्रहण करना है। जो आशीषें परमेश्वर ने हमें उपलब्ध कराई हैं, विश्वास उनका लुफ्त उठाता है। यीशु के द्वारा मनुष्य और परमेश्वर के कराये गये मेल–मिलाप का विश्वास आनन्द लेता है।

नीचे यूहन्ना 1:12 में देखें कि किस प्रकार से विश्वास का सीधा सम्बन्ध ग्रहण करने से है।

"परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।" (यूहन्ना 1:12)

दोस्तो, परमेश्वर के अनुग्रह की भलाई बहुत गहरी और असाधारण है। चाहे आप अनुग्रह की सच्चाई को जानने की भूख/इच्छा रखते हैं या फिर अनुग्रह को समझ पाना आपको कठिन जान पड़ता है, मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि अनुग्रह पर आधारित मेरी पुस्तक प्राप्त करें। पढ़ें और जानें कि किस प्रकार से अनुग्रह आपके आत्मिक जीवन को मौलिक रूप से/जड़ से बदल सकता है। मेरी पुस्तक का नाम है "अनुग्रह : परमेश्वर के हृदय का प्रगटीकरण" (Grace: God's Heart Unveiled)।

मेरी उपरोक्त पुस्तक के बारे में अधिक जानकारी के लिये Amazon. com पर खोजें।

व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से ध्यान देने के लिये व्यवहारिक सवाल :

1. इस अध्याय को पढ़ने से पहले आपके अनुसार अनुग्रह की परिभाषा क्या थी? परमेश्वर के अनुग्रह को समझने और जानने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?

2. इस अध्याय को पढ़ने से पहले क्या कुछ ऐसी शर्तें थीं जिन्हें आप सोचते थे कि परमेश्वर से आशीष, क्षमा और चंगाई प्राप्त करने से पहले पूरा करना आवश्यक है?

3. परमेश्वर को लेकर आपका जो नजरिया था, क्या वह ज्यादा व्यवस्था पर आधारित था, मिश्रित था, या फिर अनुग्रह पर आधारित था? क्या इस अध्याय ने सुसमाचार को लेकर पहले जो नजरिया आपका था उस नजरिये को बदला है? यदि हाँ, तो कैसे?

4. किस प्रकार से वाचाओं की भिन्नता की समझ की कमी के कारण बहुत से लोग परमेश्वर की भलाई को ग्रहण कर पाने में नाकाम हो सकते हैं? आत्मिक जीवन में उस समय के बारे में सोचें जब आपको आपकी प्रार्थना का उत्तर परमेश्वर से प्राप्त नहीं हुआ? क्या आपको ऐसा लगता है कि अनुग्रह की समझ की कमी के कारण आपको अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं प्राप्त हो सका और क्या आप व्यवस्था के अनुसार उन प्रार्थनाओं का उत्तर अर्जित करने/कमाने या हासिल करने के लिये प्रयासरत् थे?

5. क्या आप अपने पापों की सजा के भय से संघर्ष करते हैं? क्या पाप का दोष/ग्लानी और लज्जा आपके आत्मिक जीवन की राह में आपका शत्रु बना हुआ है? किस प्रकार से यह एहसास कि यीशु ने आपके पापों को और आपकी सजा को ले लिया आपको इस भावनात्मक संघर्ष से आजाद करता है?

6. किस प्रकार से इस बात को जानने से आपका ह्दय शान्ति और सुकून महसूस करता है कि परमेश्वर का सारा कार्य पूरा हो चुका है?

7. आपके अनुसार विश्वास की परिभाषा क्या है? क्या आप परमेश्वर से आशीष पाने के लिये विश्वास को प्रेरक समझते/मानते थे? या क्या आप मानते थे कि हमारी विश्वास परमेश्वर अपने प्रेम और भलाई का प्रतिक्रिया है?

8. क्या अनुग्रह का सुसमाचार, व्यवस्था आधारित सुसमाचार की तुलना में खोये हुओं को जीतने में अधिक प्रभावी और कारगर है? खोये हुओं को जीतने और प्रभु के पास लाने में किस प्रकार से यह अधिक प्रभावी है?

5

छुटकारा

“जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया। क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गई, और बहुत से लकवे के रोगी और लंगड़े भी अच्छे किए गये। और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।” (प्रेरितों 8:4–8)

यीशु मसीह का सन्देश ही एकमात्र ऐसा सन्देश है जिसमें मनुष्यों को छुटकारा देने की सामर्थ्य है। बाईबिल में और भी कई महत्वपूर्ण शिक्षायें पायी जाती हैं, फिर भी उन में से किसी में भी आपको और संसार को छुटकारा देने की सामर्थ्य नहीं पायी जाती है। पवित्र आत्मा को यीशु की महिमा करने के लिये भेजा गया है (यूहन्ना 16:14)। आप पवित्र शास्त्र के किसी भी भाग को ऐसे ही सिखाने का निर्णय नहीं ले सकते। यदि हम चाहते हैं कि लोग छुटकारा पायें तो फिर हमें अपने विश्वास और प्रचार का केन्द्र यीशु को ही बनाना होगा। यीशु का सन्देश न सिर्फ खोए और भटके हुओं के लिए है परन्तु उसका सन्देश उद्धार पाये हुओं के लिये भी है। हम देखेंगे कि छुटकारे में केवल पापों की क्षमा नहीं पाई जाती है, और भी बहुत कुछ पाया जाता है और सिर्फ यीशु ही हर आवश्यकता का एकमात्र उत्तर और समाधान है।

बड़े ही दुख की बात है कि बहुत–सी कलीसियाओं में पुराने नियम के बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित बाईबिल के कुछ सूत्रों के अनुसार तीन, पाँच या दस बिन्दु (point) का धर्मोपदेश (sermon) प्रचार किया जाता है। दोस्तों, आप अपनी कमाई का दशमांश दे सकते हैं और उस दशमांश पर भरोसा कर सकते हैं कि जब आपको आर्थिक आवश्यकता होगी तो आपका दिया गया दशमांश जरुरत के समय आपको बचाएगा और आपकी रक्षा करेगा। ऐसा करने के द्वारा आप यीशु पर विश्वास और भरोसा न कर के अपने उस दश मांश पर आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये विश्वास, और भरोसा जता रहे होंगे। यह बहुत ही खतरनाक है। दोस्तों, 2 इतिहास 7:14 के अनुसार आप इस उम्मीद के साथ प्रार्थना, उपवास और पश्चाताप कर सकते हैं कि परमेश्वर आपकी परिस्थितियों को बदलेगा बिना यीशु की ओर देखे हुए भी कर सकते हैं। ऐसा करने से आप यीशु के द्वारा पूरे किये गये उस कार्य पर बिना विश्वास करे आत्मिक महनत कर सकते हैं। आज बहुत से विश

वासी आत्मिक जिमनास्टिक (spiritual gymnastics) करने में लगे हुए हैं। वे यीशु में गहराई तक मजबूत जड़ पकड़े बिना बाईबिल के एक निर्देश से दूसरे निर्देश पर उछल–कूद करने में लगे हुए हैं। आईये, हम इस गलती को करने से बचें। यदि हम नये–नियम जैसे परिणाम देखना चाहते हैं वे परिणाम जो यीशु और प्रेरितों की सेवकाई में दिखाई देते थे, तो हमें सिर्फ यीशु की ओर देखना/ताकना है (इब्रानियों 12:2)। यीशु ही केवल अल्फा और ओमेगा है, केवल उसी की ओर ध्यान दें।

क्या मैं आपको पुराना नियम पढ़ने से मना या हतोत्साहित कर रहा हूँ? नहीं, बिल्कुल नहीं। पुराना नियम बहुत ही लाभदायक है, विशेषकर तब, जब कि हम उसके हर कोण और बिन्दु में यीशु को देखते हैं। जबकि यीशु आ चुका है तो हमें उसकी परछाई या झलक जो कि पुराने नियम में दिखाई पड़ती है, उसे देखने की भला क्या जरुरत, हम तो साक्षात यीशु को देखना चाहेंगे न कि उसकी परछाई को। क्या मैं आपको दशमांश दान देने से मना कर रहा हूँ? बिल्कुल नहीं। मैं स्वयं भी दशमांश देता हूँ। लेकिन मैं इसलिये दशमांश देता और दान देता हूँ क्योंकि मैं यीशु पर भरोसा करता हूँ।

मसीह के सन्देश पर जब सही तरह से विश्वास किया जायेगा और उसका विश्वास के साथ प्रचार किया जायेगा तो हमेशा आलौकिक परिणाम सामने आयेंगे। फिलिप्पुस ने साहस के साथ यीशु का प्रचार किया और लोगो में से दुष्ट–आत्मायें निकलीं और लंगड़े चलने लगे। पूरे नगर ने आनन्द का अनुभव किया। मैं ऐसा परिणाम देखना चाहता हूँ... आप कैसे परिणाम की इच्छा रखते हैं?

यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान यीशु मसीह के सन्देश की तीन मुख्य बातों का हमें प्रचार करना चाहिये। ऐतिहासिक रूप से यदि हम बात करें तो हम पाएंगे कि यीशु की मृत्यु ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया और उसके बाद उसके पुनरुत्थान ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। यद्यापि यीशु ने इस पृथ्वी पर मनुष्य रूप में जो जीवन जिया, वह भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हमारा छुटकारा न सिर्फ यीशु की मृत्यु में, परन्तु उसके पुनरुत्थान और जीवन में भी है; इसलिये हमें तीनों का अर्थात् उसके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रचार करना चाहिये। जैसे कि हम देखते हैं कि छुटकारा तब शुरू हुआ जब यीशु का जन्म हुआ, और छुटकारा उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ सिद्ध अर्थात् पूरा हुआ। उसके छुटकारा देनेवाले जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का यह सन्देश ही हमारे सभी संघर्षों और जरुरतों का निवारण या उपाय परमेश्वर के द्वारा ठहराया गया है।

यहाँ पर यीशु के द्वारा प्रदान किये गये छुटकारे के पाँच क्षेत्रों की पड़ताल करेंगे, हालांकि उसके छुटकारे के और भी बहुत से क्षेत्र पाये जाते हैं। ये पाँच क्षेत्र मनुष्य की

सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं, और मैं भरोसा करता हूँ कि परमेश्वर और भी ऐसे क्षेत्र आप पर उजागर या प्रगट करेगा।

अज्ञानता और धोखा खाने से छुटकारा

मनुष्य परमेश्वर से अलग और दूर हो गया और उसकी महिमा को देखने और समझने से वंचित हो गया। मनुष्य इस योग्य नहीं रहा कि परमेश्वर की महिमा को देख और समझ सके। पाप के कारण परमेश्वर को लेकर हमारी समझ या सोच भी विकृत हो गयी। कोई भी मनुष्य इस स्थिति में नहीं रहा कि परमेश्वर को सही तरह से जान या समझ सके। परमेश्वर को समझने या सही तरह से जान पाने में असमर्थ था। परमेश्वर को जान और समझ पाने की अक्षमता/आयोग्यता एवं असमर्थता से छुटकारे की मनुष्य को आवश्यकता थी। यहूदी अगुवे भी यीशु को पहचान पाने में असमर्थ रहे; उसे पहचान न सके और उसे अस्वीकार कर दिया (यूहन्ना 5:39–40)।

"वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना। वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। (यूहन्ना 1:10–11)

पुराने नियम में परमेश्वर ने बहुतों से भविष्द्वक्ताओं के द्वारा तो कुछ से स्वप्नों में, अन्य से दर्शन में, एक बार जलती हुई झाड़ी में से बातें की परन्तु ये सभी भविष्यद्वक्ता परमेश्वर को सही प्रकार से दर्शा पाने, प्रदर्शित करने, उसका वर्णन कर पाने में विफल रहे। इस कारण यीशु को पृथ्वी पर भेजा गया ताकि परमेश्वर को लोगों पर दर्शा सके और प्रगट कर सके, पिता को सही तरह से प्रगट कर सके मनुष्यों पर।

"पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप दादों से थोड़ा–थोड़ा करके और भाँति–भाँति से भविष्यद्व क्ताओं के द्वारा बातें कर इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सृष्टि की रचना की है। वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है" (इब्रानियों 1:1–2)

यीशु परमेश्वर की मातृभाषा है, वह भाषा जिसके द्वारा परमेश्वर अपने हृदय और स्वभाव को सही रूप में, और सम्पूर्णता में बताता और प्रगट करता है। यीशु परमेश्वर पिता की बिल्कुल सही और सटीक अभिव्यक्ति है, वह कार्य या वर्णन जो कोई भी भविष्यद्वक्ता न कर सका। सच्चाई के लिये हम पूरी तरह से यीशु पर निर्भर और आश्रित है, और यीशु से

हटकर यदि हम परमेश्वर को जानने और समझने की कोशिश करेंगे तो विफल होंगे। निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें :

"इसीलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची। परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया।" (यूहन्ना 1:17–18)

"फिलिप्पुस ने उससे कहा, ''हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे, यही हमारे लिये बहुत है।'' यीशु ने उससे कहा, ''हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिनों से तुम्हारे साथ हूँ। क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है। तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा। क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? ये बातें जो मैं तुझसे कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।" (यूहन्ना 14:8–10)

"वह (यीशु) तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।" (कुलुस्सियों 1:15)

वचन का हर भाग/हिस्सा परमेश्वर का आंशिक प्रकाशन है और मनुष्य उसकी व्याख्या कर पाने में असफल/विफल रहा है। लेकिन जब हम यीशु के जीवन को देखते हैं कि उसने क्या किया और क्या नहीं किया तो हम उसमें परमेश्वर पिता को देखते हैं। यीशु ने हर एक को जो उसके पास आया था, चंगाई और छुटकारा दिया (लूका 6:17–19)। यीशु ने सभी पर दया की, उन पर भी जो उसे क्रूस पर चढ़ा रहे थे (लूका 23:34)।

यीशु ने किसी को बीमार या रोगी नहीं किया और न ही उसने लोगों को सताने वाली दुष्टआत्माओं को कभी बर्दाश्त किया या ऐसा होने दिया कि दुष्टआत्मा किसी को सताती रहें। यीशु परमेश्वर के हृदय और स्वभाव का चलता–फिरता प्रगटीकरण या प्रकाशन था। न सिर्फ यीशु का जीवन परन्तु उसकी मृत्यु भी परमेश्वर की भलाई को प्रगट करती है।

"परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:8)

यूनानी शब्द "सुनिस्टाओ" का मतलब है 'प्रगट करना' या 'अनुमोदन करना' है। परमेश्वर ने अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा 'हमारे प्रति अपने महान प्रेम को प्रगट किया है और उसका अनुमोदन किया है हमेशा के लिये।' आपकी परिस्थितियाँ आपको परमेश्वर के

प्रेम के योग्य एवं उसके प्रेम का पात्र नहीं बना सकती हैं। अपनी निगाहों एवं ध्यान को अपनी वर्तमान परिस्थितियों से हटा कर क्रूस की ओर लगायें। तब आप आनन्द से भर जायेंगे और आपकी परिस्थितियाँ भी बदल जायेंगी।

क्रूस परमेश्वर के प्रेम का महानतम् प्रदर्शन था परन्तु यीशु का पुनरुत्थान परमेश्वर की सामर्थ्य का महानतम् प्रदर्शन था। आपको अपने अनन्तकाल (eternity) पर सन्देह नहीं करना चाहिए क्योंकि मृत्यु की हार हो चुकी है और हमारा राजा जीवित है।

"और उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है... जो उसने मसीह में किया कि उसको मरे हुओ में से जिलाया..." (इफिसियों 1:19–20)

दोस्तो, यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान हमें सब धोखे और विकृति से छुटकारा देते हैं ताकि हम सही और सटीक प्रकार से परमेश्वर को जान सकें और उस पर पूरा भरोसा रख सकें।

<u>व्यवस्था से छुटकारा</u>

परमेश्वर ने मूसा के द्वारा जो व्यवस्था दी थी उसमें आज्ञायें और बहुत सी विधियाँ और न्यायिक आज्ञायें पायी जाती थीं। व्यवस्था पवित्र और आज्ञायें ठीक और अच्छी हैं (रोमियों 7:12)। तो भी मनुष्य को धर्मी बनाने में व्यवस्था विफल एवं असमर्थ रही (गलातियों 3:21–22)।

परमेश्वर की आशीष के बदले में व्यवस्था हमसे माँग करती है आज्ञाकारिता, स्वधर्मी होने और अच्छे कार्य और प्रदर्शन की। जब हम आज्ञाकारी, स्वधर्मी बने रहते हैं और अच्छे कार्य करते हैं तो परमेश्वर की आशीष, भलाई और अनुग्रह कमाया या अर्जित किया जाता है। परमेश्वर ने कभी भी नहीं चाहा कि मनुष्य व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता को खोजे। व्यवस्था देने का उद्देश्य/मकसद यह था कि मनुष्य की स्वधार्मिकता को कुचला एवं नष्ट किया जायें (रोमियों 3:19–20) ताकि मनुष्य यीशु पर भरोसा रखे, उस यीशु पर जो अकेला ऐसा व्यक्ति है, जिसने व्यवस्था की सभी माँगों को पूरा किया।

यीशु के आने से पहले पुराने नियम के वायदे व्यवस्था के साथ अभिन्न रूप से जुड़े थे और उन्हें व्यवस्था से अलग करके नहीं देखा जा सकता था। और वायदों को प्राप्त करने के लिये व्यवस्था की माँग को हर हाल में पूरा करना पड़ता था। इन पदों पर ध्यान दें : निर्गमन 15:26; 2 इतिहास 7:14; मलाकी 3:10–12; व्यवस्थाविवरण

7:11–16; व्यवस्थाविवरण 28:1–68। परन्तु जब यीशु का इस संसार में जन्म हुआ, तब वह व्यवस्था के आधीन इसलिये पैदा हुआ ताकि हमें व्यवस्था से आजाद कराये और छुटकारा दे।

"परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हमको लेपालक होने का पद मिले।" (गलातियों 4:4–5)

व्यवस्था ने अपना काम बखूबी किया, परन्तु यीशु के आने के बाद से हमें व्यवस्था की कोई जरुरत नहीं है (गलातियों 3:19–25)। करूणामय और दयावन्त परमेश्वर ने कभी नहीं चाहा था कि व्यवस्था मनुष्यों पर हुक्म चलायें एवं तानाशाही करे और न ही परमेश्वर ने कभी उसकी भलाई और उपस्थिति का आनन्द और लाभ लेने से मनुष्य को वंचित रखना चाहा। व्यवस्था इसलिये दी गई ताकि यीशु उसे पूरी करे।

"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं परन्तु पूरा करने आया हूँ।" (मत्ती 5:17)

चरनी में एक बालक के रूप में से लेकर युवावस्था तक और अपनी मृत्यु तक यीशु ने पूरी तरह से प्रत्येक आज्ञा का पालन किया और व्यवस्था की हर एक माँग को पूरा किया। हर दिन के हर एक क्षण में यीशु ने अपने पूरे हृदय, प्राण और शक्ति से परमेश्वर से प्रेम किया, उसने अपने पड़ोसी से प्रेम किया, कभी झूठ नहीं बोला, लालच नहीं किया, कभी किसी कामुक विचार को अपने अंदर नहीं आने दिया। यीशु ने आपके लिये पूरी तरह से व्यवस्था की हर एक माँग को पूरा कर दिया है। यीशु ने उन माँगों को पूरा कर दिया आपके स्थान पर जिन माँगों को आप पूरा नहीं कर सकते थे। अपने जीवन के द्वारा यीशु ने अपने लिये कुछ भी नहीं परन्तु आपके लिये सब कुछ पूरा किया है। अन्तिम सांस लेने से पहले यीशु ने कहा, "पूरा हुआ।" क्या खत्म या पूरा हुआ? क्या उसकी पृथ्वी की सेवकाई का कार्य पूरा हुआ? क्या मनुष्य के प्रायश्चित का कार्य पूरा हुआ? नहीं, यीशु ने व्यवस्था को पूरा किया! आपके लिये व्यवस्था की हर एक आज्ञा को पूरा किया गया, ताकि आप परमेश्वर की भलाई और उपस्थिति का सेंतमेंत आनन्द ले सकें। इसी कारण परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञायें आपके लिये "हाँ" हैं।

"क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञायें हैं, वे सब उसी में 'हाँ' के साथ हैं...।" (2 कुरिन्थियों 1:20)

यीशु की आज्ञाकारिता के जीवन ने आपको हर एक आशीष के योग्य बना दिया है (कुलुस्सियों 1:12–14)। यीशु की आज्ञाकारिता के कारण आप अपनी परिस्थितियों पर यीशु की भलाई को विश्वास के साथ चढ़ाई करते हुए देख सकते हैं। न सिर्फ इतना परन्तु अपनी अनाज्ञाकारिता की सजा को आपको कभी भी भुगतना न पड़ेगा क्योंकि आपकी अनाज्ञाकारिता के श्राप को यीशु ने अपने ऊपर ले लिया।

"मसीह ने जो हमारे लिये श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है। यह इसलिये हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्य जातियों तक पहुँचे और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।" (गलातियों 3:13–14)

दोस्तो, व्यवस्था से आपका छुटकारा हो गया है और सुसमाचार इसी छुटकारे की अच्छी खबर अथवा शुभ समाचार है। व्यवस्था मनुष्य को पवित्र और धर्मी बनाने में नाकाम रही। परमेश्वर को स्वयं व्यवस्था (पहली वाचा) में कमी और दोष दिखाई दिया और उसने स्वयं व्यवस्था को जीर्ण ठहराया है (इब्रानियों 8:7–8,13)। क्रूस पर यीशु के द्वारा किया गया कार्य हमारे अंदर बदलाव लाता है और परमेश्वर की भलाई हमें मन–फिराव की ओर ले चलती है (2 कुरिन्थियों 5:17; रोमियों 2:4)।

"क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।" (रोमियों 10:4)

मसीह के पास आने वाले ज्यादातर विश्वासियों ने सुसमाचार का यह भाग नहीं सुना या समझा होता है, इस कारण वे बन्धनों में जकड़े हुए बन्धुआई का जीवन जी रहे हैं। वे अनुग्रह के द्वार से भीतर प्रवेश तो कर जाते हैं परन्तु वे व्यवस्था की माँगों के जाल में फँसकर और अधिक आज्ञाकारी बनना चाहते हैं, और चंगाई, छुटकारा और शान्ति पाने के लिये और अधिक आज्ञाकारी और पवित्र बनने की खोज में लगे हैं। वे लगातार कोशिश करते रहते हैं पर कभी भी चंगाई, शान्ति और छुटकारा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। दोस्तो, ठीक वैसे ही अपनी स्वतंत्रता में स्थिर रहो जैसे कि प्रेरित पौलुस कहते हैं :

"मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है, अतः इसी में स्थिर हो, और दासत्व के जुए में फिर से न जुतो।" (गलातियो 5:1)

पाप, अलगाव और मृत्यु से छुटकारा

सुसमाचार कोई ऐसा नहीं है कि क्रोधित, धर्मी परमेश्वर खून की कुर्बानी/बलिदान की माँग कर रहा हो पापी मनुष्य को स्वीकार करने और उनसे मेल करने के लिये अपने पुत्र यीशु के बलिदान की माँग। दोस्तो, परमेश्वर से मनुष्य का अलगाव परमेश्वर की ओर से नहीं परन्तु मनुष्य की ओर से हुआ और पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से अलग कर दिया एवं वर्जित कर दिया। पाप परमेश्वर को मनुष्य से अलग न कर सका एवं वर्जित न कर सका। आदम और हव्वा के पाप करने के तुरन्त बाद परमेश्वर उन्हें ढूँढ़ता/खोजता हुआ आया। आदम और हव्वा परमेश्वर से छिप रहे थे, परमेश्वर उन से नहीं छिप रहा था। जब कैन ने अपने भाई हाबिल को घात कर दिया, तब परमेश्वर कैन के पास बोलता हुआ पहुँचा। जब कैन ने परमेश्वर की आवाज सुनी तो उसे अचम्भा नहीं हुआ। ऐसा नहीं था कि इससे पहले कैन परमेश्वर की आवाज से भली–भाँति परिचित था, उसे पहचानता था क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को कभी नहीं त्यागा था। जब यीशु इस पृथ्वी पर पूरी तरह से मनुष्य बन कर आया तो बिना किसी रूकावट के उसने लोगों से बातचीत की, और यहाँ तक की उस पर "पापियों का मित्र" होने का आरोप भी लगाया गया। दोस्तो, हमें यह समझना चाहिये कि यीशु ने मनुष्यों के प्रायश्चित के लिये जो कार्य किया और बलिदान दिया वह परमेश्वर को मनुष्य से मिलाने के लिये नहीं परन्तु मनुष्य को परमेश्वर से मिलाने के लिये था।

"ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल–मिलाप कर लिया, और मेल–मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल–मिलाप कर लिया और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उसने मेल–मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।" (2 कुरिन्थियों 5:18–19)

परमेश्वर के साथ मनुष्य का जो रिश्ता था उसे पाप ने नष्ट कर दिया और हमें पमरेश्वर से अलग कर दिया। पाप ने परमेश्वर के स्वभाव और हृदय के प्रति हमारे सोच को भी बर्बाद कर दिया और परमेश्वर की भलाई को प्राप्त एवं अनुभव करने से हमें वंचित कर दिया। इस तरह से पाप हमारी आत्मा, प्राण, और शरीर में मृत्यु को ले आया। जीवन के स्त्रोत से अलग होकर मनुष्य मृत्यु को अनुभव करने लगा।

यीशु का जीवन एक प्रेमी एवं दयालु पिता के द्वारा दुष्ट और भ्रष्ट मनुष्यों को गले लगाने की प्रगट अभिव्यक्ति है और यह सब (दुष्ट और भ्रष्ट मनुष्यों को प्रेम से गले लगाना) परमेश्वर ने यीशु के बलिदान होने से पहले ही किया था। धर्म ने पाप को परमेश्वर के प्रेम से अधिक बड़ा बनाकर पेश किया है और हम में से बहुतों को यह यकीन दिला दिया है कि यीशु के लहू बहाने से पहले तक परमेश्वर मनुष्य से क्रोधित था और मनुष्य को

अपने से दूर खदेड़ रखा था। दोस्तों, ऐसा बिल्कुल नहीं है। यीशु का जीवन परमेश्वर के द्व ारा लोगों को किये गये कोमल स्पर्श को प्रगट करता है और ऐसा परमेश्वर ने तब किया जब हम पापी ही थे।

"क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे।" (रोमियों 5:10)

परमेश्वर ने, जब हम बैरी ही थे, अपने साथ हमारा मेल–मिलाप कराया। यीशु की मृत्यु ने उस रूकावट और दूरी को जिसे पाप ने बनाया, पूरी तरह से खत्म कर दिया; अब हम परमेश्वर के साथ एक हो गए हैं। अब हमारा मेल परमेश्वर के साथ हो चुका है, और विश वास के द्वारा हम उसके जीवन के भागी हो सकते हैं। जैसे ऊपरी वचन में लिखा है कि ''उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे,'' उद्धार का मूल यूनानी शब्द है ''सोज़ो''। सोज़ो का अर्थ केवल पापों की क्षमा अर्थात् आत्मिक मुक्ति नहीं परन्तु शारीरिक चंगाई, शैतानी शक्तियों से छुटकारा और हर एक बंधन से मुक्ति भी है। जो रूकावट और दूरी पाप ने मनुष्यों के और परमेश्वर के बीच में पैद किया, जिसके द्वारा मृत्यु आई (रोमियों 5:12), यीशु के पूरे किए गए कार्य ने हमें उससे पूरा छुटकारा दिया और हम जीवन का आनन्द ले सकते हैं अनन्त जीवन का जो परमेश्वर से मेल–मिलाप हो जाने के कारण हमें प्राप्त हुआ है।

पाप महज कोई क्रिया या कार्य मात्र नहीं है; पाप एक भ्रष्ट स्वभाव है एवं एक शक्ति (सामर्थ्य) है। यीशु ने न सिर्फ हमारे पापों और पाप के परिणाम (सजा) को अपने ऊपर ले लिया, परन्तु हमारे पापमय स्वभाव के साथ वह स्वयं पाप बन गया और हमारे जीवन के ऊपर से उसने पाप की शक्ति (सामर्थ्य) को तोड़ डाला। उसका छुटकारा देने वाला कार्य करने आप में पूर्ण (पूरा) था।

"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" (2 कुरिन्थियों 5:21)

वह (परमेश्वर) अपने पुत्र के लहू के द्वारा हमें धार्मिकता का मुफ्त दान देता है। निष्पाप मनुष्य की धार्मिकता का नहीं परन्तु सिद्ध परमेश्वर की धार्मिकता का वरदान। यीशु के लहू के द्वारा धर्मी ठहराये जाने के बाद अब कभी भी हमें अपने पापों की सजा का सामना नहीं करना पड़ेगा (रोमियों 5:9)।

बीमारी और दुर्बलता से छुटकारा

आरम्भ में जब परमेश्वर ने संसार और मनुष्य की सृष्टि की थी, तब उसने सब कुछ अच्छा बनाया था (उत्पत्ति 1:31); कहीं भी किसी प्रकार की कोई पीड़ा, बीमारी और यातना नहीं पाई जाती थी। परन्तु जब मनुष्य ने पाप किया तब इस संसार में मृत्यु ने प्रवेश किया (रोमियों 5:12)।

मृत्यु ने बीमारी को उत्पन्न किया। यदि शरीर का कोई अंग रोगी हो गया है तो वह अंग अन्त में एक दिन काम करना बन्द कर देगा और शरीर के उस अंग के काम करना बन्द कर देने के कारण पूरा शरीर मर जायेगा। शैतान बीमारी और दुर्बलता का इस्तेमाल करता है ताकि चोरी, हत्या और नाश कर सके (अय्यूब 2:7; लूका 13:10–16; प्रेरितों 10:38)। बीमारी हमारी तन्दुरूस्ती को लूट/चुरा लेती है। रोग हमारे प्रिये लोगों को/अजीजों को हम से चुरा लेता है।

यीशु के जीवन के द्वारा परमेश्वर ने हर तरह की बीमारी और दुर्बलता को नाश कर दिया है (मत्ती 4:23–24; 12:15; 14:14; 15:30–31)। यीशु ने कभी भी किसी बीमारी को बर्दाश्त नहीं किया और न ही कभी उसने किसी बीमार को चंगा न करने का कोई बहाना बनाया। यीशु के जरिये परमेश्वर ने यह प्रगट किया कि परमेश्वर चाहता है कि हर एक जो विश्वास के साथ उसके पास आता है, निश्चय ही उसे रोग और बीमारी से चंगाई मिले (मरकुस 1:40–42; लूका 6:17–19)।

मनुष्य के पाप के कारण मृत्यु जगत में आई और यीशु ने हमारे लिये उसका निवारण किया है इस कारण हम इस बात को जान पाते हैं कि परमेश्वर की इच्छा हमें बीमारी से छुटकारा देने की है। परमेश्वर एक भला पिता है जिसे अपने बच्चों की परवाह है और हर एक अच्छा माता–पिता अपने बच्चों को भला–चंगा देखने के लिये सब कुछ करता है और अपने बच्चों को बीमारी से स्वस्थ और चंगा देखने के लिये किसी भी हद तक जा सकता है। सुसमाचार एक अच्छी खबर (शुभ समाचार) है कि परमेश्वर चंगाईदाता है, और उसके पास चंगाई देने की सामर्थ्य है, और वह चाहता है कि हमें चंगा करे। अपने बलिदान के द्वारा यीशु ने समस्त मनुष्यों की बीमारी और दुर्बलताओं को चंगा किया है और उसके पुनरुत्थान ने मृत्यु के राज/प्रभुता को मिटा डाला एवं नाश किया है।

शैतान के बन्धन और सताव से छुटकारा

शैतान के बहकावे में आकर मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह और बगावत कर दी और अपने अधिकार को शैतान को सौंपकर (रोमियों 6:16; लूका 4:5–6) शैतान का गुलाम बन बैठा। मनुष्य ने परमेश्वर के राज्य का तिरस्कार कर दिया जिससे कि एक खाली स्थान बन गया और उस खाली स्थान और खालीपन को शैतान ने तुरन्त भर दिया। आरम्भ में परमेश्वर ने पृथ्वी मनुष्यों को सौंपी थी (भजन संहिता 115:16) परन्तु अब पृथ्वी पर अंधकार का प्रभुत्व हो गया था।

शैतान की सामर्थ्य और प्रभाव इस पृथ्वी पर मनुष्यों की आत्मा, प्राण और देह में बन्धन और सताव लेकर आयें। अन्धकार का मुकाबला कर पाने में मनुष्य कमजोर और निर्बल साबित हुआ, इस कारण अन्धकार के बन्धन और सताव से आजाद होने के लिए मनुष्य को परमेश्वर की ओर मुड़ना था और सिर्फ परमेश्वर की कृपा की आस उसे थी। यीशु का जीवन अन्धकार के राज्य के ऊपर एक करारा हमला और प्रहार था। यीशु जहाँ कहीं गया, उसने शैतान का सामना और मुकाबला किया और दुष्टआत्माओं को लोगों में से निकाला (मरकुस 1:39; लूका 4:41; 6:18)।

"...परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।" (1 यूहन्ना 3:8)

यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने शैतान और दुष्टआत्माओं के अधिकारों को ऊपर से उतार दिया और उन्हें निर्बल कर दिया। (कुलुस्सियों 2:15)

"इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।" (इब्रानियों 2:14)

यीशु के पुनरुत्थान ने शैतान की हार पर मुहर लगा दी। न सिर्फ यीशु ने शैतान के कार्यों को नाश किया और उसे निकम्मा एवं निर्बल कर दिया परन्तु यीशु शैतान की सबसे बड़ी ताकत पर, अर्थात् मृत्यु पर भी जयवन्त/विजयी हुआ। मृतकों में से जी उठने के द्वारा यीशु ने मनुष्य के द्वारा गवाँयें गये अधिकार पर फिर से दावा ठोका और उसे वापिस हासिल किया इसके बाद उस अधिकार को लेकर यीशु ने कलीसिया को सौप दिया (प्रकाषितवाक्य 1:17–18; मत्ती 16:19)।

छुटकारा केवल पापों की क्षमा तक ही सीमित नहीं है परन्तु यीशु के द्वारा प्रदान किये गये छुटकारे में अन्धकार के सम्राज्य से छुटकारा भी शामिल है जिसके हम सभी गुलाम थे

(इब्रानियों 2:15)। छुटकारा दुष्ट और शैतानी शक्तियों से हमारी आत्मिक आजादी है (प्रेरितों 26:18)।

"उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया।" (कुलुस्सियों 1:13)

व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से ध्यान देने के लिये व्यवहारिक सवाल :

1. किन मायनों में एवं किस प्रकार से सुसमाचार बाईबिल की अन्य–शिक्षाओं से अलग (भिन्न) और अनोखा है?

2. सुसमाचार हमारे जीवन में क्या–क्या प्रभाव उत्पन्न कर सकता है?

3. क्या सुसमाचार का कोई ऐसा भाग (हिस्सा) है जिसे आपने अभी तक अनुभव न किया हो या क्या कोई ऐसा क्षेत्र है जिसमें आपने अभी तक सुसमाचार की सामर्थ्य का अनुभव न किया हो? यदि हाँ, तो आप सुसमाचार को अनुभव करने के लिये क्या और कौन–से व्यवहारिक कदम उठाऐंगे? अब प्रार्थना करने एवं करवाने के विषय में सोचें और ध्यान दें।

4. परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के रूप में प्रगट हुआ यीशु का जीवन किस तरह से जीवन को देखने के एवं जीवन के प्रति आपके नजरियें को पूरी तरह से बदल देता है?

5. यीशु ने किस तरह से हमें व्यवस्था से छुटकारा दिया है? हमें व्यवस्था से छुड़ाने/छुटकारा देने के लिये यीशु को क्या करना पड़ा?

6. यीशु के रूप में मनुष्य को छुटकारा देने आये परमेश्वर के स्वभाव और हृदय का वर्णन करें। किस प्रकार से धार्मिक मसीहियत ने सुसमाचार के विषय में हमारे सोच को विकृत कर दिया है एवं बिगाड़ दिया है?

7. किस प्रकार से बीमारी, पाप और मृत्यु अभिन्न रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं?

8. किस प्रकार से यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान शैतान और उसके राज्य को हराते (पराजित करते) हैं?

6

यीशु का नमूना और प्रेरितों की प्रेरणा का स्त्रोत

यीशु हमारा एकमात्र मानक (standard)

पिछले अध्याय में हमने एक अद्भुत सच्चाई सीखी थी, जो कि यह है कि यीशु मसीह का जीवन परमेश्वर की सिद्ध एवं न बदलनेवाली इच्छा का प्रकाशन/प्रगटीकरण था। लेकिन इससे बढ़कर भी कुछ है जो कि हम इस अध्याय में सीखेंगे वह यह है कि यीशु ही हमारा नमूना (model) और हमारी सेवकाई, विश्वास और प्रेम का मानक (standard) है। यीशु मसीह को पिता ने भेजा, वह मनुष्य के रूप में हमारी स्वाभाविक/प्राकृतिक सीमाओं में सीमित होकर जन्मा ताकि अपने सन्देश और कार्यों को समस्त राष्ट्रों तक ले जाने का हमें स्पष्ट नमूना (Model) दे सके और उसके उदाहरण से हम सीख सकें कि किस प्रकार से हम उसके सन्देश को लोगों तक पहुँचायें।

यीशु के जीवन के विषय में लोगों की जो सोच है, यह बात उस सोच से ठीक विपरीत और उलट है। मैं भी कभी यीशु के जीवन को उस दृष्टिकोण/नजरिये से देखता था और सोचता था कि यीशु तो परमेश्वर थे और उनके जैसा नहीं बना जा सकता है और उनके जैसे कार्य हम कभी भी नहीं कर सकते हैं। ध्यान दें कि यीशु के जीवन को हमें किस नजरिये से देखना चाहिये।

परंपरागत सोच : इस सोच में हम यह मानते हैं कि यीशु उन चमत्कारों को जिनका वर्णन हमें मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में मिलता है, इस कारण कर सका क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र था।

सत्य : सच्चाई तो यह है कि यीशु ने वे सब चमत्कार परमेश्वर के पुत्र के रूप में कार्य करते हुये प्रगट नहीं किये वरन् मनुष्य के रूप में परमेश्वर पिता के प्रति पूरी तरह से समर्पित/आधीन होकर एवं पवित्र आत्मा से सामर्थ्य पाकर किये थे।

जब तक आप पारंपरिक सोच को लिये रहेंगे तब तक आप यीशु जैसे कार्यों को करने के लिये कभी भी प्रेरित नहीं हो पायेंगे। लेकिन यदि आप इस सच्चाई पर विश्वास करेंगे कि यीशु का जीवन हमारे लिये एक नमूना (model) है और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और सहायता से हम भी उसके जैसा जीवन जी सकते हैं और उसके जैसे कार्य कर सकते हैं

तो आप विश्वास में उसके समान बनने का प्रयास करेंगे। प्रेरित यूहन्ना साफ–साफ यही कहते हैं।

"जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिये कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।" (1 यूहन्ना 2:6)

मित्रों, यीशु से अधिक प्रेरणादायक और कोई नहीं है। जब आप सुसमाचार (इन्जील) को पढ़ते हैं तो पवित्र आत्मा आपको यीशु जैसा बनने के लिये आमंत्रित कर रहा है कि आप उन कार्यों को करें जो कि यीशु ने किये जिससे कि आप पिता के हृदय को प्रगट कर सकें और शैतान के कार्यों का नाश कर सकें।

क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि जब तक पवित्र आत्मा यीशु पर नहीं उतरा, उससे पहले यीशु ने चमत्कार, चंगाई के कार्य क्यों नहीं प्रगट किये और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने से पहले उसने क्यों नहीं दुष्ट–आत्माओं को लोगों के अंदर से निकाला? सच्चाई तो यह है कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हुए बिना वह इन कार्यों को कर ही नहीं सकता था। जब पवित्र आत्मा उसके ऊपर उतरा उसके बाद ही उसने पानी को दाखरस में बदला (यूहन्ना 2:11) और फिर अपनी सेवकाई को प्रारम्भ किया। यह सब पिता परमेश्वर के द्वारा पहले से ही निर्धारित किया गया था एवं ठहराया गया था। यीशु के जीवन, मृत्यु, एवं पुनरुत्थान के छोटे से छोटे पहलू का अपना अर्थ और कारण है और उसका जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान बहुआयामी है। जो मैंने बताया है उसकी पुष्टि परमेश्वर के वचन में कर लेते हैं।

"जैसा मसीह यीशु का स्वाभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।" (फिलिप्पियों 2:5–8)

यीशु ने खुद व खुद स्वेच्छा से अपने आप को शून्य/खाली कर दिया था। उसने अपने आप को ईश्वरीय सामर्थ्य, ज्ञान और विशेषाधिकारों से खाली कर दिया था ताकि वह हम सब के लिये एक नमूना/प्रारूप (model) अथवा उदाहरण प्रस्तुत कर सके। हर एक चमत्कार उसने पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुए और पवित्र आत्मा की सहायता से प्रगट किया और हर एक भेद, ज्ञान का वचन और नबूवत जो उसे प्राप्त हुये, वे पवित्र आत्मा की

सहायता से पिता परमेश्वर की धीमी आवाज को सुनने के द्वारा उसे प्राप्त हुये। क्या वह स्वयं अपनी ईश्वरीय सामर्थ्य के द्वारा और बिना पवित्र आत्मा की सहायता पर निर्भर हुए ये सब चमत्कार और अद्‌भुत कार्य कर सकता था? बिल्कुल कर सकता था। परन्तु ऐसा करने पर उसका जीवन मेरे और आपके लिये एक प्रेरणादायक नमूना (model) और उदाहरण नहीं बन पाता।

यीशु ने बड़े सामर्थ्यी रूप से केवल तीन वर्ष ही सेवा की। केवल तीन वर्ष तक ही क्यों? अपने पुनरुत्थान अथवा पुनर्जीवित हो उठने के बाद भी वह अपनी सेवा को संसार भर में जारी रख सकता था, लेकिन फिर भी वह इतना जल्दी सब कुछ छोड़कर क्यों चला गया? दोस्तों, आपको यह जानना बहुत जरूरी है कि पिता ने मनुष्य के लिये जो योजना सृष्टि के आरम्भ में बनाई थी उसने उसे खत्म या रद्‌द नहीं किया है। यह परमेश्वर की इच्छा थी और आज भी है कि मनुष्य पृथ्वी का प्रबन्धक एवं संचालक बनकर पृथ्वी पर प्रभुता करे (उत्पत्ति 1:28; भजन 115:16) और यीशु उस खोये हुए अधिकार और प्रभुता को हमें वापस दिलाने के लिये आया, शैतान से उसने उस अधिकार को वापस हासिल किया फिर वह अधिकार हमें लौटा दिया। परमेश्वर चाहता है कि स्वर्ग की उस भलाई को हम पृथ्वी पर फिर से स्थापित करें। यदि हम यीशु के नमूने का अनुसरण करेंगे तभी हम ऐसा करने में सफल होंगे।

आप कह सकते हैं कि "यीशु तो पापरहित/निष्पाप थे और हम तो सिद्ध नहीं हैं और पाप के साथ जूझते रहते हैं।" मेरे मित्र, आज परमेश्वर और हमारे बीच पाप कोई मुद्दा या मसला है ही नहीं, क्योंकि हमारे पाप का प्रायशचित यीशु ने किया, हमारे पाप की सजा उसने सहकर हमें उस सजा से मुक्त/आजाद कर दिया है; "परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ" (रोमियों 5:20)। रूकावट पाप नहीं परन्तु अविश्वास है। हम यह विश्वास नहीं कर पाते कि महज यीशु का लहू हमें परमेश्वर के सामने धर्मी और ग्रहणयोग्य बनाता है, हम सन्देह करते हैं और अपने पाप और नाकामियों पर ही ध्यान केन्द्रित करने के द्वारा यीशु के लहू के आलौकिक प्रभाव को कम कर देते हैं। धार्मिकता का दान आपको परमेश्वर की धार्मिकता बनाता है न कि पापरहित मनुष्य की ध ार्मिकता (2 कुरिन्थियों 5:21)। प्रिय मित्र, यीशु का लहू हमें पिता के समक्ष ग्रहणयोग्य बनाता है, उस लहू के द्वारा हम पिता तक पहुँचने की योग्यता हासिल करते हैं। हमारी पहुँच और सम्बन्ध पिता से ठीक उस तरह का बन पाता है जिस तरह का सम्बन्ध यीशु का पिता के साथ है और उस तरह की पहुँच पिता तक हमारी हो जाती है जिस तरह की पहुँच यीशु की पिता के पास तक है। दोष लगाने वाले और हमें दोषी ठहराने वाले शत्रु की आवाज को सुनना बन्द करें और सन्देह को अपने अंदर जगह न दें।

प्रेरितों की प्रेरणा

प्रेरितों के कार्यों की पुस्तक यीशु की गैरमौजूदगी में उसके चेलों के द्वारा उसके पदचिन्हों पर चलने के प्रयास को दर्शाती है। हमें यह समझना होगा कि यीशु के चेले मेरे और आपके तरह ही मनुष्य थे और गलतियाँ भी करते थे जबकि इसके ठीक उलट यीशु ने कभी भी कोई गलती नहीं की और जो कुछ उसने किया बड़ी निपूर्णता से किया और उसके द्वारा किये गये प्रत्येक कार्य में पिता की इच्छा की झलक दिखाई देती थी। यीशु के चेलों और प्रेरितों का संघर्ष हमें प्रेरणा प्रदान करता है उनके जैसे सेवकाई करने की और हम उनकी सफलताओं और नाकामियों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। जब भी आप उनके विषय में पढ़ते हैं, तो याद रखें कि वे हमारे लिये नमूना (model) नहीं है, परन्तु वे हमें प्रेरणा प्रदान करते हैं कि जो कुछ यीशु ने कहा है वह निश्चित रूप से सम्भव है और चेलों ने उसे करना शुरू कर दिया था।

उनकी गलतियों पर ध्यान दें : कभी–कभी वे ढोंग और दिखावा करते थे और कभी एक दूसरे से अलग हो जाते थे अर्थात् एक दूसरे का साथ छोड़ देते थे (गलातियों 2:11–14; प्रेरितों 15:38–40), दया और अनुग्रह करने की जगह दोष लगाते थे (प्रेरितों 5:1–10; 8:20–23) और कभी–कभी संकीर्ण सोच और विचारधारा वाले बन जाते थे (प्रेरितों 10:11–15)। फिर भी उनके द्वारा बहुत से चमत्कार प्रगट हुये और बहुतों ने उद्धार पाया और संसार भर में उनके द्वारा सुसमाचार पहुँचाया गया। प्रेरितों 5:14–16 में हम पढ़ते हैं कि सभी बीमार और अशुद्ध आत्माओं के सताए सब अच्छे कर दिये जाते थे, अर्थात् सेवकाई में यीशु के स्तर की सफलता/कामयाबी तक वे पहुँच गये थे। मेरे मित्र, पतरस, फिलिप्पुस और पौलुस हमारे लिये एक नमूना (model) नहीं है परन्तु यीशु हमारे लिये वो नमूना है जिसका हमें अनुसरण करना चाहिए। परन्तु पतरस, फिलिप्पुस और पौलुस के विषय में इस कारण पवित्रशास्त्र में लिखा गया है ताकि हम यह जान पायें कि यीशु के समान सामर्थ्यी रूप से चिन्ह और चमत्कारों सहित सेवा करना मेरे और आपके लिये सम्भव है।

चिन्हों के द्वारा सेवकाई

यीशु की सेवकाई के समान ही प्रारंभिक कलीसिया के विश्वासी जब सुसमाचार प्रचार करते थे तो चिन्ह और आश्चर्यकर्मों को प्रगट होते हुये देखते और अनुभव करते थे

(मरकुस 16:15–20)। आईये, कुछ पदों को पढ़ें ताकि चिन्हों को और उनके विस्तार/फैलाव का अध्ययन कर सकें।

"तो हम ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर कैसे बच सकते हैं? जिसकी चर्चा पहले–पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों और अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ्य के कामों और पवित्र आत्मा के वरदानों के बाँटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा (इब्रानियों 2:3–4)।

यह चिन्ह, अद्‌भुत काम, सामर्थ्य के काम और पवित्र आत्मा के वरदान सुसमाचार के सन्देश को प्रमाणित अर्थात् सच्चा साबित करने के लिये, यीशु की वास्तविकता को स्थापित करने के लिये और परमेश्वर के हृदय, प्रेम और स्वभाव को लोगों पर जाहिर करने के लिये प्रगट होते हैं। हमें भी ऐसे ही अप्रत्याशित चिन्हों और कामों की इच्छा और उम्मेद रखनी चाहिये। ध्यान दें प्रेरितों के 3 अध्याय में प्रगट हुए चमत्कार पर और ध्यान दें कि उस चमत्कार ने सुसमाचार प्रचार के लिये किस प्रकार से एक मंच तैयार कर दिया और रास्ता खोला।

"जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत आश्चर्य करते हुए उस ओसारे में जो सुलेमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए। यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा... परन्तु वचन के सुनने वालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पाँच हजार मनुष्यों के लगभग हो गई।" (प्रेरितों 3:11–12; 4:4)

इस एक चमत्कार के कारण हजारों लोगों ने पतरस की बात को ध्यान से सुना क्योंकि उस चमत्कार ने सुसमाचार के लिये मंच तैयार कर दिया और सुसमाचार की प्रमाणिकता और वास्तविकता को प्रगट किया और पाँच हजार लोगों ने यीशु पर विश्वास किया। मित्रों, सुसमाचार के साथ महज एक चमत्कार प्रगट होने पर हजारों लोग उद्धार पा सकते हैं।

"फिर ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों के पास भी पहुँचा जो लुद्दा में रहते थे। वहाँ उसे एनियास नामक लकवे का रोगी एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था। पतरस ने उससे कहा, 'हे एनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है। उठ, अपना बिछौना बिछा।' तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। तब लुद्दा और शारोन के सब रहने वाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे।" (प्रेरितों 9:32–35)

हर एक जिसने इस चमत्कार को देखा था, उसने यीशु पर विश्वास किया और उद्धार पाया। उपरोक्त दोनों स्थानों पर हम देखते हैं कि चमत्कार और आश्चर्यकर्म ने सुसमाचार

प्रचार का रास्ता खोला और उसका यह असर हुआ कि लोगों का ध्यान सुसमाचार की ओर केन्द्रित हुआ, इच्छुक लोगों की संख्या बढ़ी, लोगों के हृदय में से सन्देह दूर हुआ और यीशु पर विश्वास करने का उनका संकल्प और मजबूत हुआ।

ठीक इसके उलट यह भी हुआ कि पहले सुसमाचार प्रचार किया गया और जैसे ही लोगों ने उद्धार के सन्देश को कान लगाकर सुना तब पवित्र आत्मा ने उनके हृदय में विश्वास को उत्पन्न किया अथवा जगाया और नीचे आप देखेंगे कि सुसमाचार प्रचार के द्व ारा चमत्कार के लिये लोगों में विश्वास उत्पन्न हुआ।

और वे (पौलुस और बरनबास) वहाँ सुसमाचार सुनाने लगे। लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पाँवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लंगड़ा था और कभी न चला था। वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था। पौलुस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि उसे चंगा हो जाने का विश्वास है, और ऊँचे शब्द से कहा, 'अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो' तब वह उछलकर चलने फिरने लगा। लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया की भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, 'देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं।' (प्रेरितों 14:7—11)

जब हम पवित्र आत्मा की अगुवाई में होकर चलेंगे, तो सुसमाचार की सफलता के लिये चंगाई और चमत्कार प्रगट होंगे तथा लोगों को शैतान से छुटकारा प्राप्त होगा और चिन्ह, चमत्कार और सामर्थ्य के कार्यों के साथ हम सुसमाचार प्रचार कर पायेंगे। चमत्कार और सुसमाचार आपस में एक दूसरे के साथ जुड़े हुऐ हैं और एक दूसरे की सफलता में सहायक बनते हैं, साथ ही साथ ज्यादा प्रभाव डालते हुये पृथ्वी पर स्वर्ग को तेजी से स्थापित करते हैं। हर बार जब सुसमाचार प्रचार किया जाता है तब परमेश्वर चिन्ह प्रगट करना चाहता है और सामर्थ्य के साथ अपने प्रेम को प्रगट करना चाहता है। चिन्ह सुसमाचार का एक ठोस और वास्तविक अनुभव है। हर एक बार जब चमत्कार प्रगट होता है, परमेश्वर चाहता है कि उसका उद्धार का सन्देश खोये हुये लोगों के हृदय तक पहुँचे।

विश्वास को बढ़ाने वाली गवाहियाँ

हमने महाराष्ट्र में सभायें आयोजित कीं और वहाँ बीमार और दुष्टआत्माओं के सताये हुओं के लिये प्रार्थना करने पर विशेष जोर दिया। चंगाई और चमत्कार जो उन सभाओं में प्रगट हो रहे थे, उनके कारण हर रात सभाओं में लोगों की गिनती/संख्या बढ़ती जा रही थी। एक शाम सुसमाचार प्रचार करने के बाद, हमने बीमारों को आगे बुलाया।

जहाँ भी यीशु का नाम प्रचार किया जाता है और लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, वहाँ के माहौल को पवित्र आत्मा कब्जे में ले लेता है। लोगों के लिये प्रार्थना करने के बाद, हमने उन लोगों को गवाही देने के लिये आगे बुलाया जिन्हें यीशु ने चंगा किया था। लगभग नौ साल की एक बच्ची मंच पर अपनी माँ के साथ आई। भीड़ के सामने वह बच्ची आगे और पीछे झुक कर दिखा रही थी। उसकी माँ ने बताया कि जन्म से ही उसकी रीड़ की हड्डी विकृत और टेढ़ी थी, जिसके कारण वह आगे पीछे झुक नहीं पाती थी। उन्होंने सुसमाचार को सुना और विश्वास किया, पवित्र आत्मा ने यह चमत्कार प्रगट किया।

उसी शाम मंच पर से प्रचार करते समय मैंने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा जो कोने में एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। ज्यादातर लोग जमीन पर बैठे हुए थे क्योंकि इतने ज्यादा लोगों के बैठने के लिये हम कुर्सियों का प्रबन्ध अथवा इन्तजाम नहीं कर पाये थे। प्रार्थना के समय वे उठ खड़ा हुआ और अपने दोनों हाथ उसने ऊपर उठा लिये। एक क्षण के बाद मैंने उसे जमीन पर गिरा हुआ देखा। बहुत से लोग गवाही देने के लिये मंच पर आगे आ रहे थे, यह बूढ़ा व्यक्ति भी आगे आया। मैं यह जानने के लिये बेचैन था कि उस व्यक्ति को क्या हुआ था। उसने बताया कि वह बहुत–सी बीमारियों से पीड़ित था जो कि बहुत सालों से उसे थीं और उसे हमेशा दर्द बना रहता था। जैसे ही प्रार्थना में उसने अपने हाथों को ऊपर उठाया, उसे शरीर में बिजली का सा झटका लगा और वह जमीन पर पीछे की ओर गिर पड़ा। जब वह उठा तो उसने महसूस किया कि जिन बीमारियों से वह पीड़ित था, उन बीमारियों के सभी लक्षण उसके शरीर में से चले गये हैं, और वह दर्द और पीड़ा से आजाद हो गया है।

उस दिन जो कुछ चमत्कार और चंगाइयाँ हुईं, वे बहुत ही प्रभावी थी और उन कार्यों की खबर और लोगों तक भी पहुँची। अगली शाम जैसे ही मैंने प्रचार करना समाप्त किया एक ऐमब्यूलैंस (ambulance) मैदान में पहुँची जिसमें एक जवान लड़के को लाया गया था जिसका मोटरसाईकिल दुर्घटना में कन्धा बहुत बुरी तरह से जख्मी हुआ था और कई पसुलियाँ भी टूट गयी थीं। उस जवान को जब हमारी सभाओं के बारे में पता चला तो उसने ऐमब्यूलैंस ड्राईवर से निवेदन किया कि वह उसे अस्पताल न ले जाकर हमारी उन चंगाई सभाओं में ले जाये। अचम्भे की बात यह थी कि ड्राईवर उसे उन सभाओं में लाने को तैयार हो गया और वे सभा–स्थल तक पहुँचे। उस जवान लड़के को मंच पर लाया गया और तुरन्त पवित्र आत्मा ने अपने चंगाई के कार्य को करना शुरू कर दिया; उसका सारा दर्द चला गया और उसकी पसुलियों में और शरीर में जो चोट लगी थी, उससे भी उसे चंगाई मिली।

व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से ध्यान देने के लिये व्यवहारिक सवाल :

1. इस अध्याय को पढ़ने से पहले, क्या आप यह समझते और विश्वास करते थे कि यीशु चमत्कार इसलिये कर पाते थे क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र थे? यदि हाँ, तो क्या आप समझते हैं कि उस पारंपरिक सोच ने आपको चमत्कार के लिये विश्वास का कदम उठाने से रोके रखा और किस प्रकार से रोके रखा? सच्चाई जानने पर किस प्रकार से आपको चमत्कारों के लिये प्रभु पर विश्वास करने की आजादी मिली है?

2. आखिर केवल यीशु ही क्यों हमारी सेवकाई का नमूना (model) है?

3. किस आधार पर यीशु आलौकिक कार्य करता था?

4. क्या इस बात पर विश्वास करना आपको उत्साहित करता है कि आप भी वे बड़े कार्य जो यीशु करते थे, कर सकते हैं? या यह बात आपको निराश करती है? क्यों?

5. प्रेरितों के कार्य की पुस्तक में आप किस व्यक्ति के द्वारा अधिक प्रेरित और प्रभावित हैं? क्यों

6. क्या आपने व्यक्तिगत रूप से अपनी सेवकाई में किसी चमत्कार को देखा या अनुभव किया है? यदि हाँ, तो क्या उन चमत्कारों के द्वारा दूसरे लोगों का विश्वास बढ़ा है? यदि हाँ तो कैसे?

7. इस अध्याय ने किस प्रकार से सेवकाई में चमत्कारों की उम्मेद लगाने के लिये आपको तैयार किया है? क्या आपके विचारों एव मनोभाव में ऐसी कोई चीज है जो कि आपको चिन्ह और आश्चर्यकर्मों पर विश्वास करने से रोक रही हो? यदि हाँ, तो बतायें कि वह कौन–सी चीज/बात है और उसके लिये प्रार्थना करें।

8. अपने प्रभाव के क्षेत्र में सुसमाचार को चिन्ह और आश्चर्यकर्मों के साथ ले जाने के लिये आप कौन–से व्यवहारिक कदम उठाऐंगे?

9. चिन्ह और आश्चर्यकर्म किस प्रकार से सुसमाचार को आगे तक बढ़ाते/पहुँचाते हैं? एक क्षण के लिये कल्पना करें और देखें चिन्ह, चमत्कारों और छुटकारे को सामर्थ्यी रूप से अपने सामाजिक दायरे में होते हुए देखें। आप क्या कल्पना करते हैं कि उसका परिणाम क्या होगा? प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपके सामाजिक दायरे में काम करना शुरू करे।

7

पवित्र आत्मा, हमारा सुसमाचार का साथी

शाम को जो सूर्य की किरण हिमालय के पहाड़ों पर पड़ रही थीं, वे बहुत ही लुभावनी लग रही थीं। नेपाल की उस घाटी में प्रकृति की सभ्यता और खूबसूरती आधुनिकता से अनछुई और निर्मल दिखाई पड़ रही थी। बहुत से मोड़ पर मुड़ते और धूल भरे कच्चे रास्ते पर झटके झेलते हुये हम एक छोटी सी मोटरसाईकिल पर आगे बढ़ रहे थे। मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि यदि मैं अपने नेपाली दोस्त से बिछुड़ गया तो मैं कहीं खो जाऊँगा। हमारा सफर बहुत ही थका देने वाला था और अन्त में हम एक छोटे से हाउस चर्च में पहुँचे जहाँ केवल पन्द्रह लोग मौजूद थे।

उन्होंने नेपाली भाषा में आराधना करना शुरू किया और मैंने आत्मा में प्रार्थना करना प्रारम्भ कर दिया। थोड़े समय में मेरा ध्यान एक बुजुर्ग महिला की ओर गया और आत्मिक क्षेत्र में मुझे दिखाई देने लगा। मैंने देखा कि एक सफेद भुतहा पारदर्शी छाया उसके शरीर के ऊपर प्रगट हुई। मुझे याद नहीं कि वह सब मैंने अपनी आँखों से सामने देखा था या दर्शन में देखा था। एक क्षण उसकी ओर देखने पर पवित्र आत्मा ने मेरे जहन में डाला कि यह एक सताने वाली आत्मा है। जैसे ही वह आराधना का गीत समाप्त हुआ मैंने पास्टर से कहा कि मेरे साथ मिलकर उस महिला के लिये प्रार्थना करें। मैंने उस महिला से कुछ सवाल नहीं पूछा और जो मैंने आत्मा में देखा था उसके मुताबिक उस महिला के लिये सीधे प्रार्थना करना आरम्भ कर दिया।

मैंने कहा "सताने और दुख देने वाली आत्मा, मैं तुझे बाँधता हूँ और उस महिला में से निकल जाने की आज्ञा देता हूँ।" उस महिला पर विश्वास के साथ हाथ रखते हुऐ मैंने प्रभु की चंगाई की उपस्थिति और सामर्थ्य को उस महिला के शरीर में रिहा किया। फिर मैंने पास्टर से कहा कि उस महिला से पूछे कि उसे शरीर में क्या समस्या थी। पता चला कि बहुत साल से उसकी रीढ़ की हड्डी में, छाती और हृदय में दर्द था और उसके पाँव (पंजों) में जलन महसूस होती थी। जब मैंने उसके लिये प्रार्थना की तो इन सब बीमारियों के लक्षण और दर्द पूरी तरह से गायब हो गये और वह बीमारियों से पूरी तरह आजाद/मुक्त महसूस कर रही थी।

पिछले दिनों उस महिला ने यीशु को ग्रहण किया, परिणामस्वरूप उसके परिवार ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। उसने अपना समय सड़क पर भीख माँगकर भी गुजारा परन्तु यीशु को न छोड़ा। कुछ विश्वासी लोग उसके बारे में पता चलने के बाद में उसे अपने घर ले गये और उसे पनाह दी। यह चंगाई जो उसने प्राप्त की महज एक शारीरिक

चंगाई तक ही सीमित नहीं है, परन्तु यह पिता की ओर उसे उसके लिये एक सन्देश है कि वह उस महिला की दयनीय हालत को देखता है, उसकी परवाह करता और उसकी सब जरुरतों को पूरा करता है।

इस चंगाई और छुटकारे की शुरुआत पवित्र आत्मा ने आत्माओं की परख के वरदान के द्वारा की थी। परमेश्वर की उपस्थिति और नजदीकी में बने रहने पर हम सुसमाचार की सामर्थ्य के बहाव में बहते हैं।

यीशु हमारा नमूना/प्रारूप (Model)

यदि इस पुस्तक में से आप कोई एक बात सीख पाते हैं तो वह यह होनी चाहिये कि आप सिर्फ और सिर्फ यीशु की ओर हर बात के लिये देखें और ताकें। यीशु हमारे लिये एक नमूना और उदाहरण है जिससे हम सीखते हैं कि हमें किस प्रकार से परमेश्वर के साथ नजदीकी रखना और पवित्र आत्मा पर निर्भर रहना चाहिये। जैसे मैंने पहले भी कहा और एक बार फिर से आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि यीशु ने जो भी चमत्कार, चंगाई और छुटकारे के काम किये, वे सब उसने मनुष्य के रूप में पिता के आधीन होकर और पवित्र आत्मा से सामर्थ्य पाकर किये। इसी प्रकार से उसने अपने चेलों और कलीसिया के लिये नमूना और उदाहरण दिया है कि किस प्रकार से उसके चेलों और कलीसिया को अपने जीवन और सेवकाई के लिये पवित्र आत्मा पर निर्भर होना चाहिये।

अपने जन्म से लेकर क्रूस पर अन्तिम साँस लेने तक उसने अपनी ईश्वरीय शक्ति, ज्ञान और महिमा को रोके और छिपाये रखा और मनुष्य के रूप में हर एक चीज के लिए पवित्र आत्मा की निर्भरता के साथ जीवन बिताया। किसी भी समय यदि वह चाहता तो पिता से विनती करके स्वर्गदूतों की पलटन को अपनी सहायता के लिये बुला सकता था (मत्ती 26:53) परन्तु यदि वह ऐसा करता तो वह हमारे लिये एक नमूना (model) और उदाहरण कभी न बन पाता। मनुष्य की देह में रहते हुए परमेश्वर के पुत्र ने तब तक कोई भी चमत्कार नहीं किया जब तक पवित्र आत्मा उस पर नहीं उतरा (लूका 3:22; यूहन्ना 2:11)। पुनरुत्थान अर्थात् पुनर्जीवित हो उठने के बाद और स्वर्गारोहण से पहले उसने यह सख्त आज्ञा दी :

"और देखों, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की हैं, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" (लूका 24:49)

यीशु को पता था कि दुनिया भर में परमेश्वर के राज्य को फैलाने का कार्य उसके चेले बिना पवित्र आत्मा की सहायता के कभी भी नहीं कर पायेंगे। इन्सानी बुद्धि, ज्ञान और बल से कभी भी दुष्ट शक्तियों पर विजय नहीं पाई जा सकती है। जिस प्रकार से यीशु खुद पूरी रीति से पवित्र आत्मा पर निर्भर रहे एवं हमारे अनुसरण के लिये एक नमूना और उदाहरण प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार से उसने हमें भी आज्ञा दी है कि हम पवित्र आत्मा की उपस्थिति में बने रहें और उसकी सामर्थ्य में आगे बढ़ें।

सह–भागीदार

पवित्र आत्मा और कलीसिया दोनों ही को अधिकृत किया एवं जिम्मेदारी दी गई है कि वे सुसमाचार को दुनिया में फैलाये। हमें एक ही कार्य और दर्शन दिया गया है। एक बात जो कि बहुत से विश्वासी समझ नहीं पाते हैं, वह यह है कि परमेश्वर ने खुद यह ठहराया है कि उसकी इच्छा (लोगों के उद्धार पाने के लिये) केवल तब पूरी हो सकती है जब कि हम पवित्र आत्मा के साथ मिलकर अर्थात् भागीदारी में कार्य करते हैं। पवित्र आत्मा कभी भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिये हम पर दवाब नहीं डालेगा परन्तु धीरे और नरमी से हमें परमेश्वर की आज्ञा पालन करने के लिये आमंत्रित करेगा। कोई भी अनन्त फल हम स्वयं अपनी कोशिश से उत्पन्न नहीं कर सकते हैं; हमारी सफलता और उपलब्धि केवल पवित्र आत्मा पर निर्भर हैं। वह ही हमें कामयाबी देता है। निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें, जहाँ पर हमारे एकीकृत और संयुक्त उद्देश्य/मकसद के बारे में बताया गया है।

"परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा; और तुम भी मेरे गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।" (यूहन्ना 15:26–27)

"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" (प्रेरितों 1:8)

"हम इन बातों के गवाह हैं और वैसे ही पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा मानते हैं।" (प्रेरितों 5:32)

बहुत सी जगह मैं गया हूँ और बहुत सी मिनिस्ट्रीज (सेवकाईयों) में मैंने परमेश्वर के चलन को देखा हैं। मैं दृढ़ता से यह कह सकता हूँ कि हर एक वह सेवकाई (ministry)

जिसने पवित्र आत्मा की नजदीकी, संगति और निर्भरता पर जोर दिया वह उन सेवकाईयों (ministries) से कहीं अधिक फलवन्त हुई जिन्होंने पवित्र आत्मा की नजदीकी, संगति और निर्भरता पर जोर नहीं दिया।

अधिकार और सामर्थ्य

यीशु ने अपने चेलों को न सिर्फ बीमारों को चंगा करने एवं दुष्ट आत्मा को निकालने का अधिकार ही दिया वरन् उन्हें ऐसा करने के लिये सामर्थ्य भी दी (लूका 9:1)। 'अधिकार' शब्द मूल यूनानी शब्द 'एक्जूसिया' (exousia) से आया है जिसका मतलब है 'अधिकार क्षेत्र में विधिसम्मत रूप से कार्य करने की योग्यता या क्षमता।" जो कुछ भी यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनर्जीवित हो उठने के कारण स्वर्ग में बाँधा और खोला था उन सब चीजों और बातों को पृथ्वी पर बाँधने (रोकने) और खोलने (होने की अनुमति देने) का अधिकार कलीसिया को यीशु ने दिया है (मत्ती 16:19)। 'सामर्थ्य' शब्द मूल यूनानी शब्द 'डूनामिस' (dunamis) से आया है जिसका मतलब है 'शक्ति' या 'बल'। पुत्र होने के कारण आपको अधिकार मिला है, अधिकार आपको सौप दिया गया है और आपको विश्वास के द्वारा अपने अधिकार का इस्तेमाल करना है। सामर्थ्य कोई 'चीज' या 'वस्तु' नहीं है जो कि आपके पास है परन्तु 'सामर्थ्य' एक दिव्य व्यक्ति है जिसके साथ आप संगति और संबंध में है। 'सामर्थ्य' पवित्र आत्मा का गुण है और यीशु के साथ मिलकर नातेदारी में काम करता है (लूका 4:14; 5:17; 24:49; प्रेरितों 1:8; 10:38)।

आइये, बात करते हैं एक पुलिस आफीसर की, जिसे सरकार ने लोगों से देश के काननू का पालन करवाने के लिये अधिकृत किया है। यदि वह लुटेरे को किसी महिला का पर्स चुराते हुए देखता है तो उसे गिरफ्तार करने का अधिकार इस पुलिस आफीसर को है, और यदि वह लुटेरा पर्स चुराकर भागता है तो यह आफीसर उसे तुरन्त रूकने को कहता है। परन्तु उसकी आज्ञा का पालन कोई लुटेरा करता है और कोई नहीं भी करता है और भागने की कोशिश जारी रखता है। इसी कारण सरकार ने उस पुलिस आफीसर को लाठी या रिवाल्वर दी है जिससे कि वह अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हुए उस लुटेरे को कानून का पालन करने के लिये बाध्य या विवश करे।

इस समझ के साथ हमें सुसमाचार प्रचार करने, बीमारों पर हाथ रखने और दुष्ट–आत्माओं को निकल जाने की आज्ञा देने का अधिकार मिला है। पवित्र आत्मा जीवित

सामर्थ्य है जो कि हमारे द्वारा बीमारी और दुष्ट आत्माओं को दी गई आज्ञा को लागू और उसका पालन करवाती है और हमारे परिश्रम (मेहनत) का फल उत्पन्न करता है।

चार लोगों का चार्ट – किसी भी चंगाई, चमत्कार और छुटकारे में चार लोग शमिल होते हैं : पिता, यीशु, पवित्र आत्मा और विश्वासी। इनमें से प्रत्येक की भूमिका और जिम्मेदारी को समझना हमारे लिये जरूरी है तभी हम प्रार्थना, विश्वास और उसके उपयुक्त कार्य कर पायेंगे।

	पाप	बीमारी	शैतान
पिता	पहिले से ही यीशु को हमारे लिये पाप बलि ठहरा चुका है, मनुष्य का अपने से मेल कराया, और मनुष्य के पाप का लेखा अब मनुष्य से नहीं लेता।	मनुष्य की सारी बीमारियों को यीशु के ऊपर रख चुका है।	सब मनुष्यों को शैतान के वश में से छुड़ा चुका है।
यीशु	हमारे पापों को अपने ऊपर उठा/सह चुका है, और उनका प्रायश्चित किया, सजा सही और हमारा मेल–मिलाप परमेश्वर से कराया।	हमारी बीमारियों और पीड़ाओं को अपने ऊपर उठा/सह चुका है।	शैतान को हरा चुका है, उसे शक्तिहीन/निर्बल कर चुका और उसके कार्यों को नाश किया है।

विश्वासी	इस बात पर विश्वास और भरोसा रखना है कि यीशु और पिता के द्वारा पूरे किये गये कार्य से हमें पापों की क्षमा मिली है और परमेश्वर से हमारा मेल मिलाप हुआ है।	इस बात पर विश्वास और भरोसा रखना है कि यीशु चंगाई ला चुका अर्थात चंगाई प्रदान कर चुका है। अब तो उसे (विश्वासी को) बीमारों पर हाथ रखना, और चंगाई की सामर्थ्य का निस्तारण करना है और बीमारी को चले जाने की आज्ञा देना है।	इस बात पर विश्वास और भरोसा रखना है कि शैतान और उसके कार्य पराजित हुये है, और अन्धकार की आत्माओं को चले जाने की आज्ञा देना है।
पवित्र आत्मा	यीशु को उद्धारकर्ता के रूप में प्रगट करता है और लोगों को पाप, धार्मिकता और न्याय के प्रति कायल (निरुत्तर) करता है।	यीशु को चंगाई देने वाले के रूप में प्रगट करता है और उसकी चंगाई की सामर्थ्य को प्रगट करता है।	यीशु को छुटकारा देने वाले के रूप में प्रगट करता है और दुष्ट आत्माओं को निकालता है।

जो कार्य यीशु पूरे कर चुका, उन कार्यों पर भरोसा करना/जताना ही विश्वास है, न कि वे कार्य जिनको यीशु करेगा। हमारे छुटकारे से संबन्धित हर एक कार्य पिता और पुत्र ने पूरा कर दिया है। और यीशु और पिता के द्वारा पूरा किया गया यह कार्य आत्मिक क्षेत्र की सच्चाई है (इफिसियों 1:3)। जो कुछ भी परमेश्वर ने हमारे लिये किया, विश्वास उसे देखता और हासिल करता है, जबकि अविश्वास अन्धा होता है और अन्धेपन के कारण परमेश्वर से उस कार्य को करने का निवेदन करता रहता है जो कार्य परमेश्वर पहले ही पूरा कर चुका है। पवित्र आत्मा और विश्वासी के कार्य यीशु और पिता के द्वारा पूरे किये गये कार्य के बिना अधूरे हैं और पूरी तरह से यीशु और पिता के पूरे किये गये कार्य पर निर्भर करते हैं। जब हम पिता और पुत्र के द्वारा पूरे किये गये कार्य पर सहमत होकर विश्वास के साथ अपने अधिकार का इस्तेमाल करते हैं, तब पवित्र आत्मा सामर्थ्य के साथ कार्य करते हुये यीशु और पिता के द्वारा पूरे किये गये उस कार्य को भौतिक क्षेत्र में प्रगट करता है और उस ईश्वरीय कार्य को (जो पिता और पुत्र पूरा कर चुके हैं) एक वास्तविक अनुभव और हकीकत बना देता है। जबकि उपरोक्त चार्ट में जो बताया और सिखाया गया है, उससे हटकर लोग अक्सर पिता या यीशु से चंगाई के लिये निवेदन करते हैं

जबकि यीशु ने जो कार्य क्रूस पर पूरा किया उसके कारण वह चंगाई को पहिले ही उपलब्ध ा करा चुका है। यदि आप परमेश्वर से वह कार्य करने को कह रहे हैं जो कि वह पहिले ही कर चुका है, तो जो आप माँग रहे हैं या कह रहे हैं वह आपको कभी भी न मिलेगा क्योंकि यहाँ पर आप अपना अविश्वास प्रगट कर रहे हैं। जो कुछ पिता या पुत्र आपके लिए पहिले ही कर चुका है, वह करने के लिये आपको उससे नहीं कहना है, वरन् आपको परमेश्वर पर विश्वास और भरोसा करना है। पवित्र आत्मा हमारे अंदर और हमारे द्वारा तब कार्य करता है, जब हम विश्वास में होकर चलते और कार्य करते हैं। यदि जो कुछ परमेश्वर पहिले ही कर चुका, उसे करने का निवेदन हम परमेश्वर से बार–बार करते हैं, तो ऐसी स्थिति में पवित्र आत्मा कार्य नहीं करेगा। जो भी हम सोचते हैं, विश्वास करते, बोलते और करते हैं, वह सब परमेश्वर को महिमा देने और उसके द्वारा पूरा किये गये काम को प्रगट, प्रदर्शित और प्रतिबिंबित करे। हमारी सोच, विश्वास, बोलना और कार्य यीशु के द्वारा पूरे किये गये कार्य को ही प्रगट करें।

पवित्र आत्मा की अगुवाई (रहनुमाई) द्वारा सशक्त एवं सामर्थ्यी बनना

ताईवान के टाईनन नगर में चंगाई सभा से पहिले मैं प्रार्थना कर रहा था। पवित्र आत्मा की मौजूदगी को मैं आमंत्रित कर रहा था, अन्य भाषा में प्रार्थना करते हुये मैं अपने हृदय को प्रभु के सामने उँडेल रहा था। फिर मैं पवित्र आत्मा की आवाज को सुनने के लिये तत्पर था; मेरे कान आत्मिक क्षेत्र में परमेश्वर की आवाज को सुनने के लिये लगे हुये थे। तभी मैंने परमेश्वर की आवाज को सुना, यह कहते हुये, ''आज शाम सभा में कोई ऐसा व्यक्ति मौजूद होगा जिसकी गरदन में समस्या है।'' मुँह दबा कर हँसते और मुस्कुराते हुये मैंने जवाब दिया, ''जरूर (अवश्य) वहाँ सभा में मौजूद पाँच सौ लोगों में से कम से कम बीस लोग तो ऐसे होंगे ही जिन्हें गरदन में समस्या होगी। पवित्र आत्मा, आपको विस्तार (तफसील) से इस व्यक्ति के बारे में मुझे बताना होगा यदि आप चाहते हैं कि मैं उसके लिये प्रार्थना करूँ।'' बिना देरी किए पवित्र आत्मा ने बताया, ''वह व्यक्ति एक पुरूष है जिसकी गरदन का आपरेशन हो चुका है।'' मैंने कहा, ''इतना काफी है।''

उस शाम मैं भीड़ के सामने प्रचार करने के लिये मंच पर खड़ा हुआ और प्रचार शुरू करने से पहिले मैंने वह ज्ञान का वचन बताया जो पवित्र आत्मा ने मुझ पर प्रगट किया था। मैंने कहा, ''यहाँ पर एक व्यक्ति मौजूद है जिसकी गरदन का आपरेशन हो चुका है। फिर भी आपकी समस्या ठीक नहीं हुई है और अभी भी आपको चंगाई की जरुरत है। आप जहाँ भी है, वहाँ पर इस समय खड़े हो जाये।'' पीछे की ओर भीड़ में एक व्यक्ति उठ

खड़ा हुआ है। मैंने कहा, ''ठीक जैसे कि पवित्र आत्मा ने मुझ पर आपकी अवस्था (हालत) प्रगट/जाहिर की है, चंगे हो जाओ। चंगाई की सामर्थ्य और मौजूदगी आपकी गरदन में प्रगट हो। अपनी बीमारी से आजाद हो जाओ।'' इसके बाद मैंने संदेश का प्रचार किया।

अगली शाम वही व्यक्ति अपनी गवाही देने के लिये आगे आया। उसने बताया कि बारह साल से वह भयानक तकलीफ और पीड़ा में था और नौ बार उसे आपरेशन से होकर गुजरना पड़ा, परन्तु नौ आपरेशन के बाद भी उसकी तकलीफ कम नहीं हुई थी। दो साल पहिले वह बाईबिल स्कूल भी पढ़ने गया था, परन्तु वह अपनी पढ़ाई (अध्ययन) को वहाँ जारी नहीं रख सका, भयानक दर्द के कारण उसे बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। उसने बताया कि पिछली शाम जैसे ही मैंने उसकी अवस्था का जिक्र किया और वह खड़ा हुआ प्रत्युत्तर में, तभी से उसे चंगाई मिली और वह पूरी तरह से उस भयानक तकलीफ और दर्द से आजाद हो गया।

सबसे आसान चंगाई, छुटकारे और चमत्कार तब प्रगट होते हैं जब हम पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील होते हैं, उसकी आवाज को सुनने के लिये कान लगाऐं रहते हैं और जो कुछ वह हमसे करने के लिये कहता है उसे हम करते हैं। अपनी स्वतंत्रता में अपनी इच्छा के अनुसार किये गये विश्वास के सैकड़ों कार्यों से कहीं अधिक फल परमेश्वर के मात्र एक वचन का पालन करने से प्राप्त होता है।

घनिष्टता (नजदीकी) और संवेदनशीलता

यीशु पवित्र आत्मा से प्रेम करते थे और इसकी मौजूदगी और आवाज के प्रति संवेदनशील थे। इस घनिष्टता (नजदीकी) और संवेदनशीलता के कारण वे हर एक कठिन परिस्थिति का बड़ी कामयाबी से सामना कर पाये। यीशु ने पवित्र आत्मा को अपने ऊपर काबिज होने दिया। पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और मौजूदगी की वास्तविकता (हकीकत) से यीशु बखूबी परिचित (वाकिफ) थे। यूहन्ना 1:32–33 में हम पाते हैं :

और यूहन्ना ने यह गवाही दी, 'मैंने आत्मा को कबूतर के समान आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया है। मैं तो उसे पहिचानता नहीं था, परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है'

परमेश्वर का आत्मा पुराने नियम के बहुत से नबियों (भविष्यद्वक्ताओं) पर उतरता था परन्तु यीशु पर पवित्र आत्मा उतरा और ठहर गया। पवित्र आत्मा को यीशु के अंदर अपने प्रति एक अनोखा प्यार (स्नेह), सरपरस्ती, आत्मीयता (लगाव) और ग्रहणशीलता देखने को मिली जो कि कभी भी किसी अन्य व्यक्ति में देखने को नहीं मिली थी। जब यीशु बड़ी भीड़ में से होकर गुजर रहे थे, भीड़ उन पर गिरी जाती थी, लोग लगातार चिल्ला रहे थे, और यीशु को छू रहे थे, फिर भी यीशु पवित्र आत्मा की धीमी आवाज के प्रति संवेदनशील थे (लूका 8:40–48)। यदि हम यीशु जैसी कामयाबी अपनी सेवकाई में देखना चाहते हैं तो हमें पवित्र आत्मा के साथ इस प्रकार से नजदीकी सम्बन्ध बनाना होगा।

सच्ची सेवकाई पवित्र आत्मा के साथ घनिष्ट और नजदीकी सम्बन्ध में से फूट निकलती है। सेवकाई में कामयाब और फलवन्त होना ही मात्र हमारा मकसद नहीं होना चाहिये। पवित्र आत्मा महज हमारी सेवकाई को कामयाब और फलवन्त बनाने ही के लिये नहीं है, परन्तु हमें पवित्र आत्मा के साथ गहराई से संगति रखनी चाहिये। पवित्र आत्मा की मौजूदगी और सामर्थ्य को सिर्फ अपने फायदे के लिये इस्तेमाल न करें। पवित्र आत्मा के साथ समय बितायें और उसके साथ अपने सम्बन्ध को और गहरा और मजबूत बनाऐं। मैं आपको उभारना चाहता हूँ और प्रेरित करता हूँ कि पवित्र आत्मा को गहराई से समझने और उसके साथ व्यक्तिगत रूप से जुड़ने एवं उसके वरदानों के साथ सेवकाई करने के लिये मेरी पुस्तक जिसका शीर्षक है ''पिता की प्रतिज्ञा'' जरूर पढ़ें।

व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से ध्यान देने के लिये व्यवहारिक सवाल :

1. इस अध्याय को पढ़ने से क्या कभी आपने यीशु को एक ऐसे नमूने (model) अथवा उदाहरण की नजर से देखा था जिससे आप सीख सकते हैं पवित्र आत्मा के साथ घनिष्टता (नजदीकी) कैसे रखी जायें? किस प्रकार से पवित्र आत्मा पर निर्भर रहने वाला यीशु का जीवन आपको प्रेरित करता है?

2. क्या आपको लगता है कि आप पवित्र आत्मा को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं? क्या आपके भीतर कभी पवित्र आत्मा को नजदीकी से जानने की इच्छा या तड़प जागी है?

3. क्या आप पवित्र आत्मा को एक शक्ति (सामर्थ्य) के रूप में देखते हैं या उसे एक व्यक्ति के रूप में देखते हैं? पवित्र आत्मा को एक व्यक्ति के रूप में जानना किस प्रकार से उसके साथ हमारे सम्बन्ध को प्रभावित करता अथवा बदलता है?

4. क्या पवित्र आत्मा सेवकाई में आपका मुख्य सहकर्मी/साथी रहा है या फिर आप स्वतंत्र रूप से बिना पवित्र आत्मा के सेवकाई में व्यस्त रहे हैं? किस प्रकार से आप सेवकाई के हर एक क्षेत्र में पवित्र आत्मा को आदर और न्यौता दे सकते हैं?

5. परमेश्वर के द्वारा पूरे किये गये कार्य की प्रतिक्रिया में अपने अधिकार और जिम्मेदारी को जानने से आपके सोचने, विश्वास करने और कार्य करने के तरीकों में क्या बदलाव आता है?

6. पवित्र आत्मा के किन वरदानों के साथ आप इस्तेमाल हुये हैं या आपने सेवा की है? पवित्र आत्मा के किन वरदानों का आप अनुभव करना चाहते हैं?

7. इस अध्याय को पढ़ने के बाद, क्या आप पवित्र आत्मा की नजदीकी और संवेदनशीलता के प्रति प्रेरित हुये एवं उभारे गये? व्यवहारिक रूप से किस प्रकार से आप पवित्र आत्मा के साथ नजदीकी और संवेदनशीलता में बढ़ सकते हैं?

8. क्या आप पवित्र आत्मा की नजदीकी को केवल सेवकाई में कामयाबी के लिये इस्तेमाल करने का अपने आप को दोषी पाते हैं? किस प्रकार से आप पवित्र आत्मा के साथ अपनी घनिष्टता (नजदीकी) को उसके गलत इस्तेमाल से बचा सकते हैं?

9. क्या आप सेवकाई से थक गये हैं और आत्मिक तनाव में हैं? किस प्रकार से पवित्र आत्मा के साथ घनिष्टता (नजदीकी) इस प्रकार की थकावट और निराशा/हताशा को दूर कर सकती है?

8

चंगाई चमत्कार

बीमारी शैतान का हथियार है, जो कि आदम के पापमय विद्रोह के कारण इस संसार में आई और इंसान को मौत की ओर ले जाती है। यीशु ने हर एक उस व्यक्ति को जो उसके पास आया, चंगाई देकर परमेश्वर की इच्छा को प्रगट किया (लूका 4:40)। किसी भी बीमार और रोगी व्यक्ति को यीशु ने कभी भी वापस नहीं लौटाया वरन् चंगा किया। आज भी यीशु बदला नहीं है और वह हमेशा एक सा है (इब्रानियों 13:8)। यीशु ने पूरी तरह से पिता का प्रतिनिधित्व किया और उसके मनुष्य के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करता था। यीशु ने पिता का प्रतिनिधित्व करते हुए कभी भी किसी को बीमार या रोगी नहीं किया। ठीक इसके उलट यीशु ने शैतान के सब सताए हुओं को अच्छा किया (प्रेरितों 10:38)। हमारा अच्छा पिता अपनी किसी भी संतान को अनुशासित करने या सबक सिखाने के लिये शैतान, दुष्ट–आत्माओं और बीमारियों का इस्तेमाल कभी नहीं करेगा। इस निर्विवाद सच्चाई के साथ हमें सुसमाचार को हर एक बीमार, आत्मा में दुखित और भटके हुऐ व्यक्ति तक पहुँचाना है।

<u>इस संसार के लिये आप मसीह हैं</u>

यीशु ने कहा कि वह जगत की ज्योति है (यूहन्ना 8:12)। यीशु ने अपने चेलों को भी जगत की ज्योति कहा है (मत्ती 5:14)। मित्रो, यीशु और उसके चेले दोनों ही जगत की ज्योति हैं। पुनर्जीवित हो उठने के बाद यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा चेलों के अंदर रहा (वास किया) और आज भी वह पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अंदर रहता (वास करता) है (कुलुस्सियों 1:27)। इसी रीति से संसार के लिये आप मसीह हैं। आप वह बर्तन हैं जिसमें अनन्त जीवन, चंगाई की सामर्थ्य, पुनरुत्थान की शक्ति, शान्ति और आनन्द पाया जाता है। आप स्वयं स्त्रोत नहीं है, परन्तु जीवन और चंगाई का स्त्रोत आपके अंदर स्थायी रूप से रहता है और वह आपको कभी न छोड़ेगा (यूहन्ना 14:16–17; इब्रानियों 13:5)। इसलिये आप मनुष्यों की पीड़ा का जवाब (समाधान) हैं जो लोग दुख, दर्द, पीड़ा, सताव और बन्धनों में है। उनकी समस्या के समाधान के लिये आपके पास अधिकार, सबसे ऊँचा नाम, पवित्र आत्मा की मौजूदगी और सामर्थ्य हैं। आपको लोगों की चंगाई के लिये परमेश्वर से निवेदन नहीं करना है, परन्तु चंगाई तो परमेश्वर का ईश्वरीय जीवन है जो आपके अंदर से बहता है बीमारों की चंगाई के लिये। आप मसीह की देह और पवित्र आत्मा का मन्दिर है,

इसलिये आप मसीह की देह का अभिन्न भाग होने के कारण अपने आप को चंगाई की प्रक्रिया से कभी भी अलग नहीं कर सकते। बीमारों की चंगाई के लिये आप हमेशा उस प्रक्रिया का हिस्सा बने रहेंगे। आपके शब्द, आपका विश्वास और आपके कार्यों के द्वारा लोग चंगाई प्राप्त करेंगे।

अभी तक धर्म ने आपसे झूठ बोला और शैतान ने आपके दिमाग में यह सोच लाकर आपसे धोखा किया है कि आप कुछ नहीं कर सकते। बिना यीशु के हम कुछ नहीं कर सकते, परन्तु आप यीशु से जुड़े हुये हैं, इसलिये आप सब कुछ कर सकते हैं। यीशु ने परमेश्वर से हमारा मेल कराया और हमें परमेश्वर के साथ एक कर दिया है (रोमियों 5:10)। यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी है कि वे बीमारों को चंगा करे, न कि यह कि वे बीमारों को चंगा करने का निवेदन परमेश्वर से करे (मत्ती 10:8)। आप खुद तो चंगाई का स्त्रोत नहीं हैं परन्तु आप वह माध्यम (जरिया) हैं जिसके द्वारा उसकी मौजूदगी, सामर्थ्य और अनुग्रह बहता है। यदि किसी को चंगाई की जरुरत है तो आप अपने को उपलब्ध करें। यीशु आपको धोखा नहीं देगा और न निराश करेगा परन्तु अपनी महिमा के कामों में भागीदार बनने का सौभाग्य प्रदान करेगा।

जन्म के लंगड़े से पतरस ने अपनी ओर देखने के लिये कहा (प्रेरितों 3:4) क्योंकि पतरस जानता था कि वह वो माध्यम (जरिया) है जिसमें से परमेश्वर की सामर्थ्य बहती है। उस चंगाई और अद्‌भुत चमत्कार के बाद भीड़ जमा हो गई और पतरस ने उत्तर दिया, ''... तुम इस मनुष्य पर क्यों आश्चर्य करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो कि मानो हम ही ने अपनी सामर्थ्य या भक्ति से इसे चलने–फिरने योग्य बना दिया'' (प्रेरितों 3:12)। पतरस जानता था कि उसके अंदर रहने वाला पवित्र आत्मा बीमारी और समस्या का समाधान है, परन्तु पवित्र आत्मा बिना हमारे शब्दों, विश्वास और कार्यों के काम नहीं करेगा। आपकी सेवकाई में प्रभावशाली रूप से चंगाईयाँ उन लोगों के लिये प्रगट होती है जो आपको चंगाई की प्रार्थना करने की अनुमति देते हैं, और जो आपकी और आपकी बातों की ओर ध्यान देते हैं। परन्तु चमत्कार प्रगट होने के बाद ध्यान रहें कि उस चंगाई/चमत्कार का श्रेय हमें नहीं परन्तु यीशु ही को मिले। महिमा और आदर हमें नहीं परन्तु केवल यीशु को मिले। चंगाई में प्रमुख रूकावट यह होती है कि परमेश्वर जिन्हें चंगाई का माध्यम बना कर इस्तेमाल करना चाहता है, वे या तो अपनी भूमिका के महत्व को समझते नहीं हैं या फिर अपने आप को उपलब्ध नहीं करते हैं, लोगों की चंगाई का माध्यम बनने के लिये। झूठी नम्रता (हलीमी) आपकी ईश्वरीय बुलाहट और परमेश्वर के द्वारा आपको दिये गये अधिकार के पद को नकारती और उसका खण्डन करती है।

चंगाई के लिये विश्वास

कुछ लोग विश्वास को किसी की चंगाई के लिये की गई निराधार उम्मेद समझते हैं। उदाहरण के रूप मेंः कोई व्यक्ति भरोसे से कहता है, ''मैं आपके लिये प्रार्थना करूँगा और आप चंगे हो जायेंगे।'' परन्तु अमुक व्यक्ति क्यों चंगा हो जायेगा? किस आधार पर उस व्यक्ति के शरीर में चंगाई प्रगट होगी? कुछ सकारात्मक आशा (उम्मेद) को ही विश्वास समझते हैं। यह बिल्कुल भी विश्वास नहीं है, परन्तु केवल सकारात्मक कल्पना, अटकलबाजी या कयास है। सच्चे विश्वास में चलना और कार्य करना चाहते हैं तो इस अंतर को जानना और समझना बहुत जरूरी हैं।

जब इस प्रकार का व्यक्ति प्रार्थना करता है और चंगाई प्रगट नहीं होती तो वह खुद असमंजस में पड़ जाता है और कहता है, ''मैंने तो विश्वास किया था कि बीमार लोग चंगे हो जायेंगे, परन्तु वे चंगे क्यों नहीं हुऐ?'' मैं फिर से दोहराता हूँः किसी की चंगाई के लिये की गयी निराधार उम्मेद को विश्वास नहीं कहते हैं। विश्वास का अपना आधार होता है कि अमुक बीमार क्यों चंगा हो जायेगा – चंगाई का भरोसा करने का ठोस कारण होता है – और विश्वास की बुनियाद के बिना चमत्कार की कोई भी उम्मेद महज एक कोरी कल्पना, अटकलबाजी और कयास है। महज यह कहना, ''परमेश्वर कुछ भी कर सकता है'' विश्वास नहीं है।

चंगाई के लिये जिस विश्वास की जरुरत होती है, उस विश्वास की तिहरी (three-fold) बुनियाद होती है, अर्थात उस विश्वास की बुनियाद निम्नलिखित तीन बातों पर टिकी होती हैः समझ (बोध) और भरोसा, आसरा और निर्भरता, और अधिकार–युक्त शब्द और कार्य।

समझ (बोध) और भरोसा (यकीन करना) : विश्वास यह जानता और समझता है कि पिता ने हर बीमारी, दर्द और पीड़ा यीशु के शरीर पर लाद दी थी और यीशु ने उन्हें अपनी इच्छा से उठा/सह लिया। विश्वास छुटकारे के इस महान कार्य पर भरोसा रखता है। विश्वास यह उम्मीद करता है कि यीशु के किये गये उस महान कार्य के द्वारा लोगों को बीमारी, दर्द और पीड़ा से छुटकारा भौतिक, वास्तविक क्षेत्र में प्राप्त एवं प्रगट हो।

आसरा और निर्भरता : विश्वास पवित्र आत्मा की मौजूदगी और शख्शियत (व्यक्तित्व) के साथ घनिष्ट और नजदीकी सम्बन्ध रखता है, उसकी सामर्थ्य पर निर्भर रहता है और पवित्र आत्मा की अगुवाई और दिशा–निर्देशन में कार्य करता है।

<u>अधिकारयुक्त शब्द और कार्य</u> : विश्वास भौतिक क्षेत्र में अपने आत्मिक अधिकार का इस्तेमाल अधिकार–युक्त शब्दों के साथ आज्ञा देने के द्वारा करता है और जो छुटकारा पिता और यीशु ने बीमारी और शैतान से उपलब्ध कराया है, उसे लागू करता है अथवा पुष्ट करता है। विश्वास बीमारी के सोच–विचार, शब्द और कार्यो से सामना करता है।

जब भी आप चंगाई के लिये विश्वास करते या विश्वास का कदम उठाते हैं तो आप समझ (बोध) और भरोसा (यकीन) करें, पवित्र आत्मा का आसरा लें और उस पर निर्भरता जताऐं, और अपने अधिकार का इस्तेमाल शब्दों और कार्यों के द्वारा करें। यदि आप ऐसा नहीं कर रहे हैं तो आप बाईबिल में नये नियम में बताये गये विश्वास के अनुसार कार्य नहीं कर रहे हैं।

<u>विश्वास की पहल बनाम पवित्र आत्मा की पहल वाली चंगाईयाँ</u>

चंगाईयों की पहल दो बुनियादी तरीकों से होती है। या तो हम बीमारी के खिलाफ विश्वास का कदम बढ़ाते हैं या फिर पवित्र आत्मा की बाट जोहते और उसकी अगुवाई के अनुसार सेवकाई करते हैं। मैं शुरू से ही इस बात को साफ करना चाहता हूँ कि हमें दोनों ही तरीकों से कार्य (सेवकाई) करनी चाहिये। यदि हम इस अंतर को समझ लें तो इससे हमें चंगाई की सेवकाई करने में बहुत मदद मिलेगी। यह भी याद रखें कि इन दोनों ही तरीकों में पवित्र आत्मा शामिल है, परन्तु अलग–अलग तरह से शामिल है।

विश्वास की पहल वाली चंगाईयों के लिये, परमेश्वर के स्वभाव का प्रकाशन और यीशु के द्वारा हमारी चंगाई के लिये किये गये कार्य का प्रकाशन हम अपने हृदय में रखते हैं। परमेश्वर के स्वभाव की शिक्षा और यीशु के कार्य का प्रकाशन दोनों पवित्र आत्मा ही से हमें मिलते हैं। उस प्रकाशन को प्राप्त करके हम उस जरुरत को पूरा करने के लिये कार्य करते हैं जो जरुरत हमें सामने दिखाई दे रही है – यदि हम अपने सामने किसी को बीमार देखते हैं तो हम विश्वास का कदम बढ़ाते हैं। यहाँ पर हमें किसी के लिये प्रार्थना करने से पहिले किसी भविष्यवाणी या नबूवत के वचन का इंतजार करते रहने की जरुरत नहीं होती। यदि कोई व्यक्ति दर्द और पीड़ा में है और अपने लिये प्रार्थना करवाना चाहता है तो आप विश्वास के साथ उसके लिये प्रार्थना करें। जब हमने अपने विश्वास के अनुसार उस व्यक्ति के ऊपर हाथ रखकर प्रार्थना करी और उसे चंगा हो जाने की आज्ञा दी, उसके बाद पवित्र आत्मा हमारे विश्वास के द्वारा सामर्थ्य के साथ कार्य करता है और बीमार को चंगा करता है। प्रभु यीशु के जीवन के द्वारा परमेश्वर ने अपनी इच्छा हमारे ऊपर प्रगट कर

दी है, इसलिये कदम बढ़ायें और जो कोई भी प्रार्थना कराने का इच्छुक है, उसके लिये प्रार्थना करें।

पवित्र आत्मा की पहल वाली चंगाईयों में हमें पवित्र आत्मा की ओर से 'रेमा' वचन किसी व्यक्ति विशेष अथवा कुछ व्यक्तियों के लिये प्राप्त होता है। पवित्र आत्मा के ये वरदान जैसे ज्ञान का वचन, आत्माओं की परख, चंगाई का वरदान, आदि है, और ये वरदान किसी विशेष परिस्थिति या हालात के लिये पवित्र आत्मा की अगुवाई एवं दिशा–निर्देशन को प्रगट या जाहिर करते हैं। इस प्रक्रिया को हम स्वयं शुरू नहीं कर सकते, सिर्फ पवित्र आत्मा ही इसकी पहल करता है (1 कुरिन्थियों 12:11)। हालांकी इसके लिये हमें पवित्र आत्मा को सुनने के लिये जागरूक और संवेदनशील बने रहने की जरुरत होती है, जब भी हम पवित्र आत्मा के इन वरदानों/वाणी को सुन एवं जान पाते हैं। पवित्र आत्मा की अगुवाई, दिशा–निर्देशन और वरदानों को प्राप्त करने के बाद, हम पर जो भी प्रगट हुआ है, हम उसे बोलते हैं, उसकी घोषणा करते, उसे स्पर्श आदि करते हैं। जब हम पवित्र आत्मा की पहल पर प्रतिक्रिया करते हैं, तो वह अपनी सामर्थ्य को प्रगट करता है। इसे और अच्छी तरह से समझने के लिये नीचे दिये गये चार्ट को देखें।

विश्वास	पवित्र आत्मा
विश्वासी के विश्वास के द्वारा पहल (शुरुआत) होती है।	पवित्र आत्मा के दिशा–निर्देशन में पहल (शुरुआत) होती है।
विश्वासी के सक्रिय (मुस्तैद) विश्वास के द्व ारा पवित्र आत्मा कार्य करता है और चंगाई की सामर्थ्य प्रगट होती है।	चंगाई की सामर्थ्य आत्मिक वरदानों के द्वारा प्रगट होती है और विश्वासी के विश्वास के क्षेत्र के परे कार्य करती है।
किसी भी जगह, किसी भी समय इसे लागू किया जा सकता है।	पवित्र आत्मा के द्वारा चुने गये किसी विशेष क्षण (समय) पर यह लागू होता है और कार्य करता है।
जब हम बीमारों के लिये प्रार्थना करने के इच्छुक और तैयार होते हैं, यह तब होता	जब पवित्र आत्मा कार्य करना चाहता है यह तब होता है।
पवित्र आत्मा हमारे अधिकार–युक्त शब्दों और विश्वास के कार्यों के द्वारा कार्य करता है। (हमारे विश्वास पर पवित्र आत्मा प्रतिक्रिया दिखाता है।)	पवित्र आत्मा अपने वरदानों के अनुसार (मुताबिक) कार्य करता है। (हम पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति प्रतिक्रिया दिखाते हैं।)

हमारे प्रकाशन तक ही यह सीमित होता है।	हमारे व्यक्तिगत विश्वास की सीमा से बढ़कर काम करता है।
पवित्र आत्मा हमारे विश्वास को जानता है।	हम पवित्र आत्मा की अगुवाई को जान पाते हैं।
पवित्र आत्मा हमारे अंदर कार्य करता है।	पवित्र आत्मा हम पर कार्य करता है, हम पर वह नियंत्रण करके हम पर अपनी बातें प्रगट करता है।
प्रकाशन प्राप्त (ग्रहण करने) और विश्वास से कार्य करने पर सफलता मिलती है।	पवित्र आत्मा की घनिष्टता (नजदीकी) में बने रहने और उसकी अगुवाई (दिशा–निर्देशन) के प्रति प्रतिक्रिया दिखाने पर सफलता मिलती है।
उदाहरण के लिए मरकुस 5:24–34 पढ़ें। इस कहानी में उस रोगी स्त्री ने अपने विश वास से यीशु को ढूढ़कर उसे छुआ और चंगाई प्राप्त की। यीशु उसे जानता भी नहीं था। यीशु ने उस स्त्री से कहा कि तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें चंगा किया।	उदाहरण के लिए यूहन्ना 5:1–15 पढ़ें। इस कहानी में उस अड़तीस साल से लंगड़े व्यक्ति को यीशु के विषय में कोई जानकारी नहीं थी। यीशु पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के अनुसार उसे ढूढ़कर चंगा किया जब कि उस व्यक्ति को यीशु पर विश्वास भी नहीं

मैं आपको उत्साहित करता हूँ कि आप निरन्तर मनन करते रहें और पवित्र आत्मा से प्रकाशन और अन्तर्दृष्टि माँगें और जानें कि चंगाई के बारे में/सम्बन्ध में यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनर्जीवित हो उठना आपको क्या प्रकाशन और अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं। पवित्र आत्मा से उस जीवित ज्ञान का खजाना हासिल करें और उसके अनुसार साहस से कार्य करें। पवित्र आत्मा से घनिष्टता (नजदीकी) की भूख रखें और उसके साथ समय बिताऐं ताकि आप उसकी मौजूदगी के प्रति संवेदनशील बनें और आपको उसकी मौजूदगी का एहसास हो ताकि आप उसकी (पवित्र आत्मा की) अगुवाई पर प्रतिक्रिया देने को तैयार रहें और उसकी आवाज को सुनकर जो वह चाहता है, वैसा ही करें। अत्यधिक आत्मिक बनने का दिखावा न करें और केवल पवित्र–आत्मा की अगुवाई में चलने की कोशिश करें, क्योंकि यदि आप अत्यधिक आत्मिक बनने का दिखावा करेंगे तो बीमारों की चंगाई के बहुत से अवसरों को आप गवाँ (खो) देंगे।

वरदानों में कार्य करना

पवित्र आत्मा कई तरीकों से चंगाई की पहल (शुरुआत) करता है, उनमें से एक प्रमुख तरीका है पवित्र आत्मा के वरदान। ये वरदान देने का निर्णय पवित्र आत्मा का अपना निर्णय है कि किसको और कब दे, परन्तु इन वरदानों को प्राप्त करना हमारी जागरूकता और संवेदनशीलता पर निर्भर करता है। यह पूरी फेहरिस्त/सूची (list) तो नहीं है परन्तु मेरी वर्षों की सेवकाई के अनुभव को लेकर, मैंने निम्नलिखित पवित्र आत्मा के वरदानों की फेहरिस्त (सूची) बनाई है जो कि लोगों की चंगाई में महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

ज्ञान का वचन – बीमारी, दुर्बलता या रोग के बारे में विशिष्ट जानकारी या फिर जिस व्यक्ति को चंगाई की आवश्यकता है, उसके बारे में जानकारी। अक्सर यह जानकारी टुकड़ों में आपको मिलती है; मतलब यह है कि आपको उस बीमार व्यक्ति या बीमारी के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती परन्तु सम्पूर्ण जानकारी आपको नहीं होती है। जब आप विश्वास का कदम बढ़ाते हुये उस व्यक्ति को बुलाते/पुकारते/बताते हैं और उसके लिये प्रार्थना करते हैं तो अक्सर रोगी को तुरन्त चंगाई अथवा छुटकारा मिल जाता है।

आत्माओं की परख – यह आत्मिक क्षमता (योग्यता) किसी विशेष हालात में पहचानने के मकसद (उद्देश्य) के लिये होती है जिससे की हम परमेश्वर या आत्मिक क्षेत्र में पाई जाने वाली दुष्ट–आत्मा और अन्धकार की शक्तियों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया (प्रत्युत्तर) दे सकें। चंगाई के सम्बन्ध में आप किसी व्यक्ति या समूह पर चंगाई प्रदान करने के लिये उपस्थित पवित्र आत्मा की मौजूदगी और सामर्थ्य को पहिचान सकते हैं या फिर आप रोगी करने और सताने वाली विशेष दुष्ट–आत्मा को पहिचान पाते हैं। पहिचानने के बाद, आप विश्वास का कदम बढ़ाते हुये घोषणा करते हैं और जब आप आत्मिक क्षेत्र पर प्रभाव डालते हैं, तो बीमार को चंगाई मिलती है।

भविष्यवाणी (नबूवत) – हालांकि इसके द्वारा सीधे तौर पर तो बीमार को चंगाई नहीं मिलती परन्तु नबूवत (prophetic word) अर्थात् परमेश्वर के हृदय से आया हुआ यह वचन बीमार के लिये प्रार्थना करने के पहिले, प्रार्थना करने के दौरान (बीच में) या प्रार्थना करने के बाद प्राप्त हो सकता है, और उस बीमार को मजबूत (दृढ़) बनाता है, उत्साहित करता और तसल्ली देता है, जिससे कि रोगी अपनी चंगाई प्राप्त करने के लिये तैयार हो सके। नबूवत का वचन चंगाई में आने वाली रूकावटों को इस प्रकार से दूर करता है और रोगी को चंगाई मिलती है।

चंगाई के वरदान – यही एक वरदान है जिसका वर्णन यूनानी भाषा में बहुवचन (plural) में किया गया है ''चंगाइयों के वरदान।'' कभी पवित्र आत्मा किसी विशेष बीमारी की चंगाई के लिये अपना अनुग्रह ऊँडेलता है। जब आप किसी सभा में एक ही बीमारी से बहुत से रोगियों को चंगाई पाते हुये देखते हैं, तो यह इस बात का सबूत है कि चंगाइयों के वरदान सभा में कार्य कर रहे हैं। ऐसे में उस बीमारी से पीड़ित सभी लोगों को या फिर उस बीमारी से मिलती–जुलती बीमारी से पीड़ित सभी लोगों को आगे बुलाएें, क्योंकि चंगाई का अनुग्रह वहाँ पर मौजूद है और काम कर रहा है। ऐसा करने पर वहाँ पर अधिक से अधिक लोग चंगाई प्राप्त करने पायेंगे।

विश्वास का वरदान – विशिष्ट चंगाई के लिये अथवा चमत्कार के लिये ऐसे विश्वास का प्रदान किया जाना (हस्तान्तरण) जिसमें कि जरा भी शक, सन्देह या अविश्वास नहीं पाया जाता। जब यह वरदान आपको मिलता है या आपके ऊपर आता है, तब बड़ा हियाव, साहस और भरोसा आपके हृदय में आते हैं। ऐसे में आपको तुरन्त प्रार्थना करने के लिये बढ़ना चाहिये और चंगाई और चमत्कार के प्रगट होने के लिए विश्वास से घोषणा करनी चाहिये।

यदि आप पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में सीखने के इच्छुक हैं, और जानना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा के वरदान किस तरह से कार्य करते हैं, तो मेरी लिखी पुस्तक 'पिता की प्रतिज्ञा' को अवश्य पढ़ें।

दुष्ट आत्माओं का सामना

जैसे कि हमने पिछले अध्यायों में देखा कि बहुत सी बीमारियाँ, रोग और दुर्बलता शैतान और दुष्ट–आत्माओं के कारण मनुष्यों पर आती हैं (अय्यूब 2:7; लूका 13:11; लूका 4:40–41)। अन्धकार के क्षेत्र से ही बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं और इस संसार में आती हैं। कई सालों तक हजारों लोगों के बीच सेवकाई करने के बाद, मैंने अनुभव किया और यह जाना कि 50–70 प्रतिशत बीमारियाँ दुष्ट–आत्माओं के कारण लोगों पर आती हैं। कुछ अन्य सेवकों का (जिन्होंने मुझसे भी अधिक वर्षों तक सेवकाई की है) यह मानना है कि 50–90 प्रतिशत तक बीमारियाँ सीधे तौर पर शैतान और दुष्ट–आत्माऐं लाती हैं। खैर आँकड़ों को छोड़े पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि आपको बीमारों की चंगाई के लिये दुष्ट–आत्माओं का सामना करना पड़ेगा और दुष्ट–आत्माओं को निकल जाने की आज्ञा देनी पड़ेगी, तब लोग चंगे हो जायेंगे।

कई वर्षों के अनुभव के बाद, मैंने अनुभव किया और पहिचान पाया कि रोग स्वप्रतिरक्षित रोग (autoimmune diseases) और सिंड्रोम (syndrome) आदि दुष्ट–आत्माओं के कारण बहुत से लोगों को होते हैं, कई प्रकार की एलर्जी भी दुष्ट–आत्माओं के कारण होती हैं। जब आपको पता चल जाता है कि बीमारी या समस्या का कारण दुष्ट आत्मा है, तब अपने विश्वास पर ध्यान केन्द्रित करने में आपको आसानी होती है।

प्रार्थना के दौरान रोगी को अचानक दर्द होना, दर्द का जगह बदलना और शरीर में हो रहे कुछ ऐसे लक्षण इस बात की ओर ईशारा करते हैं कि बीमारी दुष्ट–आत्मा के कारण है। ऐसे मामलों में अपने विश्वास पर ध्यान केन्द्रित करें, दुश्ट–आत्माओं को आज्ञा दें और प्रार्थना में बने रहें।

मैं बात कर रहा हूँ उन लोगों की जिनकी बीमारी दुष्ट–आत्माओं की वजह से थी और परमेश्वर ने उन्हें चंगा किया, इनमें से 20–40 प्रतिशत में ऐसा भी सम्भव हो सकता है कि दुष्टआत्मा चंगाई के बाद फिर से बीमारी को लाती है। रोगी को बीमारी के लक्षणों को अस्वीकार (खारिज) करना, उनका सामना करना, और अपने मुँह के वचनों के द्वारा उसका सामना करना, रोग की आत्मा को बाँधना और उसे यीशु के नाम में निकल जाने की आज्ञा देना भी खिखायें, तो वह बीमारी से आजाद बना रहेगा। यदि वह व्यक्ति फिर भी इस क्षेत्र में मजबूत न होने के कारण संघर्ष कर रहा है तो किसी अन्य विश्वासी के साथ मिलकर उसकी बीमारी के लिये सहमति जताना या फिर इस व्यक्ति के लिये फिर से प्रार्थना करना भी मददगार साबित हो सकता है।

एक शाम केप टाऊन, दक्षिण अफ्रीका में पास्टर्स और लीडर्स की कॉनफ्रेन्स में शिक्षा देने के बाद मेरा ध्यान एक ऐसी महिला की ओर गया जो कि कई साल से एक रहस्मय और कमजोरी लाने वाले दर्द से पीड़ित थी। वह कलीसिया रोपण (church planting) करने वाले व्यक्ति की पत्नी है और दोनों मध्य–अफ्रीका में सेवकाई करते हैं। कुछ सवाल पूछने के बाद और लक्षणों को देखकर, मैं जान पाया कि वह फाइब्रोमायल्जिया (fibromyalgia) रोग से पीड़ित है। यह एक ऐसी बीमारी है जिसका सही पता नहीं लग पाता है और लोग इसे कोई और बीमारी समझ लेते हैं। पहिले भी इस बीमारी और इन लक्षणों वाले रोगियों के लिये मैं प्रार्थना कर चुका था, और परमेश्वर ने उन्हें चंगा किया था और मैंने देखा था कि उन सभी मामलों में समस्या की जड़ अर्थात् बीमारी का कारण दुष्ट–आत्मा ही थी।

उस क्षण उस महिला को छाती और पीठ में दर्द हो रहा था। मैंने पवित्र आत्मा को आमंत्रित किया और अपना ध्यान उस न दिखाई देने वाले शत्रु की ओर लगाया और आज्ञा दी, ''सताने और पीड़ित करने वाले शैतान, मैं तुझे बाँधता और निकालता हूँ इसी समय! इस महिला को छोड़ दें।'' मैंने उस महिला से पूछा कि वह कैसा महसूस कर रही है। उसने तुरन्त बताया कि दर्द ने अपनी जगह बदल ली है। अब दर्द उसकी जांघ (thigh) में है। मैंने आज्ञा दी, ''शक्तिहीन, कमजोर शैतान! यीशु तुझे कुचल और हरा चुका है। तू अब मुकाबला/सामना नहीं कर सकता; निकल जा इसी समय।'' उस महिला ने फिर जवाब दिया, ''उसने फिर अपनी जगह बदली है; अब वह मेरी पैर की पिण्डलियों में है।'' मैं निरन्तर तब तक प्रार्थना करता रहा जब तक दर्द उसके पंजों और पैर की उंगलियों तक नहीं पहुँच गया। ''तू इस महिला के अंदर नहीं रह सकता शैतान, यीशु के नाम में मैं तुझे कुचलता और निकालता हूँ। अभी निकल जा।'' वह महिला उठ खड़ी हुई, करीब पन्द्रह कदम तक चली, वापस आते में वह चिल्लायी और जमीन पर गिर पड़ी। वह जमीन पर लोटने और चीखने–चिल्लाने लगी। वहाँ मौजूद लोग बड़े उत्सुक थे और चाहते थे कि मैं फिर से उस दुष्ट–आत्मा के खिलाफ प्रार्थना करूँ। परन्तु मैं रूका रहा और उस प्रगटीकरण को जानने–समझने और उसका आंकलन करने की कोशिश में रहा।

उसके बाद वह महिला रोने लगी और यीशु का धन्यवाद करने लगी। जब वह शान्त हुई और इस अवस्था में आई कि मुझसे बात कर सकी, तब मैं समझा कि वह चीखना–चिल्लाना उस अत्यधिक खुशी के कारण था जो कि वह पिछले दस साल में पहिली बार दर्द से पूरी तरह से आजाद होने के बाद महसूस कर रही थी। वह उठ खड़ी हुई, झुकी और इधर–उधर की ओर मुड़ी, चली–फिरी, उछली–कूदी और वह दर्द से पूरी तरह से आजाद थी। उस पूरे हफ्ते कॉनफ्रेन्स में वह आयी; मैंने उसे देखा कि वह पूरी तरह से दर्द से मुक्त और स्वस्थ बनी रही।

वहाँ के मुख्य अगुवे ने जिनके नीचे वे लोग काम करते थे, मुझ से कहा, ''हम पिछले दस साल से लगातार इस महिला के लिये प्रार्थना करते रहे हैं, परन्तु इसे चंगाई नहीं मिली। आज इसे चंगी देखकर मैं हैरान हूँ।'' मैंने उन महोदय से पूछा, ''क्या आपने कभी प्रार्थना के दौरान उस सताने और पीड़ित करने वाली आत्मा को निकल जाने की आज्ञा दी?' उत्तर 'न' में था। दोस्तों, जब बीमारी की जड़ में दुष्ट–आत्मा होती है तो बहुत सी बार उस आत्मा को अधिकार के साथ सम्बोधित करना पड़ता है, डाँटना और आज्ञा देनी पड़ती है, तब रोगी को स्थायी चंगाई मिलती है।

अपनी आत्मा में से प्रार्थना करना

जो बात आपको बताने जा रहा हूँ, उसे जानकर आप हैरान रह जाऐंगे; और यह मैंने वर्षों के अभ्यास के बाद सीखा है; आप अपने मन, भावनाओं या आत्मा से प्रार्थना कर सकते हैं।

मन : यह हमारे दिमाग और प्राण का मेल (संयोजन) या जोड़ (मिश्रण) है। हमारा मन ज्ञान संबंधी बातों को समझने और उसकी वजह जानने की योग्यता प्रदान करता है; यही पर दिमागी ज्ञान इकट्ठा (जमा) होता और इस्तेमाल होता है। प्रार्थना के सम्बन्ध में मन की सहायता से हम बोलने के लिये शब्दों को सूत्रबद्ध या तैयार करते हैं। शब्दों का जो भण्डार (ज्ञान सम्बंधी बातों का) हमारे मन में जमा होता है, उसमें से शब्दों को लेकर हम बोलने की तैयारी करते हैं।

बहुत से विश्वासी सिर्फ ज्ञान या दिमागी जानकारी के लिये चंगाई के इस विषय को पढ़ेंगे ताकि वे ज्ञान–संबंधी शब्द तैयार और सूत्रबद्ध कर सके। बीमारों के लिये प्रार्थना करने हेतु इस तरह अपने मन में जमा ज्ञान का इस्तेमाल करके प्रार्थना करने हेतु। इस तरह से अपने मन में जमा ज्ञान का इस्तेमाल करके प्रार्थना करते हैं और जल्दी ही परिणाम न देखने पर निराश हो जाते हैं। वे अक्सर यह कहते है, "सारे संसार का विश्वास मेरे पास है।" उनका मतलब यह होता है कि बौद्धिक रूप से चंगाई की उम्मीद लगाने के लिये सारा ज्ञान उनके पास है। लेकिन यह विश्वास कदाचित नहीं है। वचन का दिमागी ज्ञान प्रकाशन से बिल्कुल भिन्न और अलग है। ज्ञान हमारे मन मस्तिष्क में रहता है जबकि प्रकाशन वह आत्मिक ज्ञान है जो कि हमारी आत्मा में पाया जाता है। आप ईश्वरीय चंगाई के बारे में कुछ घण्टों में सारा ज्ञान हासिल कर सकते हैं, परन्तु प्रकाशन आत्मा ही से प्राप्त होता है। पवित्र आत्मा पर निर्भर हुऐ बिना भी आप ज्ञान हासिल (अर्जित) कर सकते हैं, परन्तु प्रकाशन सिर्फ परमेश्वर ही देता है। विश्वास करने और प्रार्थना करने में आपका मन भूमिका निभाता है, परन्तु उसे आत्मा की आधीनता में होना आवश्यक/जरूरी है।

भावनाऐं : यह शरीर और प्राण का मेल (संयोजन) या जोड़ (मिश्रण) है। भावनाओं को हम महसूस करते और अभिव्यक्त करते अथवा कहते हैं। बीमारी के प्रति रहम, दया और हमदर्दी बीमारों की चंगाई के लिये प्रार्थना करने में बड़े प्रेरक बन सकते हैं। रहम, दया और हमदर्दी के कारण हमारे अंदर अपने अजीज या रोगी को चंगाई पाते हुये देखने की तीव्र इच्छा जागेगी।

इंसानी हमदर्दी या दया और परमेश्वर के ईश्वरीय तरस में जमीन–आसमान का अंतर है। हमदर्दी और दया वो इंसानी भावनायें हैं जो कि आपको अपनी आत्मा से विश्वास

करने से रोक सकती है। ज्यादातर लोगों के लिये अपने परिवार या अजीज की चंगाई के लिये विश्वास कर पाना बहुत कठिन होता है, क्योंकि हमारी गहरी इच्छाऐं वास्तविक विश्वास के रास्ते में आ जाती हैं, और रूकावट बनती हैं। जब हम भावनाओं में प्रार्थना करते हैं तो यह निष्फल (बेकार) साबित होता है, क्योंकि इच्छा विश्वास नहीं है। विश्वास आत्मा का फल और आत्मिक गुण है जबकि इच्छा चाहें कितनी नेक क्यों न हो आत्मा का फल नहीं है। संसार की सारी इच्छाऐं एक साथ मिलकर भी चाहें तो एक चमत्कार को उत्पन्न (प्रगट) नहीं कर सकती हैं, यदि ऐसा होता तो संसार भर के अस्पतालों में चमत्कार प्रगट हो रहे होते। बीमारों को चंगाई देने के लिये यीशु तरस से भर गये (मरकुस 1:41) और यह ईश्वरीय तरस आत्मा का कार्य है, न कि प्राण का कार्य। जब मैंने बीमारों के लिये प्रार्थना करने के दौरान अपनी इन्सानी भावनाओं और जज्वातों को दूर रखना सीखा है तब मैंने सेवकाई में कामयाबी को देखा है। मैं जब अपने किसी अजीत के लिये प्रार्थना (चंगाई के लिये) करता हूँ तो ऐसे, जैसे कि उस व्यक्ति से मैं पहिले कभी नहीं मिला और वह मेरे लिये एक अन्जान शक्स हो। प्रार्थना या सेवकाई के दौरान एक क्षण को भूल जाऐं कि वह बीमार व्यक्ति आपका कितना प्रिय है और कितने दुख और पीड़ा में है, और अपनी आत्मा से अपने काम में लग जाऐ और उस कार्य को करें।

आत्मा : इसको हम अन्दरूनी मनुष्य भी कहते हैं। यह अत्मिक क्षेत्र में शरीर का समकक्ष (प्रतिरूप) है। क्योंकि हम बात करते हैं आत्मिक आँखों की, आत्मिक कानों की और आत्मिक संसार को छूने की। पवित्र आत्मा आपके शरीर में जो आपकी आत्मा है, उसमें रहता/वास करता है। सच्चा विश्वास मानसिक और भावनात्मक नहीं परन्तु हमारी आत्मा और हृदय का कार्य है।

हमारी आत्माओं को विश्वास करने के लिये प्रकाशन की जरुरत होती है। प्रकाशन उस भूखे हृदय पर प्रगट होता अथवा मिलता है जो कि परमेश्वर के वचन के जीवित ज्ञान की खोज में लगा होता है। प्रकाशन हमें तब मिलता है जब हम वचन पर मनन करते रहते हैं, वचन का अंगीकार करते रहते हैं और वचन में बने रहते हैं। प्रकाशन वह वरदान है जो कि पवित्र आत्मा हमें प्रदान करता है। जैसे–जैसे यह प्रकाशन बढ़ता है, वैसे वैसे हमारे विश्वास के परिमाण (नाप) अथवा सीमा में भी बढ़ोतरी होती है। हमारी आत्मा पवित्र आत्मा के साथ मिलकर काम करती है, पवित्र आत्मा से अलग होकर कभी नहीं काम करती। पवित्र आत्मा में से होकर ईश्वरीय जीवन हमारी आत्मा के द्वारा बहने लगता है और लोगों को चंगाई प्रदान करता है। हमारी आत्मा में जीवन बहना शुरू होना चाहिऐ, फिर हमारी आत्मा में से हमारे प्राण में बहना चाहिये और हमारे शरीर से लोगों को चंगाई देने के लिये रिहा होना अर्थात् बहना चाहिये।

आत्मा–प्राण–दिमाग–शरीर

सबसे पहिले विश्वास को हमारी आत्मा में ग्रहण किया जाता है, फिर वह हमारी आत्मा में से होकर प्राण (मन, भावनाओं और इच्छा) के द्वारा गुजरता है। यदि हम अपने विश्वास में रूकावट नहीं चाहते वरन् विश्वास में उन्नति करना चाहते हैं तो हमें अपने मन और भावनाओं को अपनी आत्मा की आधीनता में लाना होगा। इसी कारण वचन में लिखा है कि 'मन में सन्देह न करें, वरन् प्रतीति करें' (मरकुस 11:23), अपने प्राण या मन में सन्देह करके विश्वास के बहाव को न रोकें। जब मैं अपनी आत्मा से विश्वास करता हूँ तो मैं जिस बात के लिये परमेश्वर पर विश्वास कर रहा हूँ, उस बात की कल्पना करके या उसके बारे में बार–बार सोचकर मैं अपने मन को विश्वास के आधीन कर देता हूँ। चंगाई के चमत्कार की तस्वीर मैं अपने मन में देखता हूँ। फिर विश्वास मेरे दिमाग में से गुजरता है और मैं तमाम तार्किक विचारों को (जो विश्वास में रूकावट बन सकते हैं) छोड़ देता हूँ और शब्दों को तैयार और सूत्रबद्ध करता हूँ जिससे कि मैं अपने विश्वास को अभिव्यक्त कर सकूँ। अन्त में मेरे शरीर के द्वारा विश्वास के शब्दों की घोषणा करते एवं बोलते हुए मेरा विश्वास निकलता है, या फिर मेरा विश्वास बीमारों पर हाथ रखने के द्वारा या अभिषेक के तेल के द्वारा अभिव्यक्त (प्रगट) होता है।

यदि विश्वास आत्मा में से उत्पन्न नहीं होता, या फिर विश्वास का बहाव (प्रवाह) प्राण, दिमाग या शरीर के द्वारा रोक दिया जाता है, तो चंगाई प्रगट नहीं होगी। निम्नलिखित दिशा–निर्देशों का पालन करने के द्वारा आप अपनी आत्मा से प्रभावशाली रूप में प्रार्थना कर सकते हैं।

1. अपने मन को इस तरह ढाल बना लें, कि आपका केवल 5 प्रतिशत ध्यान बीमारी की ओर हो और बाकी 95 प्रतिशत ध्यान पवित्र आत्मा की ओर लगा हो। क्योंकि पवित्र आत्मा आपकी आत्मा के साथ रहता है, इसलिये सबसे अच्छा तरीका है कि पवित्र आत्मा पर ध्यान केंद्रित/फोकस करने के लिये आप अपनी आत्मा से कार्य करें।

2. तुरन्त बीमार के लिए प्रार्थना न करें। पवित्र आत्मा के साथ समय बिताऐं, उस पर ध्यान केन्द्रित करें, उसकी नजदीकी में जाऐं और बने रहें। उससे प्रेम और स्नेह के शब्द बोलें।

3. मन और बुद्धि को वश में रखने का अद्‌भुत तरीका है अन्य–भाषाओं में प्रार्थना करना। ऐसा करके आप अपने को आत्मा की स्थिति में ला खड़ा करते हैं।

4. पवित्र आत्मा और अपनी आत्मिक दशा के प्रति जागरूक और सचेत होने के बाद बोलना शुरू करें, घोषणा करें और विश्वास में आज्ञा दें। बीमारों पर विश्वास के साथ हाथ रखकर अपने शरीर के द्वारा चंगाई के जीवन को संचारित करें। अपने मन में विचार एवं कल्पना करें कि चंगाई प्रगट हो रही है। जटिल प्रार्थना या जटिल शब्दों पर ध्यान न दें क्योंकि जटिल प्रार्थना या जटिल शब्द आपके ध्यान को आत्मा पर से भटका कर मन पर ले आयेंगे।

मैं आपको उत्साहित करना चाहूँगा कि आप आत्मा से प्रार्थना करने के इस नमूने (model) या तरीके का बार–बार अभ्यास करें जब तक यह आपके अवचेतन में न समा जाये। आपको बुनियादी प्रार्थनाऐं याद (कंठस्त) होनी चाहिऐ ताकि आपको अपने दिमाग (मन) के द्वारा प्रार्थनाओं को सूत्रबद्ध (तैयार) न करना पड़े, क्योंकि ऐसा होने पर आपका ध्यान बटेगा। पवित्र आत्मा पर ही ध्यान केन्द्रित करें क्योंकि वही आपका सिखाने वाला, मार्गदर्शक और सहायक है, और वही आपको कामयाबी की ओर ले चलेगा और आपको कामयाबी देगा।

<u>प्रार्थना नमूना (model)</u>

दस साल से भी ज्यादा समय की सेवकाई में मैंने हजारों चंगाईयाँ और चमत्कार होते देखें है, पर इन वर्षों में प्रार्थना का नमूना नहीं बदला। मैं व्यक्तिगत रूप से इस नमूने का इस्तेमाल करता हूँ और इस नमूने को लोगों को भी सिखाता हूँ और इस तरीके का प्रभाव/असर मेरे अपने अनुभव तक ही सीमित नहीं है।

1. बीमार व्यक्ति से उसकी शारीरिक समस्या के बारे में सिर्फ बुनियादी बातें ही पूछें: दस से बीस सेकेण्ड की बुनियादी जानकारी, उसकी समस्या के बारे में जानें। ज्यादा विस्तार में न जाऐं क्योंकि इसका आपके विश्वास पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। उस व्यक्ति को उसके दर्द और दुख का इतिहास बताने से रोके या मना करें क्योंकि इससे उम्मीद, आशा और विश्वास का माहौल दूषित हो सकता है। याद रखें अपने आप को बेचारा समझने वाले लोग जो आत्म–दया (self pity) की आत्मा से जकड़े हुऐ हैं, वे अपनी समस्या पर ध्यान केन्द्रित करना और करवाना चाहते हैं। वे आपका ध्यान समस्याओं, निदान, चिकित्सा–रिपोर्टस की ओर ले जाना चाहते हैं। बड़े प्यार से उन्हें चुप करा दें।

2. विश्वास में प्रार्थना करने से पहिले, पवित्र आत्मा को बुलाऐं (आमंत्रित करें) और उसे पहिला स्थान दें। अपने ध्यान को आत्मिक क्षेत्र की ओर केद्रित करें ताकि आप अपनी

आत्मा से विश्वास कर सकें। पवित्र आत्मा को आमंत्रित करें और उसे पहिला स्थान दें। इस प्रकार से बोलकर प्रार्थना कर सकते हैं : ''पवित्र आत्मा, आपके बिना मैं कुछ नहीं कर सकता/सकती। मैं अकेला/अकेली नहीं हूँ। आप यीशु को दर्शाने (प्रगट करने) के लिये विश्वास योग्यता से मेरे प्रति वचनबद्ध हैं। मैं अपने जीवन में सेवकाई के इस समय में पहिला स्थान आपको देता हूँ। मैं आपसे और आपकी मौजूदगी से प्रेम करता हूँ। परमेश्वर की महिमा के लिये मुझ में से बहें।''

3. पवित्र आत्मा की वास्तविक मौजूदगी जो आपके ऊपर है, उस पर ध्यान दें और उसके प्रति संवेनदशील बनें। एक क्षण का समय पवित्र आत्मा को महसूस करने में और उसकी मौजूदगी को ग्रहण करने में बिताऐं। अपना पूरा ध्यान उसी पर केन्द्रित करें और लगाऐं; आपका मकसद पवित्र आत्मा की मौजूदगी से भर जाना है। जो शब्द आप बोलते हैं उनका इतना अधिक महत्व नहीं है जितना कि पवित्र आत्मा पर ध्यान केन्द्रित करना और पवित्र आत्मा से विचार–विमर्श करना महत्वपूर्ण और जरुरी हैं। घनिष्टता या नजदीकी के शब्द बोलने से नजदीकी फोकस बनता और बरकरार रहता है। धीरे से प्रार्थना करें : ''पवित्र आत्मा, इसी समय वास्तविक रूप से मेरे ऊपर आ जाईये। मैं घोषणा करता हूँ कि मैं पूरी तरह से आप ही के ऊपर निर्भर हूँ, और मेरी इच्छा है कि मैं आपके साथ मिलकर आपकी अगुवाई और दिशा–निर्देशन में सेवकाई करूँ। आप ही मेरा सबसे कीमती खजाना है। मुझे अपनी मौजूदगी का सुख और आनन्द दें, अनुग्रह प्रदान करें कि मैं आपको महसूस कर सकूँ और आपकी सामर्थ्य और मौजूदगी को महसूस कर सकूँ। मैं आपसे प्रेम करता हूँ। आप बहुत खूबसूरत हैं।''

इस बिन्दु पर पहुँचकर आप अपनी आत्मा, प्राण और शरीर में उसका एहसास कर सकेंगे, अर्थात् उसे महसूस कर सकेंगे। उसके साथ आपका जुड़ाव और उसकी उपस्थिति का एहसास होना सबसे महत्वपूर्ण अनुभव है।

4. समस्या के स्थान पर हाथ रखकर पवित्र आत्मा की मौजूदगी को महसूस करें। अपने आत्मिक मनुष्य के अंदर पवित्र आत्मा की मौजूदगी और सामर्थ्य की चेतना और जागरूकता के साथ समस्या के स्थान पर विश्वास के साथ हाथ रखें और चंगाई की सामर्थ्य के बहने की उम्मीद लगाऐं। प्रार्थना का सुझाव : ''पवित्र आत्मा, इसी समय इस बीमारी/समस्या के स्थान (घुटना, पीठ, गुर्दे, आदि) में अपनी चंगाई की मौजूदगी और सामर्थ्य के साथ आ जाऐं। मैं परमेश्वर की सामर्थ्य को रिहा करता हूँ; चंगाई का जीवन बहने पाऐं और प्रगट हो, इसी समय यीशु के नाम में।''

5. अधिकार–युक्त शब्दों को बोलकर बीमारी और दुष्ट आत्मा को चले जाने की आज्ञा दे, तब चंगाई प्रगट होगी। पीड़ा के स्थान पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बीमारी, दर्द या दुष्ट आत्मा को दृढ़ता से चले जाने को कहें; परमेश्वर से चंगाई देने के लिये निवेदन न करें। शरीर को, ऊतकों को, हड्डियों को, मासपेशियों को, तंत्रिकाओं और रीड़ की हड्डी, आदि को चंगाई हासिल करने, स्वस्थ होने और अपनी सही अवस्था और स्थान पर वापस आ जाने को कहें। प्रार्थना सुझाव : ''इस बीमारी को मैं यीशु के नाम से श्राप देता हूँ, और इसे खत्म हो जाने की आज्ञा देता हूँ। बीमारी, मैं तुझे यीशु के नाम में जड़ से उखाड़ता हूँ और इस शरीर को छोड़ देने की आज्ञा देता हूँ। दुर्बलता की आत्मा, मैं तुझे बाँधता हूँ और आगे को इस शरीर को यातना और दुख देने से मना करता हूँ। दुष्ट आत्मा, मैं तेरे कार्य को इस शरीर में से खत्म करता हूँ और अभी निकल जाने की आज्ञा देता हूँ। अभी निकल जा। रीढ़ की हड्डी मेरूदण्ड का अस्थिखण्ड यीशु के नाम से सीधाई और सही अवस्था में आ जायें। मासपेशियाँ, आराम पाऐं। घुटने की उपस्थि (नरम लचीली हड्डी) फिर से काम करने लगे और उसमें जान आ जाऐ। बहरे कान, चंगाई पाऐ और सुनने की शक्ति फिर से वापस लौट आऐ।''

6. उस व्यक्ति से पूछें कि वह कैसा महसूस कर रहा है। उस व्यक्ति को चलाऐ–फिराऐ और जाँचे–परखे साधारण और सुरक्षित कार्य करवाते हुऐ। जाँचें और पता करें कि दर्द चला गया या कम हुआ है या फिर बीमारी के लक्षणों से चंगाई मिली या नहीं। यदि बीमारी की अवस्था में जरा सा भी सुधार हुआ है तो आशावान बनकर परमेश्वर का ध न्यवाद करें और उस व्यक्ति से भी ऐसा ही करवाऐं। परमेश्वर का धन्यवाद करते हुऐ विश्वास के साथ पूर्ण चंगाई के लिये प्रार्थना जारी रखें। यदि दर्द या लक्षण बढ़ जाते हैं या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते और अपना स्थान बदल लेते हैं, तो कड़ाई के साथ दुष्ट आत्मा का सामना और मुकाबला करें।

ध्यान दें : यदि आप अपने ह्रदय में पूरी तरह से आश्वस्त हैं कि रोगी को चंगाई मिल गई है या फिर चंगाई की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, तो फिर उस व्यक्ति से अपने शरीर को जाँच–परखने के लिए न कहें, क्योंकि जो दृढ़ विश्वास आपकी आत्मा में है, यह उसके विपरीत भी हो सकता है। कभी–कभी दोबारा से जाँचना–परखना और प्रार्थना करना आपके विश्वास को भंग भी कर सकता है। ऐसी परिस्थितियों में रोगी से दोबारा पूछने या अवस्था की जाँच करने को कहकर अपने आप को बेवजह दबाब में न डालें।

7. निरन्तर प्रार्थना और गवाही के साथ उसकी सहायता और फौलो–अप (follow up) करें। यदि बीमार व्यक्ति पूरी तरह से चंगा हो गया है, तो उसे उभारें और प्रोत्साहित करें कि वह तुरन्त गवाही दें। यदि उसे पूरी चंगाई नहीं मिली है तो 3–5 कदम (steps/

points) को जब तक आपको सफलता मिल रही है तब तक दोहराते रहें और दोहराना जारी रखें जब तक आप विश्वास की गति को और पवित्र आत्मा की अगुवाई को महसूस कर रहे हैं। यदि कई बार कोशिश करने पर भी आपको सफलता नहीं मिल रही है तो आप उसे जारी रखना बन्द कर दें क्योंकि ऐसी स्थिति में विश्वास की गति और वेग खो देने पर आप स्वयं अपनी शक्ति से काम कर रहे होंगे या ऐसी स्थिति में पवित्र आत्मा आपको रूक जाने का संकेत दे रहा है। यदि कोई बदलाव न दिखाई देने पर आप प्रार्थना रोक देते हैं, तो भी सकारात्मक और आशावान बने रहें। याद रखें, बहुत से चमत्कार और चंगाईयाँ घ ाण्टों, दिनों और हफ्तों के बाद भी प्रगट होते हैं। यदि दो हफ्तों तक रोगी की अवस्था में कोई सुधार नहीं आता है तो मैं आपको सलाह देता हूँ कि फिर से प्रार्थना करें।

ऊपर दिया गया नमूना किसी बीमार के लिये सेवकाई/प्रार्थना का प्रभावशाली तरीका है। यदि आपको खुद व्यक्तिगत चंगाई की आवश्यकता है, और आप यह जानना चाहते हैं कि स्वयं अपने लिये कैसे प्रार्थना करें तो मेरी पुस्तक जिसका शीर्षक है ''अनुग्रहः परमेश्वर के हृदय का प्रगटीकरण'' पढ़ें। उस पुस्तक में मैंने अपनी खुद की व्यक्तिगत गवाही लिखी एवं बतायी है कि किस प्रकार से मेरे अपने विश्वास के द्वारा मुझे फेफड़ों की लाईलाज बीमारी से चंगाई मिली। यह पुस्तक आपको व्यवहारिक कदम और दिशा–निर्देश देती है कि किस प्रकार से चमत्कार और चंगाई प्राप्त करने के लिए विश्वास किया जाऐ।

व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से ध्यान देने के लिए व्यवहारिक सवाल :

1. क्या आपको पूरा यकीन है कि हर एक व्यक्ति के लिये परमेश्वर की इच्छा यह है कि वह चंगा एवं तन्दुरूस्त/स्वस्थ हो? यदि हाँ, तो कौन सा जबरदस्त कारण है इसका? यदि नहीं, तो कौन सी वह चीज है जो कि आपको विश्वास करने से रोकती है?

2. बीमारों की चंगाई में आपकी क्या भूमिका है? आपकी वह भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है?

3. इस अध्याय को पढ़ने से पहिले, चंगाई के लिये जरुरी विश्वास को लेकर आप क्या सोचते थे? विश्वास के लिये यदि आपकी कोई बुनियाद थी, तो वह क्या थी? क्या इस अध्याय को पढ़ने के बाद विश्वास को लेकर आपकी जो सोच पहिले थी, वह बदल गई है?

4. क्या आप खुद अपने विश्वास के द्वारा चंगाई की पहल करने में खुद को ज्यादा सहज पाते हैं या फिर पवित्र आत्मा की अगुवाई में ज्यादा सहज महसूस करते हैं? क्यों? इन दोनों ही क्षेत्रों में सुधार के लिये आप स्वयं को किस प्रकार से चुनौती देते हैं?

5. क्या आप पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील और जागरूक (मुस्तैद) हैं? किस तरह से इस संवेदनशीलता में आप बढ़ सकते हैं जिससे कि पवित्र आत्मा के वरदान हासिल करने की आपकी क्षमता और योग्यता बढ़ सके?

6. क्या यह पहिली बार है जब मन, भावनाओं और आत्मा से प्रार्थना करने के विचार को आप जान पाये है? क्या इससे पहिले आप ज्यादा प्रार्थना मन, भावनाओं या आत्मा से करते थे? किन व्यवहारिक तरीकों से आप चंगाई के प्रकाशन में बढ़ सकते हैं?

7. इस अध्याय में बताया गया प्रार्थना का नमूना किस प्रकार से आपके द्वारा चंगाई के लिये इस्तेमाल किये गये पुराने तरीके से अलग (भिन्न) है? क्या आपको ऐसा लगता है कि यह नमूना आपको और अधिक प्रभावशाली बनाऐगा? किस प्रकार?

9

छुटकारा और प्रभुता

ऐशली को ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे कि कोई उसका गला दबाकर उसकी सांस रोक रहा हो, और उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। जब मैं एक कलिसिया रोपण विद्यालय (church planting school) में दुष्ट–आत्माओं से छुटकारे के बारे में लोगों को सिखा रहा था, तब ऐशली भी मुझे सुन रही थी। और उसको अब समझ में आने लगा था कि जिसे वह मनोविकार एवं मानसिक तनाव समझ रही थी, वह तो दुष्ट–आत्माओं का कार्य है। उसे समझ आने लगा कि उसकी शान्ति को दुष्ट–आत्माओं ने चुरा लिया है, और उसका हृदय उससे आजाद होने के लिये तड़पने लगा।

उस दिन क्लास खत्म होने के बाद, वह व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना करवाने के लिऐ मेरे पास आई और मुझे अपनी कहानी विस्तार से बताने लगी। चार साल पहिले जब कॉलेज के अन्तिम वर्ष में वह थी, एक लड़के के साथ उसकी दोस्ती थी। एक बार उस लड़के ने ऐशली पर उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाने का दबाब डाला परन्तु ऐशली ने सख्ती से उसे मना कर दिय। उसके बाद उस लड़के ने ऐशली के साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की। ऐशली ने डटकर उसका सामना किया और वह अपने आप को बचा कर वहाँ से निकल गई। उन दोनों की दोस्ती खत्म हो गई। लेकिन उस दिन के बाद से रात को उसे डर लगने लगा। लगभग चार साल तक उसे डरावने सपने आते रहे। हर रात वह सपने में देखती थी कि कुछ आदमी उसका पीछा कर रहे हैं और उसके साथ जबरदस्ती करना चाहते हैं। उनसे बचने के लिये वह भाग रही है, हर रात वह भयभीत होती थी और मानसिक रूप से तनाव में एवं व्यग्रता में रहती थी; भयभीत होकर वह जाग उठती थी।

मेरी पत्नी अभिलाषा मेरे साथ मिलकर ऐशली के लिये प्रार्थना करने लगी। हमने पवित्र आत्मा को आमंत्रित किया और डराने और सताने वाली दुष्ट–आत्माओं को डाँटा। वह थोड़ी नर्वस/बेचैन थी और क्योंकि वह पाश्चात्य देश से सम्बन्ध रखती थी, इस कारण दुष्ट–आत्मा वाली बात पर ज्यादा भरोसा नहीं कर पा रही थी। हमने उसके लिये प्रार्थना की। इस दौरान कोई प्रगट रूप से दुष्ट आत्मा का प्रगटीकरण जैसा की बहुत सी बार होता है वैसा तो कुछ दिखाई नहीं दिया। इस कारण उसे थोड़ा और सन्देह और शक होने लगा कि वह दुष्ट आत्माओं से आजाद हुई भी है या नहीं। परन्तु मैंने उसे भरोसा दिलाया कि जरूरी नहीं है कि तुम्हें छोड़ने से पहिले दुष्ट आत्माऐं अपना प्रगटीकरण करें ही। हमने यीशु में आजादी के लिये उसे आशीष दी और वह अपने घर वापस चली गई।

उस दिन के बाद ऐशली से कई बार मेरी मुलाकात हुई और मैंने उससे कई सवाल पूछे। वह धन्यवादित (शुक्रगुजार) थी और उसने गवाही दी कि अब वह उन डरावने सपनों और भय से आजाद है, उस दिन छुटकारे की प्रार्थना के बाद से सब कुछ ठीक है। बहुत साल बाद भी वह आजाद है और उसे अचम्भा होता है कि जिस भय से वह लगातार चार साल तक परेशान रही, उससे यीशु ने उसे आजादी दी है। यीशु को उसने न सिर्फ अपने उद्धारकर्ता के रूप में अनुभव किया, परन्तु उसे अपने छुटकारा देने वाले के रूप में भी उसने अनुभव किया है, और इस बात ने उसकी जिन्दगी पूरी तरह से बदल दी है।

यीशु जहाँ कहीं भी गये, वहाँ उन्होंने दो मुख्य चिन्ह जरुर प्रगट किये : बीमारों को चंगा करना और दुष्ट आत्माओं को निकालना। दुष्ट–आत्माओं को निकालना यीशु का कार्य (job) था (लूका 13:32)। वह दुष्ट आत्माओं को भगाने और निकालने से जरा भी पीछे नहीं हटा। उसने इस बात की कभी भी परवाह नहीं करी कि ऐसा करने से सभा में व्यवध ाान उत्पन्न हो जाऐगा। इस प्रकार की सेवकाई के कारण मतभेद और गड़बड़ी भी पैदा हुई और लोगों में बहस भी छिड़ गई, परन्तु यीशु ने इस बात की परवाह नहीं की कि लोग उसके बारे में क्या बोलते या सोचते हैं; उसने दुष्ट–आत्माओं को भगाना और निकालना जारी रखा (मत्ती 9:33–34; 12:22–28; लूका 8:35–37)। बन्धन में जकड़े हुओं को छुड़ाना परमेश्वर के महान प्रेम और उसकी दया का प्रगटीकरण करना है, और यीशु ऐसा ही करने के लिऐ इस पृथ्वी पर आये थे (लूका 4:18)।

दुष्ट–आत्माओं को पहिचान पाना

यीशु के समय के सामान्य लोग दुष्ट–आत्मा के कार्य को भली–भाँति समझ और पहिचान पाते थे। ध्यान दीजिए कि किस प्रकार से वे लोग दुष्टआत्मा के सताऐ हुओं की पहिचान कर पाते थे, और उन्हें छुटकारे के लिए यीशु के पास लाते थे।

''जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्ट आत्माऐं थी और उसने इन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।'' (मत्ती 8:16)

अपने आप को उस स्थान पर रख कर सोचें। मान लीजिए, यीशु आपके पड़ोस में आते हैं, आप किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ रहे हैं जिसे दुष्ट–आत्मा परेशान करती है। आप किन लोगों को खोज कर यीशु के पास छुटकारे के लिये लाऐंगे? आप दुष्ट–आत्मा के कार्य को कैसे पहिचान पाऐंगे? बहुत से लोगों को इस बात की जरा भी समझ नहीं होती

है। जिन लोगों को यीशु के पास लाया गया था, उन्हें वास्तव में छुटकारे की जरुरत थी क्योंकि वे दुष्ट आत्माओं की गिरफ्त में थे। ऐसा हम इस कारण से कह सकते हैं क्योंकि यीशु ने उन के अंदर से दुष्टआत्माओं को निकाला। यीशु ने यह नहीं कहा, ''तुमने अच्छी कोशिश करी परन्तु अभी तुम में आत्माओं की परख की कमी है, और तुम बहुत से ऐसे लोगों को दुष्ट–आत्माओं के सताऐं हुए समझ कर मेरे पास ले आये हो जिनमें दुष्टआत्मा नहीं है।'' दोस्तों, जो लोग बन्धनों में पाये जाते हैं, उनके बीच सेवा करने का पहिला कदम यह है कि हम दुष्ट आत्माओं को पहिचानना सीखें। यदि आप पूरब के देशों में रहते हैं तो दुष्ट आत्माओं को आप पश्चिमी देशों में रहने वालों से बेहतर रीति से पहिचान और समझ पाऐंगे, परन्तु फिर भी आपको परख के आत्मा की और भी जरुरत है।

प्राय दिखाई पड़ने वाले चिन्ह

अब हम दुष्ट आत्माओं के कार्य और गतिविधियों की समीक्षा करेंगे। जब आप मरकुस 1:21–28 को पढ़ेंगे, तो आप दुष्ट–आत्माओं के प्रगटीकरण को बेहतर प्रकार से जान एवं समझ पाऐंगे।

''तब वे कफरनहूम में आए, और वह तुरन्त सब्त के दिन आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा। और लोग उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उपदेश देता था। उसी समय उनके आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें एक अशुद्ध आत्मा थी। उसने चिल्लाकर कहा, 'हे यीशु नासरी, हमें तुझसे क्या काम? क्या तू हमें नष्ट करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन!' यीशु ने उसे डाँटकर कहा, 'चुप रह और उस में से निकल जा।' तब अशुद्ध आत्मा उसको मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर उसमें से निकल गई। इस पर सब लोग आश्चर्य करते हुए आपस में वाद विवाद करने लगे, 'यह क्या बात है? यह तो कोई नया उपदेश है। वह अधिकार के साथ अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।' और उसका नाम तुरन्त गलील के आसपास के सारे प्रदेश में फैल गया।'' (मरकुस 1:21–28)

दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों को समझने के लिये बहुत अधिक आत्मिक ज्ञान और समझ की जरुरत नहीं होती है, यहाँ तक कि एक अविश्वासी भी दुष्ट आत्माओं की बहुत सी गतिविधियों की अच्छी खासी समझ रखता है। उपरोक्त घटना में हम दुष्ट आत्मा के प्रगटीकरण को देखते हैं। हम देखते हैं कि किस प्रकार से उस मनुष्य के द्वारा वह बात करती है, वह यीशु को पहिचान जाती है और यीशु के पास जो आत्मिक अधिकार है, उससे

भयभीत होती है। अपने बारे में बात करते समय वह बहुवचन (जैसे हम/हमें) का इस्तेमाल करती है, चीखती–चिल्लाती है और जिस मनुष्य के अंदर पायी जाती है, उसे मरोड़ती है।

दुष्ट आत्मा के अन्य प्रगटीकरण हैं जैसे ऐसी भाषा बोलना जो कि दुष्ट–आत्मा से पीड़ित व्यक्ति न जानता हो और उसने कभी भी वह भाषा न सीखी हो, अप्राकृतिक ज्ञान और शक्ति, श्राप देना कोसना और निन्दा करना, पागलों जैसा व्यवहार करना, खाँसना और उल्टी करना, स्वयं को या फिर दूसरों को शारीरिक चोट पहुँचाना, बाल खीचना, आँखें भावशून्य हो जाना, चेहरे में ऐंठन आ जाना, जानवर जैसा व्यवहार करना, धमकी देना, हवा में उठ जाना या फिर दीवारों पर चढ़ना, आदि। पूर्वी देशों में रहने वाले लोग ऐसी गतिविधियों को देखकर सहज रूप से समझ जाते हैं कि ये दुष्ट आत्माओं का कार्य हैं, परन्तु पश्चिम देशों के लोग दुष्ट–आत्माओं के इन चिन्हों को प्राय मनोवैज्ञानिक बीमारी या मनोविकार की संज्ञा देते हैं और ऐसा करने के लिये हमेशा किसी वैज्ञानिक बहाने का इस्तेमाल करते हैं। प्राय इस प्रकार के प्रगटीकरण विकासशील देशों में जैसे कि अफ्रीका, भारत और जनजातिय क्षेत्रों में होते हैं, इस कारण पश्चिमी देशों में रहने वाले इस प्रकार के दुष्ट आत्मा के प्रगटीकरण को महज अन्धविश्वास कहकर टाल देते हैं, जैसे कि दुष्ट आत्माऐं पश्चिमी देशों में पाई ही न जाती हो। मुझे मेरे अनुभवों के अनुसार इस की स्पष्टता बताने की अनुमति दें।

जो दुष्ट आत्माऐं खुले रूप से प्रगटीकरण करती हैं, उनमें से लगभग 95 प्रतिशत पीड़ित व्यक्ति या उसके परिवार के द्वारा मूर्ति–पूजा किये जाने या जादू–टोन्हे के कारण प्रगट होती हैं। जब भी आप दुष्ट आत्मा के खुले प्रगटीकरण को होते देखते हैं, तो आसानी से अनुमान लगा सकते हैं कि यह सब मूर्ति–पूजा या जादू–टोन्हे के कारण हो रहा है। अधिकतर पश्चिम देशों के रहने वाले लोग मूर्ति–पूजा और जादू टोन्हे में लिप्त नहीं पाऐ जाते हैं, इस कारण पश्चिम देशों में दुष्ट–आत्माओं का इस प्रकार का खुला प्रगटीकरण कम ही देखने को मिलता है।

एक बार जब हम अगुवों और विश्वासियों को प्रशिक्षण दे रहे थे, तो एक महिला मेरे पास आयी और उसने मुझ से निवेदन किया कि मैं उसके घर पर काम करने वाली नौकरानी के लिये प्रार्थना करूँ जिसका नाम देवकी था। उस महिला ने मुझे बताया कि उसकी नौकरानी, देवकी, एक ऐसे गाँव से है जो कि जादू–टोन्हे, आदि के लिये जाना जाता है। उसके परिवार का हर एक सदस्य प्रेत–विद्या में लिप्त था। वह अब एक विश्वासी बन चुकी थी परन्तु दुष्ट आत्माऐं निरन्तर उसे सताया करती थी। देवकी महसूस करती थी कि दुष्ट–आत्माऐं रात को जब वह पलंग पर होती थी तो उसे धक्का देती थी और उसका गला दबाती थी। मैंने देवकी को वहाँ सभा में आमंत्रित किया और उसकी सहमति से लोगों

के सामने उसे कुर्सी पर बिठाया। फिर उसकी आँखों में देखते हुऐ मैंने जादू–टोन्हे और प्रेत–विद्या की दुष्ट आत्मा को आज्ञा दी कि वे देवकी को छोड़कर निकल जाए। उसके चेहरे में ऐंठन आने लगी और दुष्ट शक्तियों का प्रभाव साफ–साफ दिखाई दे रहा था। मात्र दस मिनट के अंदर वह पूरी तरह से आजाद हो चुकी थी। दोस्तो, पापों की क्षमा प्राप्त करना और बन्धन से छुटकारा प्राप्त करना, दोनों अलग–अलग बात हैं। यीशु ने हमें ये दोनों ही आशीषें उपलब्ध करायी है।

<u>सूक्ष्म (गूढ़) गतिविधि</u>

अधिकतर शैतानी गतिविधियाँ अधिक प्रगट या स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं पड़ती हैं। बिना ज्ञानेन्द्रियों के अभ्यास के (इब्रानियों 5:14) और पवित्र आत्मा की सहायता के बिना इन सूक्ष्म गतिविधियों को पहिचानना और समझना लगभग असम्भव है। जो दुष्ट–आत्माऐं हमें प्रगट रूप से दिखाई या महसूस होती हैं, उनके अलावा भी बहुत सी ऐसी दुष्ट–आत्माऐं निरन्तर कार्यरत रहती हैं, जिन्हें हम देख और जान नहीं पाते हैं। हालांकि पूर्वी देशों के लोग स्वभाविक रूप से एवं सहज ज्ञान से दुष्ट आत्मा के कार्य की समझ रखते हैं, परन्तु फिर भी उनमें से अधिकतर लोग अभी भी शैतान के सूक्ष्म अर्थात् छुपे हुऐ कार्य से अनजान हैं।

मुझे अनुमति दें कि मैं आपकी आँखों को इन बातों के प्रति खोल सकूँ। निम्नलिखित पदों में यीशु अपने शिष्यों के साथ चले जा रहे हैं और उनसे सवाल पूछने लगते हैं।

यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया, और अपने चेलों से पूछने लगा, 'लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?' उन्होनें कहा, 'कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं' उसने उनसे कहा, 'परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?' शमौन पतरस ने उत्तर दिया, 'तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।' यीशु ने उसको उत्तर दिया, 'हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रकट की है।' (मत्ती 16:13–17)

जब यीशु अपने चेलों से यह पूछ रहे थे कि वे व्यक्तिगत रूप से यीशु को क्या मानते हैं अथवा यीशु उनके लिये कौन हैं, तब पतरस को ज्ञान का वचन प्राप्त होता है – सीधा प्रकाशन स्वर्गीय पिता की ओर से – यीशु की पहचान (परिचय) के बारे में। जैसे ही पतरस उत्तर देता है, यीशु तुरन्त इस बात की पुष्टि करते हैं कि जो उत्तर पतरस ने दिया है, वह

परमेश्वर की ओर से प्रकाशन है। इसके कारण पतरस को अन्य चेलों से अपने आप को बेहतर समझने का बल मिला और उसके अंदर घमण्ड आया। याद रखें कि पहले से ही वे सब इस बात को लेकर बहस कर रहे थे कि उनमें से बड़ा कौन है (मरकुस 9:33–34)। कुछ समय के बाद यीशु भविष्य में उन पर होने वाले सताव और मृतकों में से फिर से जी उठने के बारे में भविष्यवाणी करने लगे। अचानक पतरस के स्वभाव में बदलाव देखने को मिलता है। आईये, पढ़ें :

उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, 'अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊँ और पुरनियों, और प्रधान याजकों, और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊँ, और मार डाला जाऊँ, और तीसरे दिन जी उठूँ।' इस पर पतरस उसे अलग से जाकर झिड़कने लगा, 'हे प्रभु, परमेश्वर न करें! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।' उसने मुड़कर पतरस से कहा, 'हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।" (मत्ती 16:21–23)

इससे पहले कभी भी हमने नहीं देखा कि पतरस यीशु को अलग ले जाकर फटकार रहे हो या झिड़क रहे हो! 'झिड़कना' शब्द का मूल यूनानी शब्द 'ऐपीटिमाओ' है, जिसका मतलब है निन्दा करना, चेतावनी देना, धिक्कारना, इल्जाम लगाना। पतरस अपने आपको अपने गुरु और स्वामी से अधिक बड़ा समझने लगे और यीशु की इच्छा का विरोध और सामना करने लगे।! पतरस ने ऐसा क्यों किया? पतरस एक अन्य आत्मा की सुनने एवं उस पर ध्यान और मन लगाने लगे थे। जिस आत्मा की पतरस सुन रहे थे, वह पवित्र आत्मा नहीं था वरन् धोखा देने वाला अन्धकार का आत्मा था। हो सकता है कि कुछ समय पहले पतरस ने स्वर्गीय पिता की आवाज को जो सुना था उस कारण उसके अंदर घमण्ड आ गया था, और उस घमण्ड ने उसे ऐसा बहिरा कर दिया था कि वह शैतान एवं परमेश्वर की आवाज में अंतर नहीं कर पा रहा था। याद रखें कि हमें धोखा देने के लिये शैतान एक ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करके हमारे पास आता है (2 कुरिन्थियों 11:14)।

यीशु तुरन्त पतरस की ओर मुड़कर उससे कहते हैं, "शैतान, मेरे सामने से दूर हो! " यहाँ पर यीशु ने मूल यूनानी शब्द 'हुपागो' (hupago) का इस्तेमाल किया जो कि यीशु ने जंगल में परीक्षा के समय शैतान को डाँटने के समय इस्तेमाल किया एवं बोला था।

"तब यीशु ने उससे कहा, 'हे शैतान, दूर हो जा..." (मत्ती 4:10)

इसका मतलब यह है कि यीशु ने पतरस के अंदर से शैतान को बाहर निकाला क्योंकि शैतान पतरस के विचारों और भावनाओं (प्राण) के अंदर था, और उस पर ऐसा प्रभाव (असर) डाल रखा था कि पतरस का अपनी इच्छा पर नियंत्रण ही नहीं रहा था।

क्या यहाँ पर दुष्ट आत्मा का कोई प्रत्यक्ष प्रगटीकरण जैसे कि मरोड़ना, चीखना–चिल्लाना या जोर से हिलना या काँपना, आदि कुछ दिखाई देता है? नहीं। पतरस स्वयं भी उन विचारों, भावनाओं और इच्छाओं को नहीं पहचान या जान पा रहे थे जिन्होंने पतरस को इस प्रकार से बोलने और व्यवहार करने के लिये मजबूर किया था। जब शैतान पतरस के अंदर से निकला तब क्या पतरस के मुँह से झाग निकला या फिर क्या वह जमीन पर गिरकर किसी मछली के समान तड़प रहा था? नहीं। पतरस को जरा सा भी एहसास नहीं था कि किस समय शैतान ने उस पर कब्जा कर लिया था। जब यीशु ने पतरस के अंदर के शैतान को बाहर निकाला तब किसी प्रकार का अजीब प्रगटीकरण नहीं हुआ, परन्तु पतरस शैतान से आजाद जरुर हो गया।

दुष्ट आत्माओं की छिपी हुई एवं परोक्ष गतिविधियों को पहचानने में समस्या यह है एवं इस कारण है कि हर एक दुष्ट या बुरी गतिविधि (कार्य) के पीछे का कारण जरुरी नहीं हमेशा दुष्ट–आत्मा ही हो; मनुष्य का पापमय स्वभाव जिसके कारण मनुष्य का स्वभाव स्वाभाविक रूप से दुष्ट एवं बुरी प्रवृति का बन गया है, उसके अंदर यह क्षमता है कि दुष्ट आत्माओं की सहायता के बिना भी पाप कर सके। दूसरा कारण यह है कि संसार की पद्धति/प्रणाली/तंत्र (system) एक भ्रष्ट संस्कृति है जहाँ मतलबीपन (स्वार्थ) और दुष्टता (बुराई) पायी जाती है। तीसरा कारण यह है कि गलत सोच और झूठ प्राय गलत व्यवहार को प्रेरित करते एवं बढ़ावा देते हैं। तो भी झूठ केवल झूठ के पिता शैतान की ओर से आती है – और संसार का तंत्र (system) उसी की उपज या उत्पाद है (1 यूहन्ना 5:19)। हालांकि हमारे अंदर दुष्ट आत्माओं के बिना भी पाप करने की क्षमता है, परन्तु फिर भी हम इस पतित संसार को उनके प्रभाव से अलग नहीं कर सकते हैं। पाश्चात्य मसीहियत दुष्ट आत्माओं की व्यवहारिक वास्तविकता को खारिज करती है और पाप के कार्यों के लिये शरीर को दोषी ठहराती है और उसके लिये वे गलातियों की पत्री के 5 अध्याय का हवला देते हैं।

"शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीला क्रीड़ा और इनके जैसे और–और काम हैं...।" (गलातियों 5:19–21)

जब आप इस उपरोक्त सूची को पढ़ते हैं तो क्या यहाँ कोई ऐसा पाप जिससे आप जानते हों कि बुद्धिमता की जरुरत पड़ती हो जैसे कि मूर्तिपूजा, टोना और विधर्म? मनुष्य की शारीरिक देह इन पापों को करने में सक्षम या समर्थ नहीं है, क्योंकि इसके लिये दुष्ट–आत्माओं की बुद्धिमता की जरुरत होती है। क्या ये पाप शारीरिक देह के कारण होते

हैं या फिर इन पापों को करवाने के लिये दुष्ट–आत्माएँ शरीर को प्रभावित या प्रेरित करती हैं? क्या हमारा युद्ध वास्तव में शरीर के विरुद्ध है?

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है। (गलातियों 6 :12)

प्रेरित पौलुस हमें अन्र्तदृष्टि प्रदान करते हैं और बताते हैं कि एक विश्वासी का युद्ध उसके मानवीय स्वभाव से नहीं है, क्योंकि हमारा पुराना मनुष्यत्व (स्वभाव) मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है, मर गया और नाश हो गया (रोमियों 6:6–7,11,18)। हम विश्वासी अपने पतित पुराने मनुष्यत्व एवं स्वभाव के साथ संघर्ष नहीं करते क्योंकि हम मसीह यीशु में नयी सृष्टि हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)। हमारा युद्ध उन दुष्ट शक्तियों से है जो कि शरीर को प्रभावित और प्रेरित करके उसके द्वारा दुष्टता के कार्य करने का अवसर ढूँढ़ती रहती हैं। आप स्वयं अपने शत्रु नहीं हैं; आपका शरीर आपका शत्रु नहीं हैं। हम विश्वासियों को अपनी बुद्धि को नया करने की जरुरत है (रोमियों 12:2) और जरुरत है शैतान का सामना करने की (याकूब 4:7) जिससे कि स्थायी स्वतंत्रता (आजादी) कायम रहे।

तीन व्यवहारिक सवाल

तो हम कैसे यह जान सकते हैं कि दुष्ट–आत्मा मौजूद एवं कार्यरत है? पवित्र आत्मा की सहायता के बिना हर बार यह जान पाना लगभग असंभव है। लेकिन दुष्ट आत्माओं को निकालने के मेरे कई साल के अनुभव के आधार पर मैंने तीन बुनियादी सवालों की सूची तैयार की है जो कि अदभुत रूप से अधिकतर लोगों के लिये विभिन्न परिस्थितियों में बिल्कुल सटीक है। ज्यादातर छिपी हुई दुष्ट आत्माओं की गतिविधियाँ विचारों, भावनाओं और इच्छाओं के रूप में प्रगट होती हैं, और अन्त में व्यवहार का रूप लेकर प्रगट होती हैं। विचार, भावनाएँ और इच्छाएँ ही हमारे प्राण और शरीर में दुष्ट आत्माओं का रूप लेकर प्रगट होती हैं।

1. क्या आप ऐसी भावनाओं, विचारों और इच्छाओं को महसूस एवं अनुभव करते हैं जो कि बार–बार आपके जेहन में आती हैं और जिन्हें आप बदल नहीं पा रहे हैं?

उस मच्छर के समान जो आधी रात में आपको कष्ट देता और सताता है, भय के विचार, कामुक चित्र, न ठंडा होने वाला क्रोध (गुस्सा), यह भावना कि आपको सबने छोड़

(त्याग) दिया है आदि जो कि आपको छोड़ नहीं रहे हैं, आपकी उन से छुटकारा पाने की लाख कोशिशों के बाद भी आप उनसे मुक्त नहीं हो पा रहे हैं।

2. क्या आप ऐसे विचार, भावनाओं और इच्छाओं को महसूस करते हैं जो कि अक्सर कुछ समय के लिये आपको पूरी तरह से प्रभावित और नियंत्रित करते हैं?

अचानक अपने आप को ऐसे विचारों, भावनाओं और इच्छाओं के कब्जे में पाते हैं जो कि आपको नियंत्रित करती हैं और बाद में उसका पछतावा या मलाल भी होता है। बहुत से अगुवों और विश्वासियों ने इस बात को मेरे सामने स्वीकार किया है कि किस प्रकार से उनके जीवन साथी (पति या पत्नी) के साथ छोटी सी असहमति के कारण वे जोर से चीखने–चिल्लाने लगते हैं या फिर शारीरिक नुकसान तक पहुँचाते हैं, और उसके तुरन्त बाद उन्हें अपने इस व्यवहार पर पछतावा होता है और वे दुखी होते हैं। इस प्रकार के लोग हर बार फैसला करते हैं कि आगे को भविष्य में इस प्रकार का व्यवहार फिर कभी नहीं करेंगे, परन्तु हर बार अपने आप को किसी नियंत्रित करने वाली शक्ति के कब्जे में पाते हैं।

3. क्या आप ऐसे विचार, भावनाओं और इच्छाओं को महसूस करते हैं जो कि किसी नियत या विशेष माहौल, गतिविधियों या परिस्थितियों में तेज हो जाती या बढ़ जाती हैं, जैसे कि बाईबिल पढ़ना, प्रार्थना करना, अकेले रहना, किसी नियत स्थान पर कुछ विशेष लोगों के साथ रहना या समय बिताना, आदि?

बहुत से नये विश्वासी जो कि पहले मूर्ति पूजा किया करते थे, और उन्हें जन्म के समय मूर्ति के सामने समर्पित किया गया था या फिर वे जादू टोने में लिप्त रहा करते थे, ऐसे लोगों को बाईबिल पढ़ने और प्रार्थना करने में कठिनाई महसूस होती है। अचानक उन्हें नींद आने लगती है और जागे रह पाना उन्हें मुश्किल जान पड़ता है, और किसी प्रकार की दीवार परमेश्वर के साथ होने वाले उनके मेल या सम्पर्क को रोकती है। कुछ अन्य लोग ग्लानि, दोषभावना, शर्म या भय के कारण प्रार्थना नहीं कर पाते हैं। कुछ अन्य जबरदस्त कामुक इच्छाओं को महसूस करते हैं, ऐसे इच्छाएँ जिन्हें तृप्त (संतुष्ट) नहीं किया जा सकता है।

जब आप लोगों से ये सवाल पूछते हैं और यदि कोई व्यक्ति 'हाँ' में उत्तर देता है, तो इसका मतलब यह हुआ कि उस व्यक्ति में दुष्ट–आत्मा कार्यरत संभवत है। और यदि दो या तीन सवाल के उत्तर में वे हाँ कहते हैं तो फिर निश्चित रूप से दुष्ट–आत्मा उस व्यक्ति के अंदर उपस्थित है।

जेकब नाम का एक व्यक्ति जो कि अफ्रीका में कलीसिया रोपण कर रहा था। एक बार हमारे ट्रेनिंग सत्र में भाग लेने और बीमारों के लिये प्रार्थना करना और दुष्ट–आत्माओं को निकालना सीखने के लिये चंडीगढ़, भारत में आया जहाँ पर हम आसपास के लगभग 30 पास्टर्स के लिये छुटकारे का सेमिनार आयोजित कर रहे थे और शिक्षा दे रहे थे। शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त जेकब ने हमसे आग्रह किया कि हम उसके लिये प्रार्थना करें। जेकब ने चुपचाप रहते हुए पन्द्रह साल तक दुष्ट–आत्मा के बन्धन को सहा था। वह PTSD (Post Traumatic Stress Disorder) सह रहा था, अर्थात् किसी बड़े आघात को झेलने के बाद की अवस्था।

शहर के नये कालेज में दाखिला लेने के बाद जब वह लड़कों के शौचालय में दाखिल हुआ तो तीन सीनियर लड़कों ने बिना किसी कारण उसको मारा–पीटा, उसके कपड़ों को फाड़ डाला और जबरन उसके साथ बलात्कार किया। इसके उपरान्त वे हंसते हुए जेकब को बाथरूम के फर्श पर खून से लथपथ पड़ा हुआ छोड़कर बढ़ चले। इस आघात का परिणाम बहुत भयानक था। जेकब को समझ नहीं आ रहा था कि इस दुष्कृत्य के विषय में किसको बताऐं और क्या करें। कुछ हफ्ते के बाद जेकब कॉलेज काऊंसलर के पास पहुँचा और उसे जाकर सारी घसना बताई परन्तु काऊंसलर ने उसकी बात का विश्वास नहीं किया। उस आघात का परिणाम यह था कि जेकब के मन–मस्तिष्क में भय बैठ गया एवं वह उत्कंठित रहने लगा। उस दिन के पश्चात् जेकब के लिये किसी सार्वजनिक शौचालय का इस्तेमाल करना लगभग असम्भव सा हो गया था। जब भी वह किसी सार्वजनिक शौचालय में प्रवेश करता, तब भय से भर जाता था और भय उसके मूत्राशय और आँतों को काम करने से रोक देता था। चाहे वह कितनी भी कोशिश कर ले वह सार्वजनिक शौचालय का इस्तेमाल कर ही नहीं पाता था। अपने घर के व्यक्तिगत शौचालय में ही हल्का हो पाता था। वह अफ्रीका से लम्बी यात्रा करके भारत आया और भारत में गाँव–गाँव घूमा, और मुझे पता चला कि इस दौरान पिछले सात दिन से उसे शौच नहीं हुई थी, बहुत कोशि ाश करने के बाद भी।

हमने प्रार्थना का समय तय किया और इस अध्याय के अन्त में जो दिशानिर्देश दिये गये हैं, उनके अनुसार हमने उसके लिये प्रार्थना की। उसे अचम्भा हुआ कि प्रार्थना के दौरान किसी प्रकार की दुष्ट–आत्मा का प्रगटीकरण नहीं हुआ। जब कि मैंने भय और सताने वाली दुष्ट–आत्मा को डाँटा और निकल जाने का आदेश दिया तब जेकब ने शांति और परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस किया। जिस समय से मैंने उन दुष्ट–आत्माओं को निकल जाने की आज्ञा दी थी, उसी समय से वह आजाद हो गया और तुरन्त उसने जाकर शौच किया और उसके बाद किसी भी सार्वजनिक शौचालय का इस्तेमाल बिना किसी

भय या परेशानी के करने लगा। पन्द्रह साल का बन्धन तुरन्त टूट गया और आज तक टूटा हुआ है। हमारे छुटकारा देने वाले यीशु की स्तुति हो उसने अपनी महान करुणा प्रगट की है।

पाश्चात्मक जगत में जिस समस्या को पीटीएसडी (PTSD) नाम दिया गया है, यौन /लिंग भ्रम (sexual confusion), लत एवं व्यसन, तनाव सम्बन्धित विकार और अवसाद (depression) और कुछ न होकर महज अदृश्य परजीवी दुष्ट–आत्माएं ही हैं।

दुष्ट–आत्माओं के सताव की सूची

शारीरिक प्रभाव

- विभिन्न प्रकार की एलर्जी, प्रतिरक्षा की कमी (immune deficiency)
- स्वप्रतिरक्षित रोग (auto-immune diseases)
- फाइब्रोमायल्जिया (fibromyalgia)
- नस सम्बन्धी रोग (nerve related disease)
- मनोदैहिक रोग (psychosomatic Illness)

प्राण सम्बन्धित प्रभाव

- कटुता, क्षमा न करना (अक्षमाशीलता), क्रोध, बदला, नफरत, हत्या
- भय, चिन्ता, उत्कंठा (व्यग्रता), घबराहट, परमेश्वर पर भरोसा न कर पाना, अपने आप को अकेला या त्यागा हुआ महसूस करना
- अवसाद, आशाहीनता
- तिरस्कृत महसूस करना, ग्लानि, अपराध–बोध या स्वयं को दोषी मानना, शर्म

- घमण्ड, अहंकार, आत्मनिर्भरता, कुछ भी सीखने की इच्छा न रखना (अशिक्षिणीय), अति धार्मिक, फरीसी जैसा होना
- आत्म घृणा, आत्म अस्वीकृति, स्वयं को माफ न करना, स्वयं पर क्रोधित होना, आत्महत्या के विचार और इच्छा
- काम—वासना, अश्लील चित्रों को देखना, व्यभिचार, समलैंगिकता, और अन्य गन्दी और अशुद्ध इच्छाएँ

आत्मिक प्रभाव

- जादू टोने के प्रति जिज्ञासा और आकर्षण
- प्रार्थना, बाईबिल पढ़ने और मनन करने में रुकावट, जैसे कि ध्यान केन्द्रित न कर पाना, नींद आना
- रात में भयभीत होना
- शैतानी आवाजें सुनना और दुष्ट—आत्माओं को देखना
- दुष्ट—आत्माओं का शरीर पर हमला, जैसे गला दबाना, पकड़ लेना, गिरा देना, बोलने या हिलने—डुलने में असमर्थ हो जाना

सेवकाई की मानसिकता

दुष्ट आत्माओं को निकालने का हमारा मकसद सिर्फ और सिर्फ प्रेम होना चाहिए। बड़े ही दुख की बात है कि मैंने भारत और अफ्रीका में ठीक उसका उल्टा ही देखा है। यदि किसी व्यक्ति में दुष्ट—आत्मा का प्रगटीकरण होता है तो वह व्यक्ति पास्टर के द्वारा उत्पीड़न का शिकार बन जाता है – पास्टर ऐसे लोगों को बाईबिल मारकर पिटाई करता है, उनके चेहरे पर पानी फेंकता है, उन्हें मजबूर किया जाता है कि वे पानी या तेल को यीशु का लहू मानकर पी लें और उन्हें कसकर पकड़ लिया जाता है, उनकी शारीरिक गतिविधि को नियंत्रित करने के लिये उनके बालों को पकड़कर खींचा जाता है।

एक समय मैंने देखा कि एक जवान लड़की को कई बुजुर्ग लोगों ने और कलीसिया के प्राचीनों ने कसकर पकड़ रखा था और जोर–जोर से चिल्लाकर दुष्ट–आत्मा को उस लड़की में से निकल जाने की आज्ञा दे रहे थे। बाद में मुझे पता चला कि वह लड़की अपने बचपन में सामूहिक दुष्कर्म (gang rape) का शिकार हुई थी, और यहाँ पर छुटकारे के नाम पर कलीसिया के लोग उसे घेरकर उसे पकड़े हुए हैं जिसके कारण उसे उसके अतीत का बुरा और दिल दहलाने वाला मंजर फिर से याद दिलाया जा रहा है। मित्रों, दुष्ट–आत्मा के द्वारा सताए गये लोगों को हमारे प्रेम की बहुत ज्यादा जरुरत होती है।

हालांकि हम दुष्ट शक्तियों के विरुद्ध युद्ध लड़ रहे हैं, फिर भी हमें उस व्यक्ति को प्रेम करना, उसका आदर करना और उसकी कद्र करना कभी नहीं भूलना चाहिए, जिसके लिये हम प्रार्थना कर रहे हैं। जब लोग हमें अपने जीवन की व्यक्तिगत बातें बताते हैं, तो उन बातों को कभी भी औरों को नहीं बताना चाहिए। हमें उन लोगों के भरोसे को कभी नहीं तोड़ना चाहिए।

“हे भाईयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो और अपनी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो” (गलातियो 6:1)। हमारी आत्मिकता इसी बात से पता चलती है कि जब हम किसी मनुष्य को पाप में गिरा या फँसा हुआ पाते हैं, तो हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? बहुत सी पापी आदतें और तरीके दुष्ट–आत्माओं के द्वारा प्रेरित होती हैं। हमें उसे बड़ी नम्रता और कोमलता से बहाल करना है। बहुत से लोग दुष्ट–आत्माओं से उत्पीड़ित लोगों को बुरी तरह से कलंकित और बुरा व्यक्ति समझते हैं। हमें इस तरह के सोच को बदलना होगा ताकि लोग आसानी और सहजता से अपने छुटकारे के लिये प्रार्थना कराने के लिये आ सके।

जिस समय मध्य–पूर्व के बहुत से मुस्लिम लोग अपने देश को छोड़कर जान बचाकर भाग रहे थे और यूरोप के देशों में शरण ले रहे थे, उन दिनों जर्मनी में हैमबर्ग शहर में जाकर मुस्लिम भाई–बहिनों के बीच यीशु का प्रेम बाँटने का मुझे अवसर मिला। इस अवसर का लाभ उठाते हुए मैंने सुसमाचार की छुटकारा प्रदान करने वाली सामर्थ्य को उन लोगों के बीच प्रगट करने का फैसला किया।

एक शाम लगभग 20 मुस्लिम लोग एक कमरे में जमा थे और मैं मरकुस 1:21–28 में वर्णित घटना को उन्हें बताने लगा। उसके उपरान्त व्हाईट–बोर्ड (white board) पर मैं बहुत सी समस्याओं, लतों (व्यसन), चिन्ता, विकारों की सूची बनाकर लिखने लगा, जो कि दुष्ट–आत्माओं के कारण व्यक्ति पर कब्जा करती हैं और सताती हैं। वहाँ पर मौजूद लोग

पढ़े–लिखे थे और कुछ लोग मेरी बात पर मुस्कुरा रहे थे। इसके बाद प्रार्थना करने और परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रगटीकरण करने का समय आया और मैंने उन से पूछा कि व्हाईट–बोर्ड (white board) पर लिखी समस्या, लत, चिन्ता या विकारों से कोई पीड़ित यहाँ पाया जाता है क्या? लगभग 28–30 साल का दम्पत्ति वहाँ पर मौजूद था। वह महिला निकलकर आगे की ओर आयी और मेरे सामने रखी कुर्सी पर बैठ गयी। उसने बताया कि किस तरह से वह उत्कंठा, चिन्ता और रात को दिखाई देने वाले डरावने सपनों से जूझ रही है और परेशान है। मैंने वहाँ मौजूद लोगों से कहा कि वे ध्यानपूर्वक सब कुछ देखें। मैंने उस महिला की आँखों में देखते हुए दुष्ट आत्मा को आज्ञा दी, "डराने और सताने वाली आत्मा, मैं यीशु के नाम में तुझे बाँधता हूँ और आज्ञा देता हूँ, इस महिला में से अभी निकल जा।" उस महिला का व्यवहार कुछ बदल सा गया और वह उत्कुंठित और परेशानी सी दिखाई देने लगी। ज्यादातर लोग मुझे पागल समझ रहे थे। मैंने उस महिला से पूछा कि वह कैसा महसूस कर रही है? और उसने कहा, "मैं बेचैनी महसूस कर रही हूँ, और मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कि मेरे गले में कुछ अटक रहा है। और मुझे सांस लेने में कठिनाई महसूस हो रही है।" मैंने फिर से उस महिला की आँखों में देखा और कहा, "इसके गले में पीड़ा देने वाले शैतान, मैं तेरा सामना करता हूँ और तुझे निकल जाने की आज्ञा देता हूँ। निकल जा।" तुरन्त वह महिला पीछे की ओर झुकी। एक दुष्ट शक्ति ने उस पर कब्जा कर लिया था और वह अपने हाथों को हवा में लहराने लगी और अजीब आवाजें उसके मुँह से निकलने लगीं। अभी तक वो लोग मेरा मजाक बना रहे थे वे सब डर गये। मैंने उस महिला के पति से कहा कि वह उस महिला को लेकर एक दूसरे कमरे में आ जाए जहाँ हम उसकी निजता का ख्याल रख सकें और वह लोगों के सामने किसी प्रकार से हंसी की पात्र न बने। कुछ मिनट के भीतर वह महिला पूरी तरह से स्वतंत्र हो गई।

जब मैं वापस लौटकर उस कमरे में आया जहाँ पर सब लोग इकट्ठा थे, तो मैंने पाया कि मेरी टीम के लोग वहाँ मौजूद लोगों के लिये प्रार्थना कर रहे हैं, और वहाँ मौजूद लोगों में से कोई भी बिना छुटकारा पाये वापस नहीं जाना चाहता था, क्योंकि वे जान चुके थे कि जिन समस्याओं, लतों, चिन्ताओं और विकारों को मैंने बोर्ड पर लिखा था, उनमें से बहुत सी बातों से वे परेशान थे और संघर्ष कर रहे थे। वह मीटिंग (सभा) साढ़े तीन घण्टे तक चली। उस महिला और उसके पति ने यीशु को अपने जीवन में ग्रहण किया और आगे चलकर वे दानों बहुत से मुस्लिम लोगों को यीशु के पास लाने वाले एक आंदोलन के अगुवे बने।

मसीह का विजय

जैसे कि मैंने आपको पिछले अध्याय में बताया था कि अपनी या किसी की बीमारी की चंगाई के लिये विश्वास करना कोई बेबुनियाद (आधारहीन) उम्मेद मात्र नहीं है। ये ही बात दुष्ट–आत्माओं से छुटकारे और दुष्ट आत्माओं को निकल जाने की आज्ञा देने पर सच्ची और खरी उतरती है। यीशु का नाम कोई जादुई मंत्र नहीं है; जो भी आज्ञा हम दुष्ट आत्मा को देते हैं वह बेबुनियाद और आधारहीन नहीं होनी चाहिए। जब हम शैतान को बाँधते हैं और निकल जाने की आज्ञा देते हैं तो पीड़ित व्यक्ति के छुटकारे के लिये हमारे पास विश वास की एक मजबूत उम्मेद होनी चाहिए।

छुटकारा तब सफल और सार्थक होता है जब हम पिता और पुत्र के द्वारा पूरे किये गये उस कार्य पर भरोसा जताते हैं, पवित्र आत्मा के साथ सहभागी बन जाते हैं और परमेश्वर के द्वारा हमें दिये गये अधिकार का इस्तेमाल करते हैं। निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें।

"... परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करें" (1 यूहन्ना 3:8)। यीशु अपने मिशन अथवा जिस कार्य को करने आया था उसे पूरा करने में नाकाम नहीं रहा; शैतान के कामों का नाश हुआ है। जब हमारा सामना शत्रु से होता है, तो हमें आत्मिक रीति से यह समझना है कि शैतान के काम नाश हुए हैं। यह बात हमारे विश्वास का कारण है (चंगाई के लिये प्रार्थना करते समय) कि यीशु ने हमारी बीमारियों को स्वयं सह लिया है या उठा लिया है, ठीक इस प्रकार से यीशु के द्वारा शैतान के कार्यों को नाश करना हमारी दुष्ट आत्माओं से आजादी और छुटकारे की उम्मेद का कारण है।

"और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उताकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाश ा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि सुनाई।" (कुलुस्सियों 2:15)

"इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे।" (इब्रानियों 2:14)

यीशु ने मनुष्य के प्रायश्चित के लिये बलिदान होने के द्वारा शैतान और उसकी सेना को निर्बल या शक्तिहीन बना दिया है। जब भी आपका सामना दुष्ट आत्मा से होता है, तो आपको यह सच्चाई जाननी या याद रखनी चाहिए कि वे आपके सामने कमजोर, शक्तिहीन और बेबस हैं – आपकी आज्ञा (आदेश) का वो सामना करके आपके सामने खड़ी नहीं रह सकती है।

“उसी (पिता) ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया” (कुलुस्सियो 1:13)।

पिता ने आपको शैतान की हर एक सामर्थ्य और प्रभाव से छुड़ाया एवं आजाद किया है। उसने अन्धकार से छुड़ाकर आपको यीशु के राज्य में पहुँचाया है। यीशु मसीह में जो आपकी आत्मिक गौरवपूर्ण स्थिति या पद जो स्थापित हो चुका है, उस गौरवपूर्ण स्थिति अर्थात् पद के कारण जब आप शैतान का सामना करेंगे तो वह निश्चय ही आपके सामने से भाग निकलेगा।

“मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में पहले से बंधा हुआ होगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में पहले से खुला हुआ होगा।” (मत्ती 16:19)

हम अन्धकार को इसलिये बाँधते हैं, अंधकार के कार्यों को नाश होने की आज्ञा इसलिये देते हैं और दुष्ट आत्मा को निकल जाने की आज्ञा इसलिये देते हैं क्योंकि अन्धकार और शैतान के कार्य पहले ही बाँधे जा चुके और नाश किये जा चुके हैं। हम शैतान को इस आशा से नहीं बाँधते हैं कि शायद हमारे बाँधने से वह बँध जाएगा, परन्तु हम शैतान को इसलिये बाँधते हैं क्योंकि वह पहले ही हार चुका है, कुचला जा चुका है, और शक्तिहीन और निर्बल किया जा चुका है। जो कुछ भी आत्मिक क्षेत्र में पहले ही घटित हो चुका है, आपका विश्वास इस पृथ्वी पर उसी को दर्शाता (प्रकट करता) है।

“फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्ट आत्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया।” (लूका 9:1)

“देखो, मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है, और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।” (लूका 10:19)

आपको अधिकार और सामर्थ्य तो निश्चित रूप से मिले हैं, परन्तु पिता और पुत्र के द्वारा पूरे किये गये कार्य पर आप कितना विश्वास और भरोसा रखते हैं, इसी पर आपका अधिकार और प्रभाव निर्भर करता है। जितना अधिक पिता और पुत्र के द्वारा पूरे किये गये कार्य पर आप विश्वास और भरोसा रखेंगे उतने ही प्रभावी रूप से आप शैतान पर अपने अधिकार का इस्तेमाल कर पाएंगे। इसी कारण जो कुछ भी स्वर्ग में बाँधा जा चुका है, केवल उसी को आप इस पृथ्वी पर बाँध सकते हैं। अपने अधिकार का इस्तेमाल अन्धकार से वास्तविक आजादी पाने या प्रदान करने के लिये ही करें। यीशु की शैतान पर विजय

आत्मिक क्षेत्र में वास्तविकता है परन्तु आपका विश्वास वह कड़ी है जो यीशु की आत्मिक क्षेत्र में हुई विजय का अनुभव हमें पृथ्वी पर कराता हैं।

दुष्ट आत्माओं को निकालने के व्यवहारिक कदम

कदम 1 : तीन सवालें पूछें और पहचानने समझने की कोशिश करें कि किस प्रकार से दुष्ट आत्मा पीड़ित व्यक्ति को उत्पीड़ित या परेशान कर रही हैं। आप इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि पीड़ित व्यक्ति उत्पीड़न का सामना किस प्रकार से कर रहा है, किस प्रकार का उत्पीड़न सह रहा है।

कदम 2 : जो व्यक्ति छुटकारा पाने के लिये आया है उससे समर्पण की यह प्रार्थना करने को कहें : "यीशु मैं जैसा भी हूँ आपके पास छुटकारे के लिये आता हूँ। मैं इस समय अपनी आत्मा, प्राण और शरीर को आपको सौंपता हूँ और घोषणा करता हूँ कि आप मेरे प्रभु हैं। मेरे अंदर या मुझ पर जो भी दुष्ट आत्मा हैं, मैं उसे रोकता हूँ कि छुटकारे की प्रक्रिया और प्रार्थना के दौरान किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न न करें। दुष्ट–आत्मा, तू मेरा ध्यान नहीं बंटा सकती और मेरे अंदर से या मेरे द्वारा प्रगटीकरण नहीं कर सकती, और तुझे यीशु के नाम में चुपचाप और शान्त रूप से निकलना होगा।"

कदम 3 : पवित्र आत्मा की उपस्थिति, व्यक्तित्व और सामर्थ्य को आमंत्रित करें। पीड़ित व्यक्ति और दुष्ट आत्मा की ओर कम ध्यान देते हुए पवित्र आत्मा की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित करें, उसकी उपस्थिति के प्रति जागरूक बने रहें और उसकी आवाज सुनने को तत्पर और तैयार रहें।

(परिचालन) जब मैं किसी ऐसे व्यक्ति के लिये प्रार्थना करता हूँ जो कि दुष्ट आत्मा के उत्पीड़न का शिकार है, तो दुष्ट आत्मा को आज्ञा देते समय मैं उत्पीड़ित व्यक्ति की आँखों में देखता हूँ। हालांकि वचन में तो ऐसा कोई निर्देश नहीं मिलता है लेकिन फिर भी यह तरीका मुझे बहुत प्रभावी लगता है।

कदम 4 : सख्ती दिखाते हुए अधिकार के साथ – बिना चिल्लाए – अशुद्ध आत्मा को उसकी गतिविधियों का वर्णन करते हुए पीड़ित व्यक्ति को छोड़कर चले जाने की आज्ञा दें। दुष्ट–आत्माओं के नाम बेमानी है; यदि अवसाद, वासना, क्रोध, आदि की आत्मा है तो उस गतिविधि का नाम लेकर दुष्ट आत्मा को सम्बोधित करें, जैसे कि 'वासना की आत्मा' या फिर 'स्वप्न में सताने वाली आत्मा'। जब आप शैतानी आत्मा को आज्ञा/आदेश देते हैं तो

अध्याय 8 में जैसा बताया गया है, उसी के अनुसार आत्मा से जरुर प्रार्थना करें, और शैतान को अपनी कल्पना और सोच में बाहर निकलते हुए देखें।

उदाहरण : "डराने और सताने वाली आत्मा, मैं तुझे अभी बाँधता हूँ और तेरी उपस्थिति और गतिविधियों को (राकेश) के जीवन में से रोकता हूँ। मैं तेरे प्रभाव को समाप्त करता हूँ और तुझे यीशु के नाम में कहता हूँ कि निकल जा। तू इस व्यक्ति में नहीं बनी रह सकती और न ही मेरा सामना कर सकती है। तू कमजोर और बेबस है शैतान, निकल जा।"

कदम 5 : पीड़ित व्यक्ति के ऊपर हाथ रखकर पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ्य को आमंत्रित करें और पवित्र आत्मा से कहें कि वह पीड़ित व्यक्ति के अंदर आऐ और उसे इस प्रकार भरे कि उसके अंदर अंधकार के लिए अब कोई स्थान न हो। जो भी नबूवत के शब्द पवित्र आत्मा आपको देता है, उन्हें बालें। जहाँ कहीं भी अन्धकार है वहाँ पर पवित्र आत्मा की उपस्थिति भर जाऐ, यह विश्वास करें।

उदाहरण : पवित्र आत्मा आऐं और (राकेश) को अपनी उपस्थिति और सामर्थ्य से भर दें, दुष्ट आत्माओं को भगाऐं और (राकेश) को अपनी ज्योति, सत्य और उपस्थिति से भर दें। परमेश्वर के आत्मा आप बहें और (राकेश) को भर दें।

कदम 6 : अमुक व्यक्ति से पूछें कि इस दौरान उसने क्या और कैसा महसूस किया, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों अनुभव पूछें। नीचे दिये गये चार्ट में दोनों सकारात्मक और नकारात्मक अनुभव हैं जिनसे होकर लोग अक्सर गुजरते हैं। यदि इस समय कुछ ऐसे नकारात्मक प्रभाव पता चल रहे हो जो कि अधिक गंभीर नहीं है, तो उन्हें नजर अंदाज करते हुये अगले कदम की ओर बढ़ चलें। यदि वे प्रभाव बहुत अधिक विचलित करने वाले और कमजोर कर देने वाले हैं तो उन्हें बाँधें और रूक जाने की आज्ञा दें। यदि अमुक व्यक्ति को छुटकारा मिल गया है या फिर आपको लगता है कि उस व्यक्ति को छुटकारा मिल गया तो सीधे 9वें कदम की ओर बढ़ चलें। यदि उस व्यक्ति ने पूरी आजादी और छुटकारे को महसूस नहीं किया तो 7वें कदम की ओर बढ़ें।

सकारात्मक प्रभाव	नकारात्मक प्रभाव

महसूस करना कि कुछ निकल कर बाहर गया है; खालीपन महसूस करना; शरीर में हल्का महसूस करना; महसूस करना कि मेरे ऊपर से भारी वजन उठ गया है; शान्ति और आराम महसूस करना।	भारीपन महसूस करना; सांस लेने में परेशानी महसूस करना; बोल नहीं पाना; महसूस करना कि गले या छाती में कुछ अटक रहा है; सिर में दर्द होना, शरीर में दर्द होना, शरीर अकड़ जाना, आदि।

कदम 7 – फिर से पवित्र आत्मा की ओर ध्यान लगायें और दुष्ट आत्माओं को चले जाने की आज्ञा दें, उन्हें बाँधें और वहाँ पर बने रहने से रोकें। आज्ञा देने और डांटने के बीच–बीच में दुष्ट आत्माओं के विरूद्ध वचन को बोलें। पीड़ित व्यक्ति से कहें कि वह भी दुष्ट आत्माओं को चले जाने की आज्ञा दें, आपके पीछे–पीछे पवित्र शास्त्र के वचन को दोहराये। यदि जरुरत पड़े तो इस प्रक्रिया को कई बार दोहरायें।

उदाहरण : ''दुश्ट शैतानों तुम हारे हुऐ हो; यीशु ने तुम्हें कुचला और लज्जित किया है। तुम कमजोर और शक्तिहीन हो; इसी समय निकल जाओ। मैं यीशु के नाम में तुम्हें बाँधता और कुचलता हूँ। तुम यहाँ पर बने नहीं रह सकते और न ही मेरा सामना कर सकते हो; यीशु के नाम और अधिकार में मैं तुम्हें निकालता हूँ। शैतान, तेरे सब कार्य नाश हुये हैं; तू हार गया और प्रबल नहीं हो सकता। निर्बल शैतानों, अभी निकल जाओ! पिता ने (राकेश) को अन्धकार के कब्जे से छुड़ाया है; इसलिये, यहाँ पर तुम्हारा राज्य (क्षेत्र) और प्रभुत्व नहीं है। यीशु प्रभु है और तुम यहाँ से निकाले गये हो। यीशु का लहू (राकेश) के ऊपर है और यहाँ पर तुम्हारा कोई वश नहीं चल सकता। यीशु के नाम में आजाद होने की आज्ञा देता हूँ।''

ध्यान दें : यदि अमुक व्यक्ति बेहोश हो जाता है तो दुष्ट आत्माओं को शान्त हो जाने की आज्ञा दें, और लगातार उत्पीड़ित व्यक्ति का नाम तब तक पुकारते रहें जब तक कि वह फिर से होश में नहीं आ जाता और दुष्ट–आत्मा का सामना करने के लिये आपके साथ सम्मिलित नहीं हो जाता।

कदम 8 : कदम 6 को दोहरायें, सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव और अनुभव को उत्पीडित व्यक्ति से पूछते हुये। यदि उस व्यक्ति को छुटकारा मिल गया है तो कदम 9 की ओर बढ़ जायें, यदि नहीं तो कदम 7 और कदम 8 को तब तक दोहराते रहें जब तक कि वह पीड़ित व्यक्ति पूरी तरह से आजाद नहीं हो जाता है।

कदम 9 : उस व्यक्ति के छुटकारे के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें और करवाएँ। हर उस क्षेत्र में पवित्र आत्मा की भरपूरी को माँगें जहाँ पर अन्धकार का सम्राज्य था। उस व्यक्ति से कहें कि वह ज्यादा से ज्यादा लोगों को अपने छुटकारे की गवाही दें।

जैसे कि बीमारी की दुष्ट आत्माऐं वापस लौट कर चंगाई पाये हुऐ व्यक्ति में बीमारी के लक्षण फिर से लाने की कोशिश करती है, ठीक उसी प्रकार से निकाली गयी दुष्ट आत्माऐं, जिस शरीर से निकाली जाती है, वहाँ पर फिर से आकर उस शरीर/घर पर अपना कब्जा करने की कोशिश करती है। छुटकारा पाये हुये व्यक्ति को यीशु मसीह की शैतान पर विजय, पवित्र आत्मा की शिक्षा, और विश्वासी को परमेश्वर के द्वारा दिये गये अधिकार की शिक्षा देना बहुत मददगार साबित होता है, उस व्यक्ति के लिये भविष्य में भी शैतान का सामना करने और दुष्ट आत्माओं से आजाद बने रहने में।

व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से ध्यान देने के लिये व्यवहारिक सवाल :

1. इस अध्याय को पढ़ने से पहिले दुष्ट आत्माओं की गतिविधियों को जानने–समझने में आप कितने सक्षम थे? क्या आपने अपनी आँखों के सामने दुष्टआत्मा का प्रगटीकरण पहिले कभी देखा है? आत्मिक क्षेत्र को जानने समझने के मामले में आपका सोच और नजरियों क्या पूर्वी देशों के लोगों जैसा है या फिर पश्चिमी देशों में रहने वाले लोगों के समान है?

2. दुष्ट आत्मा की छिपी हुई गतिविधियों का अध्ययन करने के दौरान क्या आपको किसी ऐसी आत्मा का एहसास हुआ है जो कि सम्भवत आपके अंदर कार्य कर रही है? यदि हाँ, तो किस प्रकार से दुष्ट आत्मा छिपे हुए रूप में आपके अंदर कार्यरत है?

3. जब हम पाप के विरूद्ध अपने शरीर को संघर्ष या युद्ध का स्त्रोत समझने की गलती करते हैं, तो किस प्रकार से हम दुष्ट आत्माओं को अपना हमला जारी रखने की अनुमति दे सकते हैं? क्या आप अब पहिचान पाये है कि शरीर के साथ होने वाला यह संघर्ष या युद्ध विभिन्न प्रकार की दुष्ट आत्माऐं हैं?

4. अपने आप से तीन सवाल पूछें; क्या आप इन सवालों में से किसी का भी जवाब 'हाँ' में दे सकते हैं? क्या कोई ऐसा है जिस पर आप भरोसा रखते हैं कि वह आपके साथ मिलकर आपके छुटकारे के लिये प्रार्थना कर सकता है? प्रार्थना का समय निर्धारित करें।

5. वचन के इस पद पर ध्यान दें: ''...जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो...'' (मत्ती 7:12)। जो कोई छुटकारा प्राप्त करने के लिये हमारे पास आता है उसे हम किन–किन व्यवहारिक तरीकों से प्रेम, आदर और सम्मान दे सकते है? उन सब तरीकों की सूची बनाऐं।

6. किस प्रकार से हमारी अधिकारपूर्ण आज्ञा परमेश्वर के द्वारा पूरे किये गये कार्य पर निर्भर करती है?

7. किस प्रकार से आप इस अध्याय को व्यवहारिक रूप से अपने जीवन में और अपने प्रभाव के क्षेत्र में लागू करेंगे? प्रार्थना के साथ उन लोगों की सूची बनाऐं जिन्हें आपको लगता है दुष्ट आत्माओं से छुटकारे की जरुरत है। पवित्र आत्मा से माँगें कि वह आपके लिये छुटकारे की सेवकाई के द्वार खोले और जाकर उन लोगों से (जिनके नाम उस सूची में हैं) पूछें कि क्या वे प्रार्थना करवाना चाहते हैं या क्या मैं आपके लिये प्रार्थना कर सकता/सकती हूँ?

10

सामान्य रूप से पूछे जाने वाले सवाल

सवाल : आप सिखाते हैं कि परमेश्वर की इच्छा हमेशा लोगों को चंगा करने की है, जबकि प्रेरित पौलुस बीमार और रोगी था – शरीर (देह) में काँटा – जिसे परमेश्वर ने चंगा करने से मना कर दिया था। क्या इस से यह पता चलता है कि परमेश्र हर बार चंगा नहीं करता?

फेफड़ें की लाईलाज बीमारी से चंगा होने से पहिले मैं भी इसी सवाल के साथ जूझता था। याद रखें शैतान ने यीशु पर एक–तिहाई (one-third) हमले वचन में जोड़–तोड़ या हेरफेर (manipulate) करने के द्वारा किये (मत्ती 4:6)। भरमाने वाली आत्मा न केवल दूसरे मत और धर्मों में काम करती है, परन्तु मसीहियत में भी उतना ही कार्य करती है (1 तीमुथियुस 4:1)। यीशु अपने पास आने वाले हर व्यक्ति को जो चंगाई देते हैं, शैतान उस चंगाई की स्पष्टता पर बादल लाने की कोशिश करता है ताकि वह चंगाई लोगों को साफ–साफ दिखाई न दें। और शैतान इस तरह से यीशु मसीह के द्वारा हमारे प्रायश्चित के लिये दिये गये जिस बलिदान ने हमारी बीमारी और रोगों को उठाया (सहा और दूर किया), उसकी वैधता (legitimacy) और सच्चाई के विषय में हमें भ्रमित करता है।

इस सवाल में दिया गया वचन का पद 2 कुरिन्थियों 12:7–9, में है और वहाँ लिखा है :

''इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊँ, मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूँसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊँ। इसके विषय में मैंने प्रभु से तीन बार विनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए। पर उसने मुझ से कहा, मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।'' (2 कुरिन्थियों 12:7–9)

बहुत से लोग समझते है कि यह ''काँटा'' कोई शारीरिक बीमारी या रोग है; जबकि हम संदर्भ को देख समझ कर जब सही व्याख्या करते हैं तो हमें साफ–साफ दिखाई पड़ता है कि यहाँ इसका किसी बीमारी से कुछ भी लेन–देन नहीं है। हालांकि हमारी बाईबिल में अध्याय और पद पाऐं जाते हैं लेकिन बाईबिल के जो मूल हस्तलेख (हस्तलिपि) थे, वे (बिना अध्याय और पदों के विभाजन के) लगातार एक पत्री के रूप में लिखे गये थे। इसलिये इसे

सही तरह से समझने के लिये इससे पहिले के अध्याय और आसपास के पदों को भी जाँचना या परीक्षण करना होगा। आईये, अध्याय 11 में जाकर देखें कि प्रेरित पौलूस किस विषय में बात कर रहे हैं और किस ओर इशारा कर रहे हैं।

''क्यों वे ही मसीह के सेवक हैं? मैं पागल के समान कहता हूँ, मैं उन से बढ़कर हूँ। अधिक परिश्रम करने में, बार–बार कैद होने में; कोड़े खाने में; बार–बार मृत्यु के जोखिमों में। पाँच बार मैंने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस उन्तालीस कोड़े खायें। तीन बार मैंने बेंतें खाई; एक बार मुझ पर पथराव किया गया; तीन बार जहाज, जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात–दिन मैंने समुद्र में काटा। मैं बार–बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जाति वालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में; परिश्रम और कष्ट में; बार–बार जागते रहने में; भूख–पियास में; बार–बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में। और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है। किसकी निर्बलता से मैं निर्बल नहीं होता? किसके ठोकर खाने से मेरा जी नहीं दुखता? यदि घमण्ड करना अवश्य है, तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करूँगा।'' (2 कुरिन्थियों 11:22–30)

उपरोक्त पदों में प्रेरित पौलुस अपनी निर्बलता की चीजों पर घमण्ड करते हैं। निर्बलता शब्द का मूल यूनानी शब्द 'अस्थीनिया' (astheneia) हैं, जो कि 2 कुरिन्थियों 12:9: पद में भी इस्तेमाल किया गया है। यहाँ पर जिन निर्बलताओं का वर्णन किया गया है, उन निर्बलताओं (कमजोरियों) में आपको कहीं पर भी सूची में बीमारी दिखाई दे रही है? नहीं। यह तो उन सताव और जोखिमों की सूची है जिनका सामना प्रेरित पौलुस ने सुसमाचार को फैलाने के दौरान किया। सवाल में जिस पद का वर्णन किया गया है, उससे आगे के पद को देखते हैं।

''इस कारण मैं मसीह के लिये निर्बलताओं में, और निन्दाओं में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूँ; क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ'' (2 कुरिन्थियों 12:10)। शरीर (देह) में चुभे काँटे के वर्णन के तुरन्त बाद पौलुस एक बार फिर से जोर देते हैं उस सताव पर जिसका उन्होंने लगातार सामना किया। यहाँ पर भी किसी भी प्रकार की बीमारी का वर्णन नहीं है। शरीर में चुभे काँटे को बीमारी या रोग मानना पूरी तरह से सिर्फ अनुमान लगाना या कल्पना करना मात्र है। पुराने नियम में जब भी इस तरह का जिक्र (हवाला या उल्लेख) मिलता है वहाँ पर पड़ोसी गैर यहूदी देशों के द्वारा इस्त्राएलियों और यहूदियों पर सताव को दिखाता या बताता है।

''परन्तु यदि तुम उस देश के निवासियों को अपने आगे से न निकालोगे, तो उसमें से जिनको तुम उसमें रहने दोगे वे मानो तुम्हारी आँखों में काँटे और तुम्हारे पांजरों में कीले ठहरेंगे, और वे उस देश में जहाँ तुम बसोगे तुम्हें संकट में डालेंगे।'' (गिनती 33:55)

यहाँ पर 'आँखों में काँटे' का इस्तेमाल न अंधेपन या आँख की किसी बीमारी का उल्लेख या जिक्र करने के लिये किया गया है और न ही 'पांजरों में कीले' का इस्तेमाल टी.बी., शुगर की बीमारी (मधुमेह) या अन्य किसी प्रकार की बीमारी का उल्लेख (जिक्र) करने के लिये किया गया है। प्रेरित पौलुस जो कि पुराने नियम को अच्छी तरह से जानते थे वरन् उसमें माहिर थे, अच्छी तरह से जानते थे कि वे किस बात का उल्लेख कर रहे थे इन शब्दों को इस्तेमाल करते समय।

प्रेरित पौलुस के शरीर में चुभा काँटा एक दूत था – शैतान का दूत, स्वर्ग से गिराया हुआ फरिश्ता जो कि आलौकिक रूप से यहूदी और अन्यजातियों दोनों ही को भड़काता था कि वे पौलुस को सताऐं। यह बात प्रेरितों के कार्य के 14 अध्याय में साफ पता चलती है। प्रेरित पौलुस यात्रा कर के जगह–जगह सुसमाचार प्रचार कर रहे थे, और जहाँ भी उन्हें कामयाबी मिल रही थी, वहाँ–वहाँ उन्हें सताव का सामना करना पड़ रहा था। वे लुस्त्रा में गये और सुसमाचार प्रचार के बाद अद्‌भुत चमत्कार प्रगट हुऐ और यहाँ तक कि उस नगर के निवासी पौलुस के सामने बलिदान चढ़ाने को बैल ले आये। क्योंकि वे उन चमत्कारों के कारण पौलुस और बरनबास को देवता मान बैठे थे। इसके बाद हम देखते हैं कि कुछ यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर उन लोगों को अपनी ओर कर लिया और पौलुस पर पथराव किया। यहाँ पर आलौकिक रूप से शैतान का दूत उन लोगों को जो कि पौलुस की पूजा करना चाहते थे, उसके विरूद्ध ऐसे भड़का देता है कि वे उसे पथराव करते हो। "यह कहकर भी उन्होंने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिये बलिदान न करें। परन्तु कुछ यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया और पौलुस पर पथराव किया और मरा हुआ समझकर उसे नगर के बाहर घसीटकर ले गये" (प्रेरितों 14:18–19)।

पौलुस के खिलाफ सताव के लिये लोगों को भड़काने और प्रेरित करने में शैतान के इस दूत ने आलौकिक रूप से अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया। पौलुस ने परमेश्वर से सताव को दूर करने की विनती की जिसका सामना उसे निरन्तर करना पड़ रहा था; पौलुस बीमार नहीं था और न ही परमेश्वर से चंगाई के लिये निवेदन कर रहा था। परमेश्वर ने उत्तर दिया कि सताव के समय उसका अनुग्रह बहुतायत से प्रगट होगा और उसकी रक्षा करेगा (सम्भालेगा), जैसे की हम देखते भी हैं कि किसी अद्‌भुत रीति से उस पथराव को सहकर भी प्रेरित पौलुस जिन्दा बच गये और बाद में उसी नगर में लौट आये।

जो कोई भी यीशु के पास आया, यीशु ने सभी को चंगा किया, परन्तु यीशु ने अपने चेलों से वादा किया था कि उन्हें सताव सहना होगा (यूहन्ना 15:19–21)। सताव को बीमारी से न जोड़ें और न श्रेणीबद्ध करें।

सवाल : यदि किसी व्यक्ति के लिये प्रार्थना करने के बाद उसे चंगाई या दुष्ट आत्मा से छुटकारा न मिले तो ऐसे में मुझे क्या करना चाहिये?

केवल यीशु ही हर एक परिस्थिति में 100 प्रतिशत सफलता हासिल करने में समर्थ और सक्षम थे। जैसे–जैसे हम परमेश्वर की नजदीकी और प्रकाशन से बढ़ रहे हो, तो हम अधिक से अधिक कामयाबी की ओर बढ़ते जाते हैं। हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए की हमें 100 प्रतिशत कामयाबी की ओर बढ़ते रहना चाहिए। ऐसे समय भी आये जबकि प्रारम्भिक कलीसिया ने 100 प्रतिशत कामयाबी हासिल की (प्रेरितों 5:16)। इसलिये हम कह सकते हैं कि यह निश्चय ही सम्भव है। फिर भी नाकाम होने पर हमें निराश और हताश नहीं होना चाहिए, परन्तु जानना चाहिए कि नाकामयाबी का सही तरह से सामना कैसे किया जाए ताकि आगे चलकर हमें कामयाबी मिल सके।

सबसे पहिले हमें यह समझना होगा कि परमेश्वर कभी भी नाकाम नहीं होता; पिता और पुत्र के द्वारा पूरा किये गये कार्य स्पष्ट (साफ), निश्चित और अनन्त हैं। नाकाम हमेशा हम होते हैं, परमेश्वर नहीं; फिर भी अपने आप को या किसी और को नाकामी के लिये दोष देने से कुछ भी लाभ नहीं होता। चंगाई और छुटकारे की सेवकाई के दौरान मिली नाकामी (असफलता) को तीन मुख्य भागों में बाँट सकते हैं। हमारे प्रायश्चित के लिये परमेश्वर के द्वारा किये गये कार्य के प्रकाशन की कमी, पवित्र आत्मा से नजदीकी का न होना और पवित्र आत्मा की आवाज को नहीं पहचानना, उसकी अगुवाई में न चलना, अपने अधिकार का प्रभावी रूप से इस्तेमाल न करना, विश्वास में दृढ़ (अटल) न बने रहना और बहुत सी रूकावटों के आगे हार मान लेना। हम यह सीखने के सफर (यात्रा) में हैं कि परमेश्वर की सामर्थ्य में कैसे सेवकाई की जायें और प्रार्थना कराने आया व्यक्ति भी चंगाई और छुटकारा खोजने के सफर (यात्रा) में है। मैं आपसे गुजारिश करता हूँ कि दौड़ में बने रहें।

बड़े प्रकाशन को प्राप्त करने के लिये परमेश्वर के द्वारा पूरे किये गये कार्यों का अध्ययन करें, मनन करें और उनका अंगीकार करें। अपनी आत्मा में से निरन्तर अपने अधिकार का निरन्तर अभ्यास (उपयोग) करें, ठीक अपनी माँसपेशियों की कसरत (व्यायाम) के समान अपनी माँसपेशियों का इस्तेमाल आत्मिक रूप से प्रभावशाली बनने के लिये करें। प्रतिदिन पवित्र आत्मा के साथ समय बिताएँ ताकि पवित्र आत्मा की शख्शियत (व्यक्ति) और उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील बनते चले जायें। जैसे–जैसे लोगों के बीच सेवकाई

करने का अनुभव बढ़ता जायेगा, वैसे–वैसे आप लोगों के साथ बेहतर सम्बन्ध कायम करना सीखते जाऐंगे और उन्हें उस स्थिति में लाकर खड़ा कर सकेंगे जहाँ पर वे बेहतर रूप से परमेश्वर से चंगाई और छुटकारा पा सकेंगे। निराश (हताश) न हो। इसको एक ऐसे मौके एवं अवसर के रूप में इस्तेमाल करें जहाँ आप परमेश्वर और उसके वचन से लिपटे रह सकते हो।

सवाल : मैं परमेश्वर की सेवा करना चाहता हूँ, परन्तु जिस प्रकार की सफलता, अभिषेक और वरदान की मैं इच्छा रखता हूँ, इसे अपनी सेवकाई में नहीं देखता हूँ। मैं शक और संदेह करने लगा हूँ कि क्या परमेश्वर ने सचमुच मेरे जीवन में सेवकाई की बुलाहट दी है या नहीं। मेरे जीवन में सचमुच परमेश्वर की बुलाइट है, इस बात को मैं कैसे जान सकता हूँ?

जिस तरह के संदेह और शक की आप बात कर रहे हो, वह कोई अनोखी ऐसी बात नहीं है जिसका सामना केवल आपको ही करना पड़ रहा है; हर एक सेवक किसी न किसी स्तर पर हताशा का सामना करता है। मेरी जानकारी में जितने भी सेवक अभिषेक में चलते और सेवकाई करते हैं, उन सभी ने अपना समय और ऊर्जा (ताकत) परमेश्वर की उपस्थिति में बने रहने और उसके वचन का समर्पण के साथ अध्ययन–मनन करने में लगायी है। मेरी जानकारी में जितने भी सेवक हैं, उन्होंने सेवकाई में सफल होने के लिये संघर्ष किया और बहुत बार अपनी बुलाहट पर भी संदेह किया है। जो बात उन्हें औरों से अलग करती है (जिसके कारण वे आज बड़ी कामयाब सेवकाई कर रहे है), वह यह है कि वे बड़ी दृढ़ता से लगे रहे और वे रुके नहीं और न उन्होंने हार मानी। यदि आप यह समझते हैं कि आप बिना परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित हुए और परमेश्वर से व्यक्तिगत सम्बन्ध रखे बिना बड़े अभिषेक से भरकर सेवकाई कर सकते हो तो यह आपकी बहुत बड़ी भूल और आप ध ोखा खा रहे हो।

कुछ एक व्यवहारिक कदम हैं जिनके द्वारा आप इन समस्याओं और संघर्षों का सामना करके कामयाब हो सकते हो। क्या कोई अभिषिक्त और वरदान पाये हुए प्रभु के दास है जो कि आपको सही सलाह दे सकते है, आपका मार्ग–दर्शन कर सकते है? यदि नहीं, तो मैं समझता हूँ कि यही मुख्य कारण है। क्या आप विश्वास का कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं, क्या आप विश्वास के साथ जोखिम उठाने को तैयार हैं? मैंने सबसे सामर्थ्यी अभिषेक का अनुभव (महसूस) तब किया है जब मुझे अभिषेक की जरुरत थी। अपने कमरे में बैठकर बाईबिल पड़ने के लिये अभिषेक की जरुरत नहीं है, परन्तु आप अपने आप को ऐसी परिस्थिति में डालें जहाँ पर परमेश्वर को अपने आप अपनी सामर्थ्य को प्रगट करने की जरुरत पड़े जिससे की सेवकाई में आप भी कामयाबी का अनुभव करें। क्या आप

बहुत जल्दी हार मान रहे है? मैं ऐसे विश्वासियों को जानता हूँ जो कि विश्वास का कदम बढ़ाते तो हैं, परन्तु यदि 30 सेकेंड में कुछ नहीं हुआ तो पीछे लौट जाते हैं। हमारे आत्मिक विकास के लिये दृढ़ता के साथ विश्वास में बने रहना बहुत जरुरी है। जो मैंने यहाँ पर सलाह दी है, यदि आप कुछ समय तक उनके अनुसार करेंगे और दृढ़ बने रहेंगे तो आप कुछ समय के बाद निश्चित रूप से अपनी सेवकाई में बड़ी कामयाबी को देखने पायेंगे।

सवाल : मुझे सिखाया गया था कि एक मसीही दुष्ट आत्मा के कब्जे (possession) में कभी नहीं आ सकता है, क्योंकि पवित्र आत्मा उसके अंदर रहता है। दृष्ट आत्मा से छुटकारे की जरुरत विश्वासी को होती है या फिर केवल अविश्वासी को ही दृष्ट आत्मा से छुटकारे की जरुरत होती है?

इस सवाल में इस्तेमाल की गई शब्दावली (कब्जा–possession) के अनुसार एक मसीही विश्वासी पर दुष्ट आत्मा कभी भी अपना कब्जा नहीं कर सकता है और विश्वासी के किसी भी हिस्से का मालिक शैतान नहीं हो सकता (1 कुरिन्थियों 6:19–20)। लेकिन, फिर भी मुझे साफ–साफ शब्दों में कहने दें कि एक विश्वासी दुष्ट आत्माओं के द्वारा प्रभावित हो सकता है, दुष्ट–आत्मा उसे तड़पा और सता सकती है, और उसे परेशान व दुखी कर सकती है। Possessed शब्द मूल यूनानी शब्द 'डाईमोनीजोमाई' (daimonizomai) से आया है, जिसका मतलब मालिकाना हक नहीं है परन्तु इसका मतलब है दुष्ट आत्मा के प्रभाव में या उसकी आधीनता में होना। यूनानी शब्द की परिभाषा के अनुसार मैं कह सकता हूँ कि सम्भव है कि एक मसीह विश्वासी दुष्ट–आत्मा के प्रभाव के नीचे (अधीन) हो सकता है। छुटकारे की आवश्यकता जितनी अविश्वासी को है उतनी ही एक विश्वासी को भी होती है।

अब सवाल यह है कि किसी व्यक्ति में किस स्थान पर दुष्ट–आत्मा पाई जाती हैः क्या दुष्ट–आत्मा व्यक्ति के अंदर होती है, क्या व्यक्ति पर होती है, क्या व्यक्ति के नीचे होती है या फिर क्या किसी व्यक्ति के चारों ओर होती है? मैं इस बात पर यकीन करता हूँ कि दुष्ट आत्मा किसी भी व्यक्ति के अंदर पाई जाती है, क्योंकि हमें दुष्ट आत्माओं को बाहर निकालने का निर्देश मिला है (मरकुस 16:17)। खैर ये बात मायने नहीं रखती है, पर किसी भी व्यक्ति का छुटकारा और आजादी अधिक मायने रखती है। कुछ अन्य सवाल मैं आपसे पूछना चाहता हूँ। क्या एक विश्वासी के अंदर पाप से भरे, नफरत से भरे और कामुकता से भरे विचार हो सकते हैं? क्या एक विश्वासी के अंदर कटुता (कड़वाहट), क्रोध, ईर्ष्या, पक्षपात (पूर्वाग्रह) जैसी भावनाऐं पायी जा सकती हैं? क्या कोई विश्वासी लालची, पक्षपाती, अहंकारी और मतलबी (स्वार्थी) हो सकता है? क्या किसी विश्वासी के शरीर पर उपदंश

रोग (syphilis), कैंसर, क्षय रोग और मलेरिया का हमला हो सकता है? इन सभी सवालों का जवाब बेशक 'हाँ' में है। यदि दुष्ट (बुरे) विचार, भावनाऐं, इच्छाऐं, झूठे विश्वास (मत) और बीमारियाँ विश्वासी में प्रवेश कर सकते हैं तो इनको भेजने वाली दुष्ट शक्तियाँ भी विश वासी में प्रवेश कर सकती हैं। मनुष्य आत्मा, प्राण और देह से मिलकर बना है (1 थिस्सलुनिकियों 5:23)। विश्वासी की आत्मा पूरी तरह से आजाद की गयी है और हमारी आत्मा के साथ हमारे अंदर पवित्र आत्मा वास करता है। फिर भी हमारा प्राण बुद्धि के नये हो जाने के द्वारा छुटकारा (आजादी) प्राप्त करने की प्रक्रिया में है (रोमियो 12:2)। और हमारा शरीर पूर्ण छुटकारे (आजादी) और अमरता की बाट जोह रहा है अर्थात् इंतजार कर रहा है। दुष्ट आत्मायें हमारे प्राण और शरीर पर हमला कर सकती हैं पर हमारी आत्मा तक नहीं पहुँच सकती हैं।

सवाल : यदि किसी व्यक्ति में से दुष्ट आत्मा नहीं निकल रही है, तो क्या हमें उस व्यक्ति के छुटकारे के लिये प्रार्थना और उपवास करना चाहिये, जैसा कि यीशु ने अपने चेलों को करने को कहा था?

कुछ लोगों का यह मानना है कि प्रार्थना और उपवास करने से दुष्ट आत्माओं को निकालने और चमत्कार प्रगट करने की हमारी योग्यता (सामर्थ्य) बढ़ जाती है। यह सोच सब जगह पाया जाता है। यह एक विधि–सम्मत (legalistic) सोच है और सुसमाचार से बिल्कुल अलग (विरल) और हटकर है। इससे पहिले कि मैं इस सवाल का जवाब आपको दूँ, आईये, हम वचन के पदों को पढ़ें और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें।

जब वे भीड़ के पास पहुँचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया और घुटने टेककर कहने लगा, 'हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर! क्योंकि उस को मिर्गी आती है और वह बहुत दुख उठाता है; और बार–बार आग में और बार–बार पानी में गिर पड़ता है। मैं उसको तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।' यीशु ने उत्तर दिया, 'हे <u>अविश्वासी और हठीले लोगों</u>, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।' तब यीशु ने दुष्टात्मा को डाँटा और वह उसमें से निकल गई; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया। तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, 'हम उसे क्यों नहीं निकाल सके?' उसने उन से कहा, '<u>अपने विश्वास की घटी के कारण</u>, क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, <u>यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो</u>, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, 'यहाँ से सरककर वहाँ चला जा' तो वह चला जायेगा; और कोई बात तुम्हारे लिये असम्भव न होगी। यह <u>जाति</u> बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।" (मत्ती 17:14–21)

सबसे पहिली बात यह है कि यीशु ने दुष्ट आत्मा का आकार, प्रकार और उसकी ताकत (शक्ति) नहीं बतायी है कि उसका आकार, प्रकार और ताकत ऐसी या इतनी हो कि निकल न सके। यीशु ने सिर्फ विश्वास और अविश्वास का यहाँ पर उल्लेख और वर्णन किया है। यहाँ पर 'हठीले' शब्द का जो प्रयोग हुआ है, उसका मूल यूनानी शब्द 'डिआस्ट्रेफो' (diastrepho) है, जिसका अर्थ है विरोध करना, साजिश करना, सही मार्ग से भटक जाना, आदि। यह एक ऐसे व्यक्ति की अवस्था को दर्शाता है जो कि परमेश्वर के मार्ग से जानबूझकर असहमत है और पश्चाताप नहीं करता है। जब हम जानबूझकर (स्वेच्छा से) परमेश्वर के साथ असहमत होते हैं तो छुटकारे की प्रक्रिया जटिल और कठिन हो जाती है। समस्या वह दुष्ट आत्मा नहीं थी, समस्या तो चेलों में विश्वास की कमी और जानबूझकर (स्वेच्छा से) की गयी अनाज्ञाकारिता थी।

यीशु तो उस समय दुष्ट आत्मा को निकालने से पहिले किसी लम्बे उपवास या प्रार्थना में नहीं गये। बिना उपवास और प्रार्थना के ही यीशु ने दुष्ट आत्मा को निकाल दिया। जब चेलों ने यीशु से एकान्त में ले जाकर कारण पूछा तो यीशु ने यह नहीं कहा, 'तुम पाँचवें दर्जे की दुष्ट आत्मा को निकालने की कोशिश कर रहे थे, जिसको निकालने के लिये और अधिक अधिकार और सामर्थ्य की जरुरत है, जो कि इस समय तुम्हारे पास नहीं है।' इसके उलट यीशु ने दुष्ट आत्मा का उल्लेख भी नहीं किया पर उनके विश्वास की कमी की ओर इशारा किया। चेलों के पास सब दुष्ट आत्माओं को दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार पहिले से ही था (लूका 9:1)। परन्तु इस अधिकार का सही प्रकार से इस्तेमाल करने के लिये जो विश्वास चाहिए था, उसकी कमी थी। इसके बाद यीशु ने कहा, 'यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं जाती।' लोग अंदाजा (अनुमान) लगाते हैं कि यहाँ पर यीशु किसी विशेष प्रकार की दुष्ट आत्मा का उल्लेख या वर्णन कर रहे हैं, लेकिन याद रखें, यीशु ने दुष्ट आत्मा का उल्लेख न करके उनके अविश्वास और उनकी बेवफाई की ओर इशारा किया। प्रार्थना और उपवास जब सही तरह से किया जाता है तो वह हमें उस अवस्था (स्थिति) में पहुँचाता है जहाँ पर हमें परमेश्वर से प्रकाशन मिलता है और परमेश्वर की और अधिक नजदीकी प्राप्त होती है जो कि हमारे विश्वास को और अधिक प्रभावी बनाती है। यदि आपके उपवास और प्रार्थना करने का मकसद (उद्देश्य) परमेश्वर की नजदीकी प्राप्त करना और उससे प्रकाशन प्राप्त करना है तो, मेहरबानी से प्रार्थना और उपवास को अपनी जीवन शैली बना लें।

जैसे कि हमने इससे पहिले बताया था कि किस आधार पर हम दुष्ट आत्माओं को निकल जाने की आज्ञा देते हैं? क्या प्रार्थना और उपवास के द्वारा हमें और अधिक अधिकार प्राप्त हो जाता है और क्या हमारी प्रार्थना और उपवास के आधार पर हमारे द्वारा दी गयी

आज्ञा (आदेश) और अधिक प्रभावी बन जायेगी? यदि आप यह मानते या विश्वास करते हैं तो आप सुसमाचार पर भरोसा करने में पूरी तरह से नाकाम हो गये हो। दुष्ट आत्माऐं यदि हमारे वश में और आधीन है तो केवल इस कारण क्योंकि यीशु शैतान के कार्यों को नाश कर चुका है, शैतान और दुष्ट आत्माओं को हरा चुका है और उन्हें निर्बल (शक्तिहीन) और कमजोर बना चुका है। हमारा विश्वास परमेश्वर के द्वारा किये गये छुटकारे पर है, और विश्वास के द्वारा दी गई कोई भी आज्ञा या आदेश केवल और केवल परमेश्वर और उसके पुत्र के द्वारा किये गये कार्यों पर ही आधारित होना चाहिऐ, न की हमारी प्रार्थना, उपवास, भक्ति या पवित्रता पर आधारित हो।

सवाल : जब दुष्टात्मा किसी व्यक्ति में से निकलती है और सूखी जगहों पर विश्राम न मिलने पर लौट आती है, और लौटने पर यदि उस स्थान को सूना पाती है तो अपने से बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है और उस मनुष्य की दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है। तो क्या हमें दुष्टआत्मा को निकालते समय सचेत नहीं रहना चाहिए और क्या हमें इस बात का विशेष ख्याल (ध्यान) नहीं रखना चाहिये कि वह व्यक्ति पश्चाताप का जीवन जीऐ और दुष्टआत्मा से आजाद रहे? आपने इस बात का उल्लेख (वर्णन) अपनी शिक्षा में नहीं किया। क्यों?

जहाँ तक छुटकारे की सेवकाई का सवाल है, तो इसको लेकर अक्सर भय बना रहता है और बहुत से लोग अपने फैसले (निर्णय) विश्वास के आधार पर नहीं परन्तु भय के आधार पर लेते हैं। जब भी हम वचन का मूल्यांकन करते हैं तो हमें यीशु के जीवन में देखना चाहिये, क्योंकि यीशु के जीवन में देखने पर हमें सब चीजें स्पष्ट और साफ–साफ दिखाई देंगी। क्या यीशु, दुष्टआत्मा के फिर से आजाद किये गये व्यक्ति के अंदर वापस लौट आने को लेकर कभी भी चिन्तित हुआ? क्या जिन लोगों को यीशु ने दुष्टआत्मा से छुड़ाया था उनका वह (यीशु) निरन्तर मूल्यांकन और निगरानी किया करता था? नहीं, बिलकुल नहीं। आईये, उस व्यक्ति की ओर ध्यान दें जिसे दुष्टात्माओं और शैतान ने सबसे अधिक सताया था, वह व्यक्ति जिसके अंदर सेना पाई जाती थी। उसको छुटकारा देने के बाद क्या यीशु ने कहा कि इसको निगरानी की जरुरत है? नहीं, यीशु ने ठीक इसका उल्टा (विपरीत) किया। उस व्यक्ति ने यीशु से निवेदन करके उसके (यीशु के) पीछे चलने और साथ रहने की अनुमति माँगी, जबकि यीशु ने उससे वापस अपने घर लौट जाने को कहा। यह तो दुष्टआत्मा निकालने के लोगों के तरीकों से बिल्कुल अलग है। हमें भय से कभी भी प्रेरित नहीं होना चाहिए। जिन पदों से यह सवाल किया गया था, आईये, उन पदों को पढ़ें।

इस पर कुछ शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे कहा, 'हे गुरु, हम तुझसे एक चिन्ह देखना चाहते हैं।' उसने उन्हें उत्तर दिया, 'इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूँढ़ते

हैं, परन्तु योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उनको न दिया जायेगा'... जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है और पाती नहीं। तब कहती है, 'मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी'; और लौटकर उसे सूना झाड़ा–बुहारा और सजा–सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है और वे उसमें पैठ कर वहाँ वास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है। इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी।" (मत्ती 12:38–39, 43–45)

उपरोक्त संदर्भ में यीशु ने एक दृष्टान्त के रूप में सात और बुरी आत्माओं के वापस लौटने का उदाहरण देने के द्वारा (देकर) उन बुरे लोगों की दशा का उल्लेख और वर्णन किया है, जो यीशु को मसीह नहीं स्वीकार करते और उसका तिरस्कार करते हैं। यहूदी राष्ट्र और लोगों पर बहुत बड़ी आपदा (संकट विपत्ति) आ रही थी, क्योंकि परमेश्वर स्वयं उनसे मुलाकात करने के लिए उनके पास आ गया था और उन्होंने परमेश्वर से मुलाकात करने के समय को गवाँ (खो) दिया था (मत्ती 23:34–38)।

आमतौर पर मैं यह सलाह आपको नहीं दूँगा कि किसी भी ऐसे व्यक्ति के छुटकारे के लिये प्रार्थना करें जो कि विद्रोही स्वभाव या प्रवृत्ति का है, और जो जानबूझकर पश्चाताप करना या मन फिराना नहीं चाहता है; अपने समय का निवेश अच्छी और ग्रहण करने वाली भूमि पर बीज बोने में करें। यदि कोई व्यक्ति सचमुच में आजाद होने की इच्छा रखता है, तो प्रेम और परमेश्वर की सामर्थ्य के साथ उसके छुटकारे के लिये सेवकाई और प्रार्थना करें। मेरी कई वर्षों की छुटकारे की सेवकाई में मैंने एक भी बार ऐसा नहीं देखा कि किसी व्यक्ति के छुटकारे के बाद वापस से (फिर से) उस व्यक्ति की दशा सात गुना बुरी हो गयी हो। मैंने यह तो देखा है कि किसी व्यक्ति में से निकाली गई वही आत्मा फिर से लौट आई और उस व्यक्ति की स्थिति फिर से पहिले जैसी ही हो गई। कुछ लोगों को छुटकारा पाने से पहिले से कई बार कुछ समय तक छुटकारे की प्रक्रिया के एक दौर से होकर गुजरना पड़ता है, उसके बाद उन्हें पूरा छुटकारा मिलता है। यदि आत्मा फिर से वापस लौट आती है तो उसे फिर से निकालें और उत्पीड़ित व्यक्ति को सिखाऐं कि किस प्रकार से वह दुष्टआत्माओं से आजाद बना रह सकता है।

अब ध्यान दें : जब हम इस बात को लेकर भयभीत रहते हैं कि अब दुष्टआत्मा फिर से वापस आ सकती है, तब दुष्टआत्मा निश्चय ही वापस आ जाती है। हमारा दुष्टआत्मा के वापस लौटने का भय ही दुष्टआत्मा के वापस लौट आने का कारण बनता है। भय शैतान में जताया गया नकारात्मक विश्वास है; भयभीत होने से ही शैतान के लिये अंदर आकर काम करने का द्वार खुलता है। यदि आप स्वयं भयभीत हैं या फिर आपने उस व्यक्ति के

अंदर भय का संचार किया है जिसके छुटकारे के लिये आपने प्रार्थना की तो वह भय ही आत्मा के वापस लौट आने के लिए लंगर बन सकता है। एक सामान्य नियम : जितने छुटकारे होते हैं उनमे से आधे (50 प्रतिशत) मामलों में शैतान वापस लौटने के लिये संघर्ष करेगा। लेकिन यह जरुरी और महत्वपूर्ण है कि लोग परमेश्वर की भलाई को चखे और देखे, और आजादी का अनुभव करे ताकि शत्रु के वापस लौटने का ख्याल और सम्भावना कभी हमें भयभीत न कर पाये और लोगों के छुटकारे के लिये सेवकाई और प्रार्थना करने से हमें कभी भी रोकने न पाये।